मन्नू भंडारी के उपन्यास आपका बंटी के अंग्रेजी अनुवाद का भाषिक विश्लेषण

जे0 एन0 यू0 की एम० फिल० हिन्दी की उपाधि हेतू
प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध

शोध निर्देशक
डॉ0 चमन लाल

शोध छात्रा
सुनीता

भाषा साहित्य एवं संस्कृति अध्ययन संस्थान
भारतीय भाषा केन्द्र
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली –110067

2008

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय

JAWAHARLAL NEHRU UNIRVERSITY

Centre of Indian Languages

School of Languages Literature & Culture Studies

New Delhi- 110067, India

Centre of Indian languages Date 29.07.2008

DECLARATION

I declare that the material in this dissertation entitled 'MANNU BHANDARI KE UPANAAS 'APKA BUNTY' KE ANGREZI ANUVAD KA BHASHIK AUR SAMAJIK VISHLESHAN' Submitted by me is an original research work and has not been previously submitted for any other degree in this or any other university/ institution.

Sunita

SUNITA 29.07.2008

RESEARCH SCHOLAR

PRO. CHAMANLAL
SUPERVISOR
Centre for Indian Languages & Literature
School of Languages & Cultural Studies
Jawaharlal Nehru University
New Delhi 110067

PRO. CHAMAN LAL
CHAIRPERSON
Centre for Indian Languages & Literature
School of Languages & Cultural Studies
Jawaharlal Nehru University
New Delhi 110067

अनुक्रम

भूमिका 1—3

अध्याय एक 4—12
मन्नू भंण्डारी जीवन और रचना परिचय

अध्याय दो 13—22
आपका बंटी : टूटते मानव संबन्धों की परिणति

अध्याय तीन 23—48

आपका बंटी के अनुवाद का भाषिक विश्लेषण 49—70
क. अनुवाद का व्यतिरेकी विश्लेषण
ख. अनुवाद का भाषिक विश्लेषण

अध्याय चार 71—92
आपका बंटी का सामाजिक विश्लेषण

उपसंहार 93—94

ग्रन्थानुक्रमणिका 95—99

भूमिका

इस विषय पर काम करने की रूपरेखा "कृष्णा सोबती" के उपन्यास "सूरजमुखी अंधेरे से" और "मन्नू भण्डारी" के उपन्यास "आपका बंटी" को पढ़ते हुए बनी । इस उपन्यास की समस्या ने मुझे प्रभावित किया। अनुवाद की छात्रा होने की वजह से मेरी उत्सुकता इस बात को लेकर बढ़ी कि क्या इस उपन्यास का अनुवाद भी इन समस्याओं को लेकर चलता है? जब यह बात मैने डा0 चमनलाल जी को बतायी तो उन्होंने मेरी जिज्ञासा को देखते हुये, मुझे इस उपन्यास का अंग्रेजी अनुवाद "बंटी" को पढ़ने का मशवरा दिया। बस इसी तरह इस विषय पर काम करने का सिलसिला शुरू हो गया । शुरू –शुरू में मेरे लिए यह जानना थोड़ा कठिन था कि किस तरह से हिन्दी के शब्द और शैली (भाव) अंग्रेजी भाषा में अपना स्थान बना लेते हैं लेकिन क्लास में डा0 चमनलाल के व्याख्यान और दोस्तों से हुयी अनुवाद संबंधी चर्चा से तस्वीर साफ़ होती चली गयी । मेरे मार्गदर्शक (डा0 चमनलाल) को धन्यवाद देने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। जिन्होंने कभी शोधनिर्देशक की तरह तो कभी उससे बढ़कर (पिता की तरह) पग–पग पर मेरा दिशा-निर्देशन किया । उनके सहयोग के बिना यह लघुशोध पूरा नहीं हो सकता था।

यह शोध प्रबन्ध चार अध्यायों में विभक्त है। पहला अध्याय "मन्नू भण्डारी: जीवन और रचना परिचय" है। मैंने इस अध्याय में मन्नूजी का जीवन और उनकी रचनाओं का परिचय दिया है। जिसमें उनकी आरम्भिक शिक्षा से लेकर प्राध्यापिका बनने तक का सफर सम्मिलित है ।

दूसरा अध्याय "आपका बंटी": टूटते मानव सम्बंधों की परिणति" है। मैंने इस अध्याय में उपन्यास का आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया है कि लेखिका ने किस तरह से पति-पत्नी के बीच के तनाव को एक बच्चे के माध्यम से व्यक्त किया है और इस तनाव को सबसे अधिक वह बच्चा बंटी झेलता हैं । जिसका कहीं कोई हल नज़र नही आता है। इसमें केवल बंटी की समस्या को

व्यक्त नहीं किया है बल्कि समस्त भारतीय मध्यमवर्गीय समाज में पारिवारिक सबंधों के बीच के तनाव या तलाक की समस्या को चित्रित किया गया है।

तीसरा अध्याय "अनुवाद का भाषिक विश्लेषण" है। यह अध्याय, दो उप अध्यायों मे विभक्त है। (क) अनुवाद का व्यतिरेकी विश्लेषण (ख) अनुवाद का भाषिक विश्लेषण । मैंने पहले उप अध्याय में इस उपन्यास के अनुवाद की समस्याओं को "व्यतिरेकी भाषा-विज्ञान" के माध्यम से प्रस्तुत कर उसके अनुसार सुझाव देने का प्रयास किया है। दूसरे उप अध्याय में मैंने "अनुवाद का भाषिक विश्लेषण" उपन्यास की "भाषिक विशेषताओ" के संदर्भ में व्यक्त किया है। जिस तरह से मन्नू जी ने भाषा के कीर्तिमानों से "आपका बंटी" को सजाया है। क्या जयरतन उन कीर्तिमानों को अनुवाद के भीतर समेट पाये हैं? मेरे इस अध्याय का ध्येय यहीं "भाषिक विश्लेषण" प्रस्तुत करना है।

चौथा अध्याय "अनुवाद का सामाजिक विश्लेषण" है। मैंने इस अध्याय में उपन्यास के अनुवाद का "सामाजिक विश्लेषण" प्रस्तुत किया है कि इस अनुवाद में भारतीय "समाज और संस्कृति" का अनुवाद किस स्तर पर हुआ है?

मनीष, ज़ीनत, विवेक , अंबर और विजयलक्ष्मी जैसे दोस्तों के लिए मैं धन्यवाद कैसे कहूँ, उनके लिए धन्यवाद भी कम है। विशेषकर ज़ीनत और विवेक ने जिस तरह रात-रात भर जागकर मेरा सहयोग किया तथा ममता ने प्रूफ रीडिंग की उसके लिए मैं उनकी हृदय से आभारी हूँ।

मेरे परिजनों, सम्बंधियों और मित्रों के स्नेह और आशीर्वाद के बिना यह शोध प्रबन्ध कभी पूरा नहीं हो सकता था । विशेषकर बाबा और अम्मा के।

मैं आभारी हूँ संदीप के लिए जिसने शोध–प्रबंध को टाईप किया ।

मैं धन्यवाद देना चाहूँगी। उन अनाथ और अपंग बच्चों को, उन बुर्जुगों को (जिनके परिवारवालों ने उन्हें घर से निकाल दिया हैं)। जिन्होंने मुझे सिखाया और बताया कि "यह दुनिया बहुत सुन्दर है पर निरन्तर संघर्षशील है।"

अध्याय एक
मन्नू भंडारी: जीवन और रचना परिचय

अध्याय एक

मन्नू भंडारी: जीवन और रचना परिचय

समाज में स्त्री को शुरु से ही हाशिये पर रखा गया है। लेखन के क्षेत्र में भी उसका योगदान निम्नतर रहा है। प्रारम्भ में केवल पुरुष साहित्कारों ने स्त्री के बारे में लिखा । उन्होंने स्त्री के बारे में जो सोचा, देखा महसूस किया, उसे साहित्य में अभिव्यक्त किया। लेकिन उनका साहित्य स्त्री मन की परतें खोलने में असमर्थ रहा है क्योंकि स्त्री की अपनी दुनिया होती है। जिसमें वह चीजों को अपनी नज़र से देखती है। खुद वर्जीनिया वूल्फ ने एक जगह पर लिखा है कि [1]"स्त्री का लेखन स्त्री का होता है, स्त्रीवादी होंने से बच नहीं सकता। अपने सर्वोतम में वह स्त्रीवादी ही होगा।" स्त्री का लेखन उसका अपना लेखन है अपनी भावनाओं को वह जितने सूक्ष्म स्तर पर अभिव्यक्त कर सकती है उतना पुरुष साहित्यकार नही कर सकता।

स्त्री-लेखन की शुरुआत मोटेतौर पर बीसवीं शताब्दी से मानी जाती है। वैसे इससे पहले भक्तिकाल में कुछ भक्त कवियत्रियों ने भक्ति पद लिखे लेकिन इन कवियत्रियों में केवल मीरा ने ही "अपनी रचना और जीवन" दोनों से पुरुष वर्चस्व को तोड़ा । ऐसा माना जाता है कि पहली स्त्री कहानी की रचनाकार "श्रीमती राजेन्द्रबाला घोष" (बंग महिला) थीं । जिन्होंने "दुलाई वाली" लिखकर स्त्री लेखन की शुरुआत की। यह कहानी उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त में लिखी गई । इसके बाद साहित्य में स्त्री-लेखन की शुरुआत हुई । बीसवीं शताब्दी में कुछ अन्य स्त्री लेखिकाओं के नाम उभर कर सामने आये जिनमें– उषा देवी, होमवती देवी, चंद्रकिरण सौनरिक्सा, रजनी पणिकर, आदि नाम शामिल हैं लेकिन साहित्य में इन लेखिकाओं का योगदान हाशिये पर ही रहा था क्योंकि ये लेखिकायें पुराने आदर्शों को लेकर लिख रही थीं । जिनमें "सतीत्व की मर्यादा", "विधवा–विवाह का समर्थन", "बालविवाह", "अनमेल

[1] आधुनिक हिदी साहित्य का इतिहास पृष्ठ–493

विवाह का विरोध" आदि ही मुख्य विषय थे। इन लेखिकाओं ने स्त्री-मन की परतों को खोलने को कोई विशेष प्रयास नहीं किया।

स्वतन्त्रा के पश्चात् 1950 में स्त्री-लेखन के क्षेत्र में एक अदभुत बदलाव आया। नये विषय के साथ कृष्णा सोबती, महाश्वेता देवी, उषाप्रियंवदा, सुंधा अरोड़ा, ममता कालिया, मंजुलभगत, मृदगा गर्ग, निरुपमा सेवती , कुसुम अग्रवाल, आदि लेखिकायें साहित्य में उभरीं। इन लेखिकाओं ने पुरूष वर्चस्व के खिलाफ लेखन की शुरुआत की । उन्होंने अपने लेखन में स्त्री-जीवन की विसंगतियों और उसकी मानसिक दशा को मूर्त किया। इन लेखिकाओं के बीच एक और नाम उभरा है जिसने स्त्री जीवन की समस्याओं और स्त्री-पुरुष सम्बन्धों का सूक्ष्म विश्लेषण अपनी रचनाओं में प्रस्तुत किया है। यह नाम है- मन्नू भंड़ारी ।

मन्नू भंडारी का नाम आधुनिक स्त्री लेखिकाओं में किसी परिचय का मोहताज नहीं है। मन्नू जी ने जिस युग में लेखन कार्य आरम्भ किया उस समय अनेक स्त्री लेखिकायें साहित्य के क्षेत्र में सकिय थीं लेकिन आज वे सभी ओट में छिप गयीं हैं परन्तु मन्नू जी अपनी प्रतिभा और प्रभावशाली लेखन के जरिये आज भी साहित्य में छाई हुई है। यद्पि उनकी रचनाओं की संख्या बहुत अधिक नहीं है, जिसकी कमी साहित्य जगत को हमेशा अखरती रहेगी क्योंकि उनकी पृष्टभूमि का ब्योंरा ही कुछ इस तरह का हैं कि उनके प्रशंसक, पाठक और साहित्य-प्रेमी उनसे कुछ और अधिक रचनाओं की मांग करते हैं। मारवाड़ी जैन परिवार की सबसे छोटी लड़की "महेन्द्रकुमारी" ने प्रारम्भिक शिक्षा अजमेर से प्राप्त की थी । बाद में कलकत्ता से स्नातक और बनारस विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की। वे शुरू से ही सभाओं, सामाजिक–राजनीतिक चर्चाओं, जुलूसों, और प्रभातफेरियों के बीच रहीं। इसका कारण उन दिनों का राजनीतिक वातावरण था, जहॉ चारों ओर देश को आज़ाद कराने के लिये सभी मिल-जुल कर कार्य कर रहे थे। देश को आज़ाद कराने का नशा लोगों (जनमानस) के सिर चढ़कर बोलता था। ऐसे में वे

स्वंय को न रोक सकीं। उन्होंने अंग्रेजी सरकार के "शोषण, भ्रष्टाचार और अत्याचार" के विरूद्ध हल्ला बोल दिया । चाये वह "राजनीतिक क्षेत्र" हो या "सामाजिक क्षेत्र" या "स्त्री अस्तित्व और अस्मिता" का प्रश्न ही क्यों न हो । वे चारो दिशाओं में सकिय नज़र आयीं । यह वही स्थिति थी जहां से उनके लेखन के लिये प्रारम्भिक भाव–भूमि तैयार हो रही थी। संवेदनशील मन्नू जी अपने आस–पास के परिवेश और परिस्थितियों से प्रभावित थीं । इन परिस्थितियों से उनकी व्याकुलता बढ़ती गई और अन्त में इसी व्याकुलता ने उन्हें लेखन के लिये प्रेरित किया । मन्नू भंडारी ने स्वंय अपने बारे में लिखा है कि -

[2]"पुरूष लेखकों की प्ररेणा तो प्रेमिकाएं होती हैं लेकिन मेरा वैसा कुछ नहीं है। बस आस-पास की घटना, व्यक्ति या माहौल ही लिखने के लिए प्रेरित करते हैं"। उनकी रचनाओं में कोरा यथार्थ स्पष्ट दिखायी देता है क्योंकि साहित्य में कोरी कल्पना से काम नही चलता और न ही आदर्शो से। इन दोनों के बीच में यथार्थ स्थित है। भारतीय संस्कृति भी मध्यम मार्ग की समर्थक है। यही बात मन्नू जी के साहित्य में उजागर होती है। जो उन्हें अन्य स्त्री लेखिकाओं में विशिष्ट बनाती है।

मन्नू जी का रचना संसार 1950 के बाद होने वाले बदलावों को व्यक्त करता है। जिसमें सामाजिक और राजनीतिक दोनों तरह के बदलावों से उत्पन्न परिस्थितियों का चित्रण किया गया है। उनकी कहानियॉ, उपन्यास और एकमात्र नाटक इसका माध्यम है। वे मुख्यत: कहानी लेखिका के रूप में पहचानी जाती हैं। उनकी साहित्यिक यात्रा भी कहानी लेखन से आरम्भ हुई। उनकी पहली कहानी "मैं हार गई" (1956) में भैरवप्रसाद गुप्त के दिशानिर्देशन में "कहानी" पत्रिका "इलाहाबाद" में छपी थी। इसके बाद वे पूरी गति से निरन्तर आगे बढ़ती रहीं। उनके कहानी संग्रहों में "मैं हार गई", "तीन निगाहों की एक तस्वीर", "यही सच है", "एक प्लेट सैलाब", "त्रिंशकु"

[2] देशबंधु दैनिक पत्रिका 28 जनवरी 1977

और "एक कहानी यह भी" से होते हुए कहानियों का यह क्रम आज भी जारी है।

मन्नू जी की कहानियों में नारी के विविध रूप देखने को मिलते हैं। उनकी कहानियों में मॉ, बहन, बेटी, पत्नी, सास, बहू,गृहस्वामिनी, दासी, प्रेमिका, शिक्षित-अशिक्षित और सम्पन्न-विपन्न आदि स्त्री के चित्र तो हैं ही साथ ही इन सबसे मिलजुल कर एक ऐसा नारी व्यक्तित्व बनता है जो किसी भी "परिस्थिति और परिवेश" में जीवन संघर्ष से मुँह नही मोड़ता और अपने स्थान पर बने रहकर जीने के लिए जमीन तलाशता है। अजित कुमार को दिए एक साक्षात्कार में मन्नू जी कहती हैं [3] "बार-बार स्त्री को मैंने अपनी रचनाओं के द्वारा पहचानना चाहा है वह है आंतरिक संस्कारों भावनाओं और संवेदनाओं के साथ बाहरी स्थितियों और दबावों को झेलती कभी उनको तोड़ती और कभी खुद उनके सामने टूटती हुई नारी" (स्त्रोत् त्रिशंकू संग्रह)। भारतीय समाज की संक्रमणकालीन अवस्था में पितृसतात्मक व्यवस्था से उत्पन्न अत्याचार और शोषण से जूझती स्त्री की बैचेनी, घुटन और तनाव मन्नू जी के लेखन का बुनियादी आधार है।

मन्नू जी एक सफल कहानीकार होने के साथ ही साथ एक सफल उपन्यासकार भी हैं। इसकी पुष्टि उनके द्वारा रचित उपन्यासों के माध्यम से होती है। जिनमें मुख्य रूप से पाँच उपन्यास शामिल हैं- "एक इंच मुस्कान", "आपका बंटी", "महाभोज", "कलवा", (बालउपन्यास) "स्वामी"। उनका "स्वामी" उपन्यास बंगला के सुप्रसिद्व कहानीकार शरतचंद की कहानी "स्वामी" पर आधारित उपन्यास है। इसलिये इस उपन्यास को मन्नूजी का मौलिक उपन्यास नहीं कहा जा सकता। इस तरह देखा जा सकता है कि मन्नू जी की अमर और अक्षय कीर्ति का आधार-स्तम्भ "एक इंच मुस्कान", "आपका बंटी" और "महाभोज" उपन्यास है। इनके ये तीन मौलिक उपन्यास हैं। "एक

---

[3] देशबंधु दैनिक पत्रिका 28 जनवरी 1977

इंच मुस्कान" राजेन्द्र यादव और मन्नू भण्डारी ने एक साथ मिल कर लिखा है। इसलिये इसे सही अर्थो में मन्नू जी का पहला मौलिक उपन्यास नही कहा जा सकता है। इनका दूसरा मौलिक उपन्यास "महाभोज" है। इसके अतिरिक्त मन्नू जी की साहित्यिक यात्रा का अगला पड़ाव उनका एकमात्र नाटक "बिना दीवारों के घर" है।

आगे उनके उपन्यास "एक इंच मुस्कान" का परिचय दिया जा रहा हैं जैसा कि पहले ही बताया गया है कि यह उपन्यास दोनों पति-पत्नी ने एक साथ मिलकर लिखा है पर साहित्य जगत में यह सहलेखन की परम्परा नयी नहीं है। इस परम्परा के अन्तर्गत अनेक उपन्यास लिखे गये हैं। जिनमें "तपोभूमि", "बारह खम्बा", और "ग्यारह सपनों का देश" आदि शामिल हैं। "एक इंच मुस्कान" इसी परम्परा में लिखा गया उपन्यास है। इस उपन्यास में लेखक के नाम में "राजेन्द्र यादव और मन्नू भण्डारी" का नाम एक साथ लिखा है। इसका प्रकाशन जनवरी 1961 तक कमिक किस्तों में "ज्ञानोदय" पत्रिका में हुआ । इसके बाद इसका प्रकाशन पुस्तक के रूप में हुआ। इस उपन्यास की कथा-वस्तु स्वतंत्र रूप से मन्नू जी की है इसलिये इसमें एक तरह का प्रयोग किया गया है। पुरुष पात्रों विशेषकर अमर से सबंधित अंशों को अभिव्यक्त करने की जिम्मेदारी राजेन्द्र जी ने सम्भाली है और स्त्री पात्रों से सम्बंधित अंशो के लेखन का दायित्व मन्नू जी ने सम्भाली है।

इस उपन्यास की कथावस्तु अमर, रंजना और अमला को लेकर गुंथी गई है लेकिन उपन्यास में मिस्टर चड्ढा, रतन, मंदा, भाभी आदि पात्र कथावस्तु के अनुरूप ही आ जाते हैं। अमर एक प्रतिभाशाली साहित्यकार है, जो सामाजिक जीवन जीने की अपेक्षा मानसिक धरातल पर जीवन जीता है। रंजना उसकी प्रेमिका है। वो उपन्यास का प्रमुख नारी पात्र है। वह अमर के व्यक्तित्व के कमजोर पक्षों को जानते हुये भी उससे प्रेम और विवाह करती है। वह उसे इस बात के लिए बाध्य करती है कि वह केवल उसे पति रूप में पाना चाहती है

और वह विवाह के बाद उससे कुछ नहीं लेगी। वह कहती है कि [4]"मैं तुमसे कुछ नहीं चाहूँगी। मैं तो सिर्फ तुम्हें एक ऐसा घर, एक ऐसा वातावरण देना चाहती हूँ जहाँ तुम सब ओर से निश्चिन्त होकर लिख सको।"

रंजना उपन्यास का एक ऐसा पात्र है जिसे हर हाल में अपने पति को खुश रखने का ख्याल है। वह अपने और अमर के रिश्ते को मजबूत बनाने के लिए उसकी हर बात मानती है। उसके विवाह से मना करने पर भी वह उसे समझाती है कि वह विवाह के बाद उसे समुचित परिस्थिति देना चाहती है लेकिन इन दोनों के जीवन में अमला का प्रवेश घातक सिद्ध होता है। अमला पति द्वारा त्यागी एक ऐसी स्त्री है जो अहंबोध से ग्रस्त है। वह अमर की प्रशंसिका के रूप मे हमारे सामने आती है। वह अमर को विवाह न करने की सलाह देती है। इसके पीछे उसका तर्क है कि इससे उसकी साहित्यिक प्रतिभा अधिक निखर कर रचनाओं में अभिव्यक्त होगी। अमर अपने करीबी दोस्त मिस्टर टण्डन और उनकी पत्नी के आग्रह पर रंजना से विवाह कर लेता है लेकिन अमला की सलाह उसे बार-बार प्रताड़ित करती है। परिणामत: यही सलाह अमर के वैवाहिक जीवन को तोड़ने का कारण बनती है। रंजना अमर को छोड़कर चली जाती है। अंत मे अमला अकेलेपन से दुखी होकर आत्महत्या कर लेती है। शेष रह जाता है अमर। अकेले जीवन जीने के लिए रह जाना उसकी विडम्बना को उजागर करता है।

मन्नू जी ने दोनों स्त्री पात्रों का चित्रण मानसिक धरातल पर किया है। उनके जीवन में आने वाले उतार-चढ़ाव को मानसिक अभिव्यक्ति दी है। दोनों नारी पात्र अमला और रंजना एक दूसरे की विरोधी स्त्री पात्र हैं। अमला आधुनिकता का प्रतिनिधित्व करती है। वह चाहती है कि कोई उसका भोग भी करे तो उसका अधीन बनकर। वहीं रंजना का रूप एक कर्तव्यनिष्ठा से युक्त प्रेमिका और पत्नी का है। उसे जब यह महसूस होता है कि उसका पति उसके प्रति निष्ठावान नहीं है तो वह बहादुर नारी की तरह अपना रास्ता बदल लेती

---

[4] एक इंच मुस्कान पृष्ठ– 63

है। वह एक संघर्षशील जीवन की ओर बढ़ जाती है। अमर दोनों नारी पात्रों के बीच की धुरी है। जिसका अपना कोई स्वतंत्र व्यक्तित्व और दृष्टिकोण नहीं है वह एक कमजोर व्यक्ति के रूप में ही हमारे सामने उभर कर आता है। इस उपन्यास के माध्यम से लेखक दम्पति ने सामाजिक जीवन में होने वाले बदलावों, आर्थिक और पारिवारिक संबंधों को मुखर किया है।

मन्नू जी का दूसरा मौलिक उपन्यास "महाभोज" है, यह उपन्यास भी लेखिका की अमर और अक्षय कीर्ति कर आधार स्तम्भ है। इस उपन्यास का कथानक राजनीतिक गतिविधियों से परिचालित है। आज़ादी के पहले भारतीय जनता का एक ही सपना था देश की स्वतंत्रता। देश आज़ाद हुआ लेकिन आज़ादी से पहले और बाद में सामंतवाद के प्रभाव से शोषण अत्याचार, अराजकता, असंतोष और भ्रष्टाचार समाज में व्याप्त रहा। आज़ादी के बाद भारतीय राजनीति अनेक प्रकार के भ्रष्टाचारों से भरी पड़ी थी। जिनमें से "बेलछी कांड" भी एक है। इस कांड ने मन्नू जी को अत्यधिक प्रभावित किया। उन्होंने स्वंय एक जगह यह स्वीकार किया है [5]"अपने व्यक्तिगत दुख, दर्द, अन्तर्द्वन्द या आन्तरिक नाटक को देखना बहुत महत्वपूर्ण सुखद और आश्वस्तिदायक तो मुझे भी लगता है मगर जब घर में आग लगी हो तो सिर्फ अपने अन्तजर्गत में बने रहना या उसी का प्रकाशन करना क्या खुद ही अप्रांसगिक, हास्यास्पद और किसी हद तक अश्लील नहीं लगने लगता।"

इस घटना से विचलित मन्नू जी स्वंय को नहीं रोक पायीं। सर्वप्रथम उन्होंने इस घटना को आधार बनाकर अलगाव नामक कहानी लिखी। जब कहानी लिखकर भी उन्हें आत्मसंतुष्टि नहीं हुई तो उन्होंने इस कहानी का सफल रूपांतरण "महाभोज" उपन्यास के रूप में किया। यह एक सफल राजनीतिक उपन्यास है।

इस उपन्यास की कथावस्तु में बेहद संजीदगी है। आज़ाद भारत का एक छोटा सा देहात है। वहां के राजनीतिक दल सत्ता में आने के लिए अनुचित

---

[5] हिन्दी उपन्यास की दिशाएं पृष्ठ–124

हथकंडे अपनाते हैं। राजनीति में अपराधियों का बराबर हस्तक्षेप होता रहता है। पुलिस–वर्ग स्वंय की हितपूर्ति में लगे हैं। बुद्धिजीवी और पत्रकार अवसरवादी हैं वे उन्हीं लोगों की ओर हैं जहां उनका स्वार्थ पूरा होता है। उपन्यास में यह दिखाया गया है कि किस तरह चुनावों से पहले हुई एक हत्या की घटना से राजनीतिक लाभ तथा सत्ता में विजयी होने के लिए उसे आत्महत्या का चोला पहना दिया जाता है। दा साहब मुख्यमंत्री हैं। सुकुल बाबू विरोधी पक्ष के नेता हैं। जोरावर राजनीति में पलने वाला गुंडा और हत्यारा है। सक्सेना और सिन्हा पुलिस की भूमिका में हैं। दत्ताबाबू संपादक हैं, महेश शर्मा बुद्धिजीवी हैं। वह किसी विषय जैसा कि उपन्यास में बताया गया है "क्लास स्ट्रगल और कास्ट" पर शोध करने के लिए देहात पहुँचता है। उसकी मुलाकात बिसेसर से होती है। लेकिन चुनाव से ठीक एक दिन पहले बिसेसर की मौत हो जाती है। इस उपन्यास की त्रासदी सबसे अधिक यह है कि जिस तरह से "लावारिस लाश को गिद्ध नोंच नोंच कर खा जाते हैं"। ठीक उसी तरह किसी की हत्या को मंत्री, विरोधी दल, पत्रकार पुलिस उत्सव के रूप में मनाते है। यह समूचा वर्ग गिद्ध का प्रतिनिधित्व करता है, जो किसी की हत्या पर अपने स्वार्थ की रोटी सेंकते हैं। यह हत्या किसी दलित या हरिजन की हो तो इन सत्ताधारियों की खुशी का ठिकाना ही नहीं है वे हर कीमत पर उस हत्या से स्वंय की स्वार्थपूर्ति करना चाहते हैं। यह उपन्यास वर्तमान समय में राजनीति की कहानी व्यक्त करता है। तभी प्रभाकर माचवे ने [6] "महाभोज को बेहद जीवन्त और सशक्त रचना" माना है।

"आपका बंटी" मन्नू जी का पहला मौलिक उपन्यास है। इस उपन्यास में एक बच्चे के माध्यम से पति-पत्नी के बीच उत्पन्न तलाक की समस्या और तलाकशुदा दम्पति के बच्चों की समस्या को अभिव्यक्त किया है। इस उपन्यास के कथानक में पति-पत्नी और उनका एकमात्र पुत्र बंटी है। लेखिका ने उपन्यास में अन्य पात्रों का समावेश परिस्थितियों के अनुकूल किया है।

---

[6] आजकल मार्च1982 पृष्ठ –5

जिनमें डॉ जोशी, मीरा, अमि, जोत,फूफी,वकीलचाचा,माली,चपरासी और कॉलिज की अध्यापिकाएं आदि शामिल हैं। शकुन और अजय के बीच सात वर्ष का लम्बा अलगाव रहता है। अंत में दोनों आपसी सहमति से अलग हो जाते हैं। स्पष्ट शब्दों में उनका तलाक हो जाता है। लेखिका ने तलाक से पहले और तलाक के बाद नारी की स्थिति उसकी घुटन व टूटन को मनोवैज्ञानिक अभिव्यक्ति दी है तथा बच्चे के उन मानसिक क्षणों को भी उजागर किया है, जो सब ओर से निर्दोष होते हुए भी इस तलाक की त्रासदी को सबसे अधिक भोगता है। पति-पत्नी एक दूसरे से तलाक लेकर साथ रहने की संत्रास से तो मुक्त हो जाते हैं लेकिन बंटी, वह क्या करे ? उसने थोड़े ही तलाक लिया है। उसे तो माता-पिता एक साथ चाहिये। क्यों बंटी को मॉ- बाप का प्यार एकसाथ नहीं मिल सकता? शकुन और अजय दोनों अपना अपना स्वार्थ देख रहे हैं। निर्दोष बंटी के बारे में तो दोनों में से एक ने भी नहीं सोचा। दोनों तलाक के बाद पुनर्विवाह कर लेते हैं। दोनों अपने नये पारिवारिक सबंधों में "एडजेस्टमेंट" करते है तो यही "एडजेस्टमेंट" तलाक से पहले अजय और शकुन के बीच क्यों नहीं हो पाया? क्या उन्हें बंटी के भविष्य की चिंता नहीं थी कि बंटी को माँ और पिता एक साथ चाहिये। लेखिका के ही शब्दों में "इन सम्बन्धों के लिए सबसे कम जिम्मेदार और सब ओर से बेगुनाह बंटी ही इस "ट्रेजेडी" के त्रास को सबसे अधिक भोगता है। शकुन व अजय के आपसी सम्बन्धों में बंटी चाहे कितना ही फालतू और अवांछनीय हो गया हो परन्तु मेरी दृष्टि को सबसे अधिक उसी ने आकर्षित किया और अपने में बाँधा। बंटी की यह यात्रा चाहे परिवार की एक संशलिष्ट इकाई से टूटकर क्रमश: अकेले,जड़हीन,फालतू और अनचाहे होते जाने की रही हो लेकिन मेरे लिए यह यात्रा भावुकता करूणा से गुजर कर मानसिक यन्त्रणा और सामाजिक प्रश्नाकुलता की रही हैं।" यह बंटी वह सेतु नहीं बन पाया जिसका मीठा जहर पल-पल बंटी को डॅस रहा है और बंटी को खाए जा रहा है "एक एबनार्मल जिदंगी" देने के लिए।

अध्याय दो
आपका बंटी मानव सम्बन्धों की परिणति

अध्याय दो

आपका बंटी मानव सम्बन्धों की परिणति

"आपका बंटी" मन्नू भंडारी का पहला और महत्वपूर्ण उपन्यास है। उन्होंने इस उपन्यास में भारतीय मध्यमवर्गीय समाज की एक ऐसी समस्या को उठाया है जिसका कहीं कोई हल नज़र नहीं आता है। पति-पत्नी आपसी तनाव के संत्रास से बचने के लिए तलाक लेते हैं लेकिन उनके बीच में एक मासूम बच्चा है। जिसके बारे में तो दोनों में से एक ने भी नहीं सोचा कि उस बच्चे का भविष्य क्या होगा? उसे मम्मी और पापा का प्यार एक साथ चाहिये लेकिन तलाक होने के कारण वह बच्चा अपने मम्मी पापा के प्यार से वंचित हो जाता है। यह उपन्यास बच्चे को परिवार से काटकर अकेले,फालतू और अनचाहे होते जाने से उत्पन्न एक समस्या है, जो अंत में "एक भयावह सामाजिक समस्या" का रूप धारण कर लेती है। लेखिका ने लिखा भी है कि [7] "देखिए मैं यह दिखाना चाहती थी कि खंडित माता-पिता के बच्चे किन परिस्थितियों से गुजरते हैं। सबका अपना-अपना व्यक्तित्व होता है। इस सारी परिस्थिति में बच्चों पर क्या प्रतिकिया होती है, यही दिखाना चाहती थी। मैंने ऐसे बच्चों को देखा है। तब बेचैन महसूस किया है। मैं उसी को पाठक तक पहुंचाना चाहती थी।" यह कथा केवल एक बच्चे की व्यथा मात्र नहीं है। यह उन तमाम बच्चों की कथा भी है जिनके माता पिता अहं से ग्रस्त होकर तलाक लेते हैं और अंत में अपने बच्चों को "नार्मल" जिंदगी देने के लिए हॉस्टल भेजते हैं। यहीं बच्चा "आपका बंटी" के बंटी के रूप में हमारे सामने आता है।

यह उपन्यास सोलह अध्याय में विभक्त है। उपन्सास में लेखिका ने स्वतन्त्रता के बाद आये "जीवन-मूल्यों" के बदलाव को स्त्री-पुरूष सम्बंधों के माध्यम से चित्रित किया है। यह बदलाव आजादी के बाद केवल

---

[7] मन्नू भंडारी का : संचेतना द्वारा आयोजित गोष्ठी में संचेतना : समकालीन उपन्यास अंकः दिसम्बर 1971 पृष्ठ– 63

"राजनीतिक,धार्मिक, आर्थिक" स्तर पर ही नहीं आया हैं अपितु यह बदलाव "सामाजिक" स्तर पर भी तेजी से आया है, लेकिन इस बदलाव को "औधोगिक-क्रांति" ने और भी तेजी से गति प्रदान की है क्योंकि कमाने और खाने की आवश्यकता ने "व्यक्ति को व्यक्ति से, समाज को समाज से और एक देश को दूसरे देश से" जोड़ दिया है। इसका अर्थ यह है कि भूमंडलीकरण के लिबास में एक "नये दौर" का आरम्भ हुआ। जिसकी गूंज भारतीय समाज में भी सुनायी पड़ती है। जिसके भीतर गाँव का व्यक्ति शहर में कमाने की भावना से आया था लेकिन नये परिवेश में उसका मन रमने लगा। इस नये परिवेश में समूचे परिवार को लेकर अन्य स्थल यानि कि शहर में आना सम्भव नहीं था इसलिए प्रारम्भ में वह अकेला ही चला था पर नये परिवेश की आवश्यकता ने उसे संयुक्त परिवार से बिल्कुल काट कर रख दिया और तब एक नये परिवेश का जन्म हुआ। जिसमें केवल पति-पत्नी और उनका बच्चा ही था। इस नये परिवेश को नाम मिला है- "एकांकी परिवार", इस बात का अर्थ यह है कि गाँव का "संयुक्त परिवार शहरों में आकर एकांकी परिवार" में बदल गया। इसके कारण "स्त्री और पुरुष" दोनों की जीवन शैली में अभूतपूर्व परिवर्तन आया। वे इस नये परिवेश में पश्चिमी संस्कृति से प्रभावित हुये। वे पश्चिम से आधुनिक होने का गुण सीख रहे थे लेकिन स्वभाव से उनमें भारतीय संस्कृति के ही गुण विद्यमान थे। आधुनिकता केवल उन्हें मांज रही थी इसलिए उनके दृष्टिकोण में परिवर्तन आना लाज़मी था। इस विचारधारा ने जहाँ एक ओर पुरुष को प्रभावित किया वहीं स्त्री इस विचारधारा से अत्यधिक प्रभावित हुई। इस उपन्यास के दम्पति "शकुन और अजय" इसी विचाधारा से प्रभावित हैं।

इस नये परिवेश ने स्त्री की जीवन शैली में बदलाव कर दिया। पहले उसकी परिधि केवल घर तक ही सीमित थी लेकिन इस विचारधारा के फलस्वरूप वह "घर और बाहर" दोनों जगह सक्रिय नज़र आयी। उसकी इस स्थिति के लिए भावभूमि स्वतंत्रता के दिनों से ही तैयार हो रही थी (जब गाँधी जी और अन्य देशभक्त नेताओं के आह्वान पर अनेक स्त्रियाँ स्वाधीनता

आँदोलन में सक्रिय हुई थीं)। देश की स्वतत्रंता और आधुनिकता के आगमन ने उसे जीवन जीने की एक नयी दिशा प्रदान की । उसकी सोच में परिवर्तन आया। वह घर से बाहर आकर पुरुष के साथ मिलकर काम करने लगी क्योंकि वह अब आधुनिक समाज में रह रही थी। इसलिए घर से बाहर आने को वह अपनी स्वतंत्रता,अस्तित्व और असमिता की लड़ाई समझने लगी क्योंकि सदियों से वह इस निर्दयी समाज के द्वारा प्रताड़ित की गई थी। यहीं से कामकाजी स्त्री की समस्याओं का जन्म होता है जिसे मन्नू जी ने उपन्यास में अभिव्यक्त किया हैं। यह समस्या आधुनिकतावादी समाज की देन है। जिसमें स्त्री को घर और बाहर दोनों जगहों पर काम करना पड़ता है लेकिन भारतीय समाज पितृसत्तात्मक व्यवस्था का समर्थक है इसलिए वह उससे आशा रखता है कि वह बाहर काम भी करे और परिवार की देखभाल भी करे। समाज आधुनिक जरूर हुआ है लेकिन अपनी सोच से वह वही पुरानी रूढ़ियों और परम्पराओं वाला समाज है। यही अपेक्षा अजय शकुन से भी करता है। वह एक कॉलेज की प्रिंसिपल है। उसकी तुलना में अजय एक साधारण कर्मचारी है। वह हमेशा ही उसे अपने से कम समझने की कोशिश करता है लेकिन शकुन को यह बात पसंद नहीं है। ऐसे में उन दोनों के बीच विचारों की टकराहट शुरू होती है। यह टकराहट उनके सम्बन्ध को उस तरह सहज नहीं रहने देती है, जिस तरह से भारतीय समाज में पति पत्नी का आदर्श रूप विघमान है। उनका सम्बन्ध मतभेदों के कारण मुरझाने लगता है। वे एक-दूसरे के प्रति आपसी रंजिश रखते हैं।

इस उपन्यास में व्यक्त शकुन और अजय के सम्बन्धों का बदलाव इसी आधुनिकता की देन है। जिसकी वजह से उनका सम्बन्ध टूट रहा है। जिससे समूचा परिवार प्रभावित है लेकिन इसका दंड सबसे अधिक "निर्दोष बंटी" (उनका एकमात्र पुत्र) भोगता है। उनका परिवार आधुनिक एकाकी परिवार है। इस तरह के परिवारों में प्राय: पति-पत्नी के बीच इस तरह की समस्या देखी जाती है क्योंकि यह विचारधारा व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाती है। जिससे उनमें

अहं भावना का प्रवेश होता है। उपन्यास में वे दोनों ही आत्मनिर्भर हैं लेकिन उनके स्वभाव में भारतीय संस्कृति के जीवन-मूल्य स्थापित हैं। वे इस नयी विचारधारा का अनुगमन तो करते हैं लेकिन अपने पुराने भारतीय जीवन-मूल्यों को नहीं छोड़ पाते हैं। शकुन आधुनिक स्त्री होते हुये भी अपने पति से यह आशा करती है कि उसका पति उसकी हर उचित और अनुचित बात मानेगा। वहीं दूसरी ओर अजय भी यह आशा करता है कि उसकी पत्नी आधुनिक होते हुये भी एक भारतीय स्त्री की तरह उसके हर फैसले को चुपचाप मानेगी लेकिन वे दोनों न तो पूरी तरह से भारतीय संस्कृति का निर्वाह कर पाते हैं और न ही सही तरीके से आधुनिक बन पाते हैं क्योंकि आधुनिकता केवल कपड़ों या रहन-सहन को अपनाने से नहीं आती, वह तो विचारों के बदलाव से आती है। लेकिन इस दम्पति में इस बात का निरन्तर अभाव है। जिसके कारण उन दोनों का आपसी मतभेद इतना अधिक बढ़ जाता है कि वे एक-दूसरे को अपने सामने झुकाना चाहते हैं इसके लिए वे हर हथकंडा अपनाते हैं। वे केवल एक दूसरे को झुकाना ही नहीं चाहते अपितु अपने-अपने अहं को बनाये रखते हुये एक दूसरे को पराजित भी करना चाहते हैं। ऐसे दम्पति प्राय: आपस में सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास करते हैं लेकिन यह केवल उनका प्रयास ही होता है। वास्तविकता इससे भिन्न ही होती है। उनके बीच भी सांमजस्य नहीं हो सका क्योंकि सांमजस्य करवाने के लिए परिवारिक व्यक्ति का होना आवश्यक है। जिसका एकाकी परिवारों में अभाव होता है, लेकिन संयुक्त परिवारों में इसकी गुंजाइश रहती है। वे पति-पत्नी के बीच पुनः सामंजस्य स्थापित करवाने की कोशिश करते हैं और कई बार वे अपने इस प्रयास में सफल भी होते हैं। लेकिन उन दोनों के बीच सामंजस्य के प्रयास को लेखिका ने इस तरह लिखा है कि [8] "तर्कों और बहसों में दिन बीतते थे और ठंडी लाशों की तरह लेटे–लेटे एक दूसरे को दुखी बेचैन और छटपटाते हुए देखने की आकांक्षा में रातें।" क्योंकि उनके बीच किसी बड़े पारिवारिक सदस्य का नियंत्रण नहीं है।

---

[8] आपका बंटी पृष्ठ– 37

वे दोनों मनमानी करने के लिए स्वतंत्र है। भारतीय संस्कृति में जहां पति-पत्नी का सम्बन्ध आपसी सहयोग और प्रेम का प्रतीक होता है, वहीं आधुनिक विचारधारा से संचालित परिवारों में वह तनाव या एडजेस्टमेंट का प्रतीक बन कर रह जाता है। यदि तनाव अधिक बढ़ जाये तो पति-पत्नी एक दूसरे से अलग भी हो जाते हैं।

एकाकी परिवारों से उत्पन्न "तनाव" ने परिवार के सदस्यों को अकेलापन, अंहकार, झटपटहाट, मूल्यों का विघटन, अस्तित्व और अस्मिता की लड़ाई आदि समस्याओं की सौगात दी है। इस स्थिति में भी स्त्री (शकुन) ही सबसे ज्यादा ठगी गयी। उपन्यास में शकुन और अजय अलग हो जाते हैं लेकिन महत्वपूर्ण बात यह है कि वे कानूनी रूप से अभी अलग नहीं हुये हैं। इसलिये शकुन के भीतर भारतीय संस्कारों का कीड़ा दौड़ने लगता है। उसे ऐसा महसूस होता है कि शायद एक दिन उसका पति उसके पास लौट आये। जबकि वह व्यवहार से यह प्रदर्शित करती है कि वह एक पढ़ी-लिखी और आधुनिक नारी है, जिसके लिए उसका अस्तित्व ही सर्वोपरि है। लेकिन वह यह जानते हुये भी कि उसका पति एक अन्य स्त्री से सम्बन्ध बनाये हुये है, एक भारतीय स्त्री की तरह उसके लौटने की प्रतीक्षा क्यों करती है? यह बात मेरे लिये समझना थोड़ा कठिन है। क्योंकि लेखिका ने जब उपन्यास में उसको आधुनिक नारी दिखाया है तो यह झूठा दिखावा क्यों? वह स्वंय को आधुनिक भी दिखाना चाहती है और भारतीय संस्कार को भी नहीं छोड़ पायी है। इन स्थितियों में केवल उसका ही अंतर्द्वन्द बढ़ता है। अपने अंहकार को बचाने के लिए वह अकेली रह जाती है और इस अकेलेपन के दंश को वह अजय से कहीं ज्यादा भोगती है। लेखिका ने उसके अकेलेपन को इन संजीदा शब्दों में व्यक्त किया है कि [9] "सामने वाला व्यक्ति तो पता नहीं कब परिदृश्य से हट भी गया और वह आज तक उसी मुद्रा में,उसी स्थिति में खड़ी है - सांस रोके,दम साधे घुटी–घुटी और कृत्रिम।" उसका और अजय का सम्बन्ध टूट चुका

[9] आपका बंटी पृष्ठ –38

है,खतम हो चुका है फिर भी इस बार हार उसकी हुयी है। वह अपने इस टूटते सम्बन्ध को स्वीकार नही कर पा रही है।

हमारे भारतीय समाज में पश्चिमी विचारों विशेषकर आधुनिक विचारों की गूंज तो सुनायी पड़ती है लेकिन समाज पितृसत्तात्मक व्यवस्था के चंगुल से पूरी तरह अभी मुक्त नही हो पाया है। समाज में स्त्री को भोग्या की दृष्टि से देखा गया है। इसी दृष्टिकोण से अजय भी प्रभावित है। वह बड़ी आसानी से शकुन को छोड़ देता है और एक अन्य स्त्री से सम्बन्ध स्थापित करता है, लेकिन शकुन ऐसा नही कर पाती है। वह उसका इंतजार करती है क्योंकि कहीं न कहीं वह एक आदर्श भारतीय नारी है, जो अपने पति की हर गलती को क्षमा करना चाहती है। वह अजय के अनुचित सम्बन्ध की बात जानते हुये भी उससे तलाक की माँग नहीं करती । वह आधुनिक है। पति के साथ एडजेस्ट नही कर सकती तो उसे अजय से तलाक लेने का अधिकार है। तो उसकी क्या विवशता रही होगी कि वह खुद पहले तलाक की माँग नही करती ? आखिर अंत में भी तो उसे तलाक लेना ही पड़ता है। लेकिन प्रारम्भ में परिस्थिति इसके विपरीत थी क्योंकि उस समय तलाक अजय लेना चाहता था। इसकी वजह यह थी कि मीरा गर्भवती है और यदि तलाक नही हुआ तो वह बच्चा अवैध कहलायेगा, उस बच्चे को अवैध कहलाने से बचाने के लिए तलाक लेना आवश्यक है। इसलिए आपसी सहमति से तलाक लेने के सिवाय उसके पास कोई चारा नहीं है। इस बार वह अजय रूपी समाज द्वारा ठगी गयी। आधुनिक विचारधारा का प्रतिनिधित्व करते हुये भी वह अजय से परास्त हो गयी। यह केवल शकुन की ही विडम्बना नही है, यह उन तमाम स्त्रियों की विडम्बना है जो आधुनिक होने का दिखावा करती हैं लेकिन पति के साथ समबन्धो में आये बदलाव को आसानी से स्वीकार नही करतीं। उसका सम्बन्ध तो अजय से कभी का टूट चुका था लेकिन उसे इस बात का विश्वास तलाक के बाद होता है।

आधुनिक विचारधारा से समाज में नये विचार आये हैं लेकिन यह विचारधारा पूर्व स्थापित उन रूढ़ियों और परम्पराओं से छुटकारा नही दिला पायी, जिन रूढ़ियों और परम्पराओं से स्त्री आदिकाल से बंधी है। वह उन्हें तोड़ने का प्रयास करती नज़र आती है, लेकिन वह अभी इनसे पूरी तरह मुक्त नही हो पायी है। यही वजह है कि समाज में पति द्वारा त्यागी गयी या तलाकशुदा स्त्री को सम्मान की दृष्टि से नही देखा जाता है। उसकी पहचान केवल माँ बहन, बेटी, और पत्नी के रूप में ही है। इससे अलग भी उसका अस्तित्व हो सकता है, यह बात समाज के हुक्मरानों के लिए आज भी अस्वीकार है। इसलिए जहाँ तलाक के बाद शकुन का सम्बन्ध अजय से बदल जाता है, वहीं उसके जीने का एकमात्र माध्यम उसका पुत्र बंटी है। यदि ऐसी स्त्री समाज में पुन: सम्मान प्राप्त करना चाहती है तो उसे किसी पुरुष का साथ लेना अर्थात् दूसरा विवाह करना अनिवार्य है। इसीलिए आधुनिकता ने उसे दूसरा विवाह करने की छूट दी है। उसके भूतकाल को भूल कर कोई भलेमानुस उससे विवाह कर ले तो वह समाज में पुन: सम्मान की अधिकारिणी बन सकती है। उपन्यास की नायिका शकुन को 'अपने सात साल के अकेलेपन का हिसाब' और 'व्यक्तिगत स्तर' पर अपने पति से इस बात का बदला भी तो लेना है कि वह उससे ज्यादा खुश है। इसी भावना के चलते वह डॉक्टर जोशी से विवाह करती है लेकिन पुराने जीवन-मूल्य इतनी आसानी से पीछा नही छोड़ते हैं। डॉक्टर जोशी ने उससे विवाह कर उस पर उपकार किया है। [10]"प्रिंसिपल या कमाऊ बीवी है तो तलाकशुदा यानी 'सेंकेड हैंड' ही ना।" शकुन अपने नये पारिवारिक समबन्धों में एक बार फिर ठगी गयी। जहां वह अपने पुराने दाम्पत्य सम्बन्धों में आधुनिक और अंह भावना के चलते एडजेस्ट नही करती थी वहीं इन सारी बातों को भूल कर अब डॉक्टर जोशी के साथ एडजेस्ट करती है, लेकिन डॉक्टर जोशी भी तो इसी समाज का हिस्सा हैं। मतलब यह है कि उनकी सोच भी तो पितृसत्तात्मक व्यवस्था से ही संचालित

---

[10] औरत अस्तिव और अस्मिता पृष्ठ –84

है। ऐसे में क्या शकुन आधुनिक बनने के दिखावे में भीतर ही भीतर टूटकर नहीं रह गयी है? दूसरे विवाह में उसके सम्बन्ध पूरी तरह से यांत्रिक हैं। कहीं उसने समाज में असुरक्षा की भावना के चलते ही तो डाक्टर जोशी से विवाह नही किया है? लेकिन इस नये विवाह सम्बन्ध में भी तो वह पूरी तरह से खुश नही है। यह नया सम्बन्ध उससे अपनी कीमत माँग रहा है- बंटी की कीमत । आखिर नये सम्बन्ध के भीतर पति को पाने के लिए शकुन को अपने बच्चे बंटी को खोना ही पड़ता है। अपने पति डॉक्टर जोशी से सम्बन्ध को सहज बनाये रखने के लिए वह बंटी से अपना सम्बन्ध बिगाड़ लेती है और उसे उसके पापा (अजय) के पास भेजने को बाध्य होती है।

आधुनिक विचारधारा ने सबसे पहले एकाकी परिवार को जन्म दिया फिर पति-पत्नी के बीच उपजे तनाव को कम करने के लिए तलाक करवा दिया । इसके बाद तलाक से उपजी अकेलेपन की समस्या का अंत करने के लिए दूसरा विवाह करवा दिया, लेकिन दोनों ही स्थितियों में स्त्री (शकुन) का अंतर्द्वन्द बना ही रहता है। वह अपने पुराने विवाह सम्बन्ध में अंहकार के कारण पति से एडजेस्ट नहीं कर पाती है और अजीब मानसिक यंत्रणा में जीवन जीने के लिए बाध्य रहती है। दूसरे विवाह सम्बन्ध में उसकी छटपटाहट और मानसिक यंत्रणा भी तो कम नही होती है। इस नये सम्बन्ध में वह पूरी तरह से डॉक्टर जोशी से एडजेस्ट करती है लेकिन अपने बेटे बंटी का क्या करे? उसका एडजेस्टमेंट तो पहले विवाह और दूसरे विवाह दोनों में से एक जगह भी नही हो पाया। अपने पहले विवाह–सम्बन्ध में तो वह अपने सारे अभावों को बंटी के माध्यम से पूरा करती है लेकिन दूसरे विवाह सम्बन्ध में वह उसकी भावनाओं का ख्याल ही नही रखती है। क्या समस्त मध्यमवर्गीय कामकाजी या तलाकशुदा स्त्री अपने बच्चे को सोनल रानी की तरह भूख लगने पर खा जाती हैं? क्या शकुन भी ऐसा ही नही कर रही? पहले वह केवल एक माँ के रूप में जीती थी पर अब वह एक स्त्री–माँ और पत्नी के रूप में जीवन जी रही है। इन स्थितियों में उसका अंतर्द्वन्द बढ़ता ही जा रहा है।

आधुनिकता की देन "एकाकी परिवार" में सबसे ज्यादा शोचनीय स्थिति उन बच्चों की होती है जो माता-पिता के प्यार के अभाव में जीते हैं, क्योंकि माता–पिता कामकाजी हैं। उनके पास अपने बच्चों को देने के लिए सबकुछ है लेकिन प्यार और समय नही है। जिसके वे असली हकदार हैं। ऐसे बच्चों का पालन-पोषण नौकरों या अन्य साधनों के आधार पर होता है। यही वजह है कि ऐसे बच्चे निरन्तर परिवार से दूर होते जाते हैं। यदि माता- पिता का तलाक हो गया हो तो ऐसे बच्चों की समस्याएं और बढ़ जाती हैं जैसे कि उपन्यास में बंटी का मानसिक द्वन्द एक भयावह सामाजिक समस्या का रूप धारण कर लेता है। दोनों पति-पत्नी अपने नये पारिवारिक समबन्धों में खुश हैं। उनका ध्यान इस बात की ओर एक बार भी नहीं गया है कि उस बच्चे का क्या होगा। जिसे वे तलाक के बाद अपने पीछे छोड़ रहे हैं। इस छोटी सी उम्र में उसे माँ-बाप की एक साथ जरूरत हैं। वे दोनों तलाक ले लेते हैं लेकिन बंटी क्या करे? उसने थोड़े ही तलाक लिया है उसे तो माता-पिता का प्यार एक साथ चाहिये। कहीं जाने-अनजाने में वे उसकी भावनाओं के साथ खिलवाड़ तो नही कर रहे हैं? दोनों ने ही इस तथ्य की ओर विशेष ध्यान नही दिया कि उनके नये विवाहित सम्बन्ध को वह बच्चा किस रूप में लेगा? क्या वह नयी मम्मी और नये पापा को स्वीकार कर पायेगा?

TH-15254

Jawaharlal Nehru Library

एकाकी परिवार से उपजी समस्या ने पहले शकुन को तोड़ा। इसके बाद यह समस्या बंटी को निगल रही है। समाज में ऐसे बच्चे असुरक्षित महसूस करते हैं। बंटी असुरक्षित है। समाज में सभी लोग मिलकर उसे ताने देते हैं कि उसके पापा अजय बत्रा नही हैं, अब तो उसके पापा डॉक्टर जोशी हैं। एक बच्चे के लिए इस तरह की स्थिति को स्वीकार करना बेहद कठिन होता है कि उसके पहले पापा उसके अपने पापा है या नये पापा। यही स्थिति उसके साथ नयी मम्मी के संदर्भ में उत्पन्न होती है । क्या ये नयी परिस्थितियाँ उसे एबनार्मल नही बना देगीं? पर इस बात से बेखबर उसके माता–पिता अपनी ही दुनिया में व्यस्त हैं। ऐसे परिवार के बच्चे माँ-पापा के प्यार के अभाव में अकेले

हो जाते हैं और फिर धीरे-धीरे हिंसक और जिद्दी हो जाते हैं। लेखिका ने बंटी की समस्या का हल उसे हॉस्टल भेज कर दिया है लेकिन ऐसे न जाने कितने बंटी समाज में मौजूद हैं जिनके माता-पिता तलाक के बाद अपने बच्चों को हॉस्टल नही भेज पाते हैं। उन मासूम बच्चों का भविष्य क्या होगा। इस तरह के सभी प्रश्नों को इस उपन्यास में उठाया गया है? जिनका कहीं कोई हल नज़र नही आता है।

कुल मिलाकर बंटी की समस्या एक आतंक उत्पन्न करती है। ऐसा आंतक जिससे केवल लेखिका ही परेशान नहीं है अपितु इससे समस्त पाठक वर्ग और भारतीय समाज भी परेशान नज़र आता है। उपन्यास में बंटी किन्हीं दो एक घरों में नहीं, आज के अनेक परिवारों में सांस ले रहा हैं- अलग अलग संदर्भों में, अलग अलग स्थितियों में कहीं सहमा हुआ तो कहीं उद्दण्ड, लेकिन एक बात मुझे इन सभी बच्चों में समान लगी और वह यह कि सभी फालतू, गैरज़रूरी और अपनी जड़ों से कटे हुए हैं। इस उपन्यास में मध्यमवर्गीय समाज की उन सभी समस्याओं को उठाया गया है जो पति-पत्नी के बीच तनाव और तलाक के बाद उत्पन्न होती हैं। आज भी भारतीय समाज इतना उदार नही है कि एक स्त्री के दूसरे विवाह के बीच उसकी पहली संतान को आसानी से स्वीकार कर सके। यही नहीं वह तलाक के बाद उसकी मानसिक दशा को और कमज़ोर करने का प्रयास करता है। यदि समाज में इस तरह की स्त्री की दशा को यह माना जाये कि वह अपने नये सम्बन्ध में पूरी तरह खुश है तो यह कहना शकुन के संदर्भ में उचित नहीं होगा क्योंकि-

स्नेहमयी चौधरी की भाषा में शकुन-
[11] "बाहर आने पर भी
तो उतना ही लहूलुहान होती है
जितनी अंदर रहने पर,
जान नहीं पा रही कहाँ कम कहाँ ज्यादा"

[11] औरत अस्तिव और अस्मिता पृष्ठ –84

अध्याय तीन

आपका बंटी के अनुवाद का भाषिक विश्लेषण

क. अनुवाद का व्यतिरेकी विश्लेषण

ख. अनुवाद का भाषिक विश्लेषण

अनुवाद का व्यतिरेकी विश्लेषण

अध्याय तीन

आपका बंटी के अनुवाद का भाषिक विश्लेषण

क. अनुवाद का व्यतिरेकी विश्लेषण

[12]"अनुवाद

साधना है

देशांतरो के व्यक्तियों के बीच निर्मित

अतल गहराईयों में

पैठने का

निशंक हो

द्विविधा रहित

मिल बैठने का

अनुवाद

मात्र भाषांतर नहीं

वह सेतु है।"

वर्तमान समय में अनुवाद की आवश्यकता, व्यावहारिकता और उपयोगिता पर ज्यादा कहने की जरूरत नहीं है। सीधे सरल शब्दों में अनुवाद वह सेतु है जो मानव को मानव से, संस्कृति को संस्कृति से, विश्व को विश्व से जोड़ता है। किसी भी भाषा समुदाय में व्यक्त विचार तथ्य,उक्ति,टीका और टिप्पणी आदि क्यों ना हो लेकिन अनुवाद के जरिए उसकी गूंज समस्त विश्व में सुनाई पड़ती है।

---

[12] अनुवाद शिल्प समकालीन संदर्भ पृष्ठ 21

अनुवाद में हमेशा दो या दो से अधिक भाषा समुदायों के बीच विभिन्न स्तरों (पर जिनमें भाषिक सामाजिक, सांस्कृतिक और व्यतिरेकी) पर समस्याएं आती है। इसका कारण यह हैं कि दोनों भाषाओं की व्याकरणिक सरंचना, वाक्य संरचना, शब्द संरचना, लिंगभेद,वर्तनी विधान और कारक अनुपात आदि में भेद होता है, इसलिए एक भाषा में कही बात को दूसरी भाषा की व्याकरण के अनुसार कहने में जो कठिनाइयाँ आती हैं उन्हें उचित माध्यम से स्पष्ट करना ही अनुवाद विज्ञान का मूल उद्देश्य है जिससे की दोनों भाषाओं की व्याकरणिक संरचनाओं को अनुवाद में बचाया जा सकता है।

अनुवाद की अपनी परिधि है। इस परिधि में अनुवादक आने वाली समस्याओं का समाधान किस तरह से करता है, यह बात स्वयं अनुवादक पर निर्भर करती है। प्रायः दो भाषाओं में कुछ समानताएं होती हैं तो कुछ असमानताएं भी होती हैं। इस अध्याय में अनुवाद में आने वाली असमानताओं की जाँच है, जिन्हें "व्यतिरेकी विश्लेषण" कहा जाता है। व्यतिरेक का शाब्दिक अर्थ है असमानता या विरोध अर्थात "एक भाषा में कही बात को दूसरी भाषा में व्यक्त करने पर जो असमानताएं या चुनौतियाँ" हैं। उन असमानताओं और चुनौतियों को चिन्तन व मनन के जरिए तटस्थ शब्द रखकर हल करना ही व्यतिरेकी विश्लेषण का कार्य है। अनुवाद में व्यतिरेकी विश्लेषण भाषा के विभिन्न अंगो के आधार पर किया जाता है। ये भाषिक अंग–ध्वनि, लिपि, व्याकरण, शब्द, अर्थ, वाक्य और संस्कृति आदि हो सकते हैं। व्यतिरेकी चिन्तन की सबसे बड़ी उपलब्धि यह होती है कि इससे अनुवाद के उन सूक्ष्म स्थलों पर ज्यादा ध्यान दिया जाता है जहां पर असमानता के कारण गलती होंने की सम्भावना होती है। इसके साथ ही व्यतिरेकी विश्लेषण अनुवाद में होने वाली गलतियों के प्रति सचेत भी करता है। इस अध्याय में मन्नू भंडारी के उपन्यास "आपका बंटी" के अंग्रेजी अनुवाद का व्यतिरेकी विश्लेषण किया जा रहा हैं।

मन्नू जी का यह उपन्यास 1971 में अक्षर प्रकाशन से प्रकाशित हुआ । अपने प्रकाशित वर्ष से लेकर आज तक यह उपन्यास निरन्तर चर्चा में रहा है

क्योंकि लेखिका ने "आपका बंटी" उपन्यास में स्त्री–पुरूष के बीच के आपसी तनाव या तलाक की समस्या को एक बच्चे के माध्यम से उठाया है। अपने प्रकाशित वर्ष से लेकर आज तक (पच्चीस साल बाद) भी बंटी की समस्या अनेक भारतीय परिवारों में सांस ले रही है। यही कारण है कि "आपका बंटी" का अनुवाद जयरतन जी ने अंग्रेजी भाषा में किया हैं। उन्होंने इस उपन्यास के अतिरिक्त अन्य हिन्दी उपन्यासों का भी अंग्रेजी में अनुवाद किया है जिसमें "उसके हिस्से की धूप" आदि शामिल है। यहां पर "आपका बंटी" के अनूदित उपन्यास "बंटी" का व्यतिरेकी विश्लेषण चार स्तरों पर किया जा रहा है (क) वाक्यसरंचना (ख) शब्दस्तर (ग) ध्वनिविज्ञान (घ) अर्थविज्ञान।

उपन्यास के प्रथम अध्याय में शकुन कॉलेज जाने के लिए तैयार हो रही है। बंटी रोज़ अपनी मम्मी को तैयार होते हुये देखता है। रोज़ उसकी मम्मी फूफी को आदेश देती है कि वह उसकी गैर मौजूदगी में बंटी की देखभाल करें। लेखिका ने इस बात को बड़े ही खुबसूरत लहज़े में व्यक्त किया है। वे लिखती हैं:

[13] "हाथ में पर्स लेकर ममी ने कहा, देखों बेटे, धूप में बाहर नहीं निकलना, हां।" फिर फूफी को आदेश दिया, बंटी जो खाए वही बनाना, एकदम बंटी की मर्जी का खाना समझीं।"

[14] Her job done, she picked up her purse and moved away from the table, "child do not go out in the sun. Are you listening? she warmed Bunty. "And look", she said turning to puphi, "cook for him what he likes to eat understand."

इस अनुच्छेद के पहले वाक्य में "पूरी तरह तैयार होकर" का अंग्रेजी अनुवाद "Her job done" में व्यतिरेक की समस्या स्पष्ट दिखाई पड़ती है

---

[13] आपका बंटी पृष्ठ –9
[14] Bunty page -10

क्योंकि इस अंग्रेजी वाक्य में "होकर" का अनुवाद "done" हुआ है। यह अनुवाद मूल से भिन्न लगता है। इसके बाद "तैयार" के लिए "job" शब्द लिखा गया हैं लेकिन मूल वाक्य में संदर्भ और भाव से स्पष्ट होता है कि इस उपन्यास की नायिका कॉलेज जाने के लिए तैयार हो रही है । मतलब यह है कि वह स्त्री किसी काम को समाप्त नहीं कर रही है बल्कि कि स्वंय तैयार हो रही है। जबकि अनुवाद को पढ़कर लगता है कि वह किसी काम को समाप्त कर रही है। इस वाक्य में यह असमानता एकदम स्पष्ट हो रही है। मुझे लगता हैं कि इस वाक्य का संदर्भ और भाव को देखकर अनुवाद किया जाये तो इस वाक्य को इस तरह लिखा जा सकता है- "she got ready" यह अनुवाद ज्यादा उपयुक्त लगता है जो मूल वाक्य के भाव को अनुवाद में पूरी तरह व्यक्त कर रहा है क्योंकि उपन्यास में यह स्पष्ट है कि शकुन का तैयार होना स्वंय के लिए है न कि किसी कार्य की समाप्ति।

इस वाक्य की दूसरी पंक्ति में भी व्यतिरेक की समस्या उभर रही है। शकुन कॉलेज जाते समय बंटी को बाहर न जाने की हिदायत दे रही है कि "देखो बेटे, धूप में बाहर नहीं निकलना,हाँ ।"अनुवादक ने इस वाक्य का अनुवाद इस तरह किया हैं। "Child do not go out in the sun, Are you listening ?" इस वाक्य में "देखो बेटे" का अनुवाद "child" किया है। यह शब्द मूलभाव से भिन्न है। यह मूलभाव का निकटतम अनुवाद लगता हैं। जबकि "देखो बेटे" के लिए अंग्रेजी में सीधे "look child" अनुवाद किया जा सकता है । इस वाक्य के दूसरे अंश का अनुवाद (do'not go out in the Sun) उचित हुआ हैं लेकिन "हाँ" के लिए "are you listning" सही अनुवाद नहीं हुआ है क्योंकि यह अनुवाद प्रश्नवाचक है। मूल वाक्य को अनुवाद में प्रश्नवाचक करने की क्या आवश्यकता थी? इस वाक्य में बंटी बाहर न जाने के लिए "हाँ" बोल रहा है। जबकि अनुवाद में "Are you listening" से लग रहा है कि शकुन बोल रही है "क्या तुम सुन रहे हो।" यहां पर अनुवाद में बंटी की "हाँ" अभिव्यक्त नहीं हो रही है। इस असमानता से बचने के लिए मुझे

लगता है कि सीधे–सीधे बंटी की "हाँ" का अंग्रेजी अनुवाद "ok" होना चाहिए। यह "ok" मूलवाक्य में व्यक्त बंटी की "हाँ" को अंग्रेजी अनुवाद में बचाए रखता है। इसके बाद अनुवादक ने हिन्दी वाक्य की सहजता को अनुवाद में लाने के लिए मूलवाक्य से कुछ अधिक जोड़ कर अनुवाद किया है। जैसे कि

"She warmed Bunty, And look", यह सारी बातें मूलवाक्य में नहीं हैं लेकिन अनुवादक ने इन्हें वाक्य में लिखकर वाक्य को प्रभावशाली बनाया है। उनका यह प्रयास बढ़िया है।

इस अनुच्छेद के अंतिम वाक्य में लेखिका ने लिखा है। शकुन फूफी को निर्देश देती है कि वह उसके जाने के बाद बंटी का खास ध्यान रखे जैसे कि "फिर फूफी को आदेश दिया, बंटी जो खाए वहीं बनाना, एकदम बंटी की मर्जी का खाना,समझीं"। इस वाक्य के अंग्रेजी अनुवाद में अनुवादक ने लिखा है कि

"she said turning to Phuphi, "cook for him what he likes to eat, understand."

यह अनुवाद मूल वाक्य के भाव को तो अभिव्यक्त करता है लेकिन इस वाक्य के अनुवाद में "समझीं" के लिए "understand" में असमानता है क्योंकि हिन्दी वाक्य के समझीं में जो भाव विद्यमान है वह अंग्रेजी में नहीं है। हिन्दी भाषा में समझीं के दो संदर्भ है। पहला संदर्भ यह हैं कि हम "समझीं" का प्रयोग किसी को डाटने,चुनौती या धमकी आदि के अर्थ में करते हैं। जिसका सहज अंग्रेजी अनुवाद "understand" किया जा सकता है लेकिन हम दूसरे संदर्भ में "समझीं" का प्रयोग "किसी व्यक्ति को बात समझना" के अर्थ में करते हैं। कि फलाँ बात को समझना। जिसका अंग्रेजी अनुवाद "comprehension, follow, got" किया जाता है। इस वाक्य का मूलभाव है कि शकुन फूफी को बंटी के बारे में समझा रही है । उन सारी बातों को फूफी को समझकर अमल में लाना है इसलिए यहां पर "समझीं" का अर्थ "understand" नही है बल्कि फूफी को समझना है कि उन्हें क्या करना है।

इसलिए "समझीं" का अंग्रेजी अनुवाद "understand" नहीं होगा हैं। इसका अनुवाद "do you follow और you got me" होना चाहिए । जो मूल के भाव को अंग्रेजी में व्यक्त कर रहा है।

इस तरह की असमानता को समझने के लिए उपन्यास में आये इस वाक्य को देखा जा सकता है कि शकुन के कॉलेज जाने के बाद बंटी अपनी ही दुनिया में गुम रहता है। वे सारी बातें जो वास्तविक जीवन में उसकी ममी उसे नहीं करने देती हैं। वह सारी बातें वह अपने कल्पनालोक में पूरी करता हैं या फिर उन सभी बातों के बारे में ही सोचता रहता है। इसी तरह उपन्यास में वह दो लड़को को देखकर सोचता है कि यदि वह साईकिल चलाये तो उसे कैसा महसूस होगा। लेखिका ने इसे ऐसे लिखा है- [15]"सामने से दो लड़के साईकिल पर बातें करते हुए गुज़र गए।" इस वाक्य का अंग्रेजी अनुवाद जयरतन जी ने इस प्रकार किया है। "two boys passed riding on bicycles." उन्होंने इस वाक्य के अनुवाद में "सामने से और गुजरना के लिए" "passed" शब्द का प्रयोग किया है। जबकि वाक्य में "सामने से और गुज़रना" दोनों का अलग–अलग बातें हैं जिसके लिए अंग्रेजी में एक ही शब्द "passed" रखकर काम नहीं चलाया जा सकता है इसलिए यह अनुवाद मूल वाक्य की आत्मा का हनन लगता है। उपन्यास में बंटी लोहे के गेट पर खड़ा होकर देख रहा है कि दो लड़के "सामने से" साईकिल पर "गुजर" रहे हैं इसलिए "सामने से" और "गुजरना" के लिए अंग्रेंजी में "infront" और "past"अनुवाद होना चाहिए । उन्होंने साइकिल के लिए "riding" शब्द का प्रयोग सही किया है क्योंकि "riding" का अर्थ होता है "साइकिल की सवारी करना।" इसलिए इस अनुवाद से यह तो स्पष्ट होता है कि "दो लड़के साइकिल की सवारी कर रहे हैं" लेकिन बाकी हिन्दी शब्दों का अनुवाद छूट गया है जैसे कि "बातें करते हुए" का अनुवाद नहीं किया है। अंग्रेजी में "बातें करते हुए" के लिए

---

[15] आपका बंटी पृष्ठ –11
[15] Bunty page -11

"talking to each other" होना चाहिये। मुझे लगता है इस वाक्य का अनुवाद इस तरह किया जा सकता है। "two boy rode past infront him talking to each other." इस अनुवाद में मूल हिन्दी वाक्य के सभी तथ्य आ रहे हैं।

यह उपन्यास एक बच्चे "बंटी" की समस्या को लेकर चलता है। लेखिका ने बच्चे के बालमन की परतों को खोलने का सार्थक प्रयास किया है कि बच्चा किस प्रकार सोचता है। उसकी भाषा कैसी होती है। उपन्यास में ये सारी बातें कथावस्तु के अनुरूप आ गई हैं। लेकिन इनके अनुवाद में अनुवादक को उतनी सफलता नहीं मिली जितनी मिलनी चाहिए थी। इस दृष्टिकोण से इस वाक्य को देखा जा सकता है। जब बंटी अपने मन ही मन में यह सोचता है कि "मन हुआ अम्मा के सीने में ही दाग दे बंदूक।" उन्होंने इस वाक्य का अंग्रेजी अनुवाद इस तरह किया हैं: "He felt like firing the gun at her." इस वाक्य में "मन हुआ" का अनुवाद "He felt" उचित है लेकिन वाक्य का दूसरा अंश है [16]"सीने में" का अंग्रेजी अनुवाद "at her" उचित नहीं लगता है, क्योंकि वाक्य में "सीने में" का सीधा अर्थ है कि गोली (छाती) शरीर के ऊपरी हिस्से में मारनी है लेकिन अनुवाद में "at her" पढ़कर लगता है कि गोली शरीर के किसी भी हिस्से में मारनी है इसलिए अंग्रेजी अनुवाद में "at her" का अर्थ हिन्दी से भिन्न हैं। इसके लिए अंग्रेजी में "shooting her और in her chest" होना चाहिये। वाक्य के तीसरे अंश में "दाग दे" के लिए अंग्रेजी "firing" मूल से एकदम भिन्न है। हिन्दी में "दाग दे" का अर्थ- मार दिया, मारना आदि होता है। जबकि अंग्रेजी "firing" का अर्थ होता है "बड़े व्यापक पैमाने पर पुलिस अधिकारियों या सेना अधिकारियों का एकसाथ मिलकर गोलियां मारना।" इसलिए यह शब्द (firing) मूल हिन्दी शब्द को व्यक्त नहीं कर पा रहा है। मुझे लगता है कि इस व्यतिरेकी समस्या "दाग दे" को अंग्रेजी में "shooting" के द्वारा दूर किया जा सकता है। यदि इसे अंग्रेजी वाक्य में ऐसे

---

[16] आपका बंटी पृष्ठ –15
[16] Bunty page-15

प्रयुक्त किया जाए तो ज्यादा उचित होगा। "He felt like shooting her." इसमें मूल वाक्य का पूरा भाव आ रहा है इसके साथ ही इस वाक्य का दूसरा हल यह हो सकता है कि अंग्रेजी में इसे इस तरह लिखा जाये। "He felt shooting the gun in her chest." इस तरह लिखकर भी व्यतिरेक की समस्या से मुक्त हुआ जा सकता है।

जयरतन इस उपन्यास के अनुवाद में वाक्य संरचना की दृष्टि से भी सफल हुये हैं। उन्होंने अपनी अनुवादकीय प्रतिभा और कुशलता का सफल परिचय दिया है। जिस तरह से मन्नू जी ने भारतीय समाज में स्त्री की स्थिति को उजागर किया हैं उसी तरह वे भी अनुवाद में इस बात को स्पष्ट करते हैं। लेखिका ने इन तथ्यों को फूफी के माध्यम से स्पष्ट किया है। वे लिखती हैं कि- [17]"जिस घर के लोग लीक छोड़कर चलेंगे, उसमें यही सब होगा। अभी क्या हुआ है,अभी तो बहुत कुछ होगा। बड़बड़ाती हुई फूफी लौट गई" [18]"What, good will this family come to with such ways ? Phuphi muttered," It just the begining wait and see. उन्होंने इस वाक्य का शाब्दिक अनुवाद किया है। इस मूल हिन्दी वाक्य में व्यक्त समस्त तथ्यों का अंग्रेजी में अनुवाद नहीं हुआ है। इस अनुवाद की सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि उन्होंने इस वाक्य का अनुवाद प्रश्नवाचक वाक्य के रूप में किया है। जो अनुवाद का अच्छा उदाहरण है, इसलिए यह प्रश्नवाचक अनुवाद होते हुये भी मूल भाव को अंग्रेजी में व्यक्त करता है, जबकि हिन्दी में यह वाक्य प्रश्नवाचक वाक्य नहीं है। दूसरा इस वाक्य में "बड़बड़ाती,अभी तो बहुत--कुछ होगा, अभी क्या हुआ हैं" का अंग्रेजी में अनुवाद उचित हुआ है।

"Phuphi mutterel It's just the beginning.Wait an see." लेकिन इस वाक्य में "जिस घर के लोग लीक छोड़कर चलेंगें, उसमें यही सब होगा" के लिए अंग्रेजी के "what, good will this family come to with such

---

[17] आपका बंटी पृ0 -110
[18] Bunty page-103

way? लिखा गया है। लेकिन "such way" से यह स्पष्ट नहीं हो पाया है कि किस तरह के लोग हैं जो समाज से हट कर जीवन जीना चाहते हैं। यहां पर अनुवाद थोड़ा सा भ्रम उत्पन्न करता है। यदि इसे अंग्रेजी में कोष्ठक में स्पष्ट किया जाता तो ज्यादा बेहतर होता। इस तरह से (when its own member go against the tradition.) इस तरह वाक्य को अधिक प्रभावशाली बनाया जा सकता है क्योंकि समाज में रहने वाले सभी लोग तो रूढ़ियों और परम्पराओं का विरोध नहीं करते लेकिन उपन्यास की नायिका इन तत्वों को तोड़ रही है। इस वाक्य में "जिस" के लिए अंग्रेजी में "what' का चुनाव सही है। इस वाक्य में सबसे बड़ी असमानता जो दिखायी देती है वह यह है कि वाक्य "बड़बड़ती हुई फूफी लौट गई" में "लौट गई" का अनुवाद छूट गया है लेकिन वाक्य में इस शब्द का अनुवाद होना चाहिये। जिससे वाक्य पूरा हो सके। इसे अंग्रेजी में ऐसे लिखा जा सकता है। "Phuphi muttered and turned back"

इस पूरे वाक्य का अनुवाद अंग्रेजी में इस तरह किया जाये तो मूल वाक्य की सारी बातें अनुवाद में आ सकेगीं। "what, good will this family come to with such ways?(when its own member go against the tradition)Phuphi muttered and turned back."It just the beginning wait and see."

"आपका बंटी"का अंग्रेजी अनुवाद "वाक्य संरचना के स्तर पर" व्यतिरेक की समस्याओं से मुक्त भी नज़र आता है। उपन्यास के अनेक स्थलों पर अनुवाद अच्छा बन गया है। इसके लिए उपन्यास में व्यक्त इस वाक्य को देखा जा सकता है। लेखिका ने शकुन के संदर्भ में कहा है कि- [19]"औरत कहीं की कहीं पहुंच जाए फिर भी पुरुष का साथ उसके लिए कितना जरूरी है..... .....पर वह साथ हो,सही अर्थों में।" अुनवादक ने इस वाक्य का सटीक अनुवाद किया है।

---

[19] आपका बंटी पृ0 -118

[20]"A woman may reach any height of glory but even than she requires a man's support. But it must be a support in the real sense of the word." इस वाक्य के अनुवाद में मूलवाक्य में कही सारी की सारी बातों का अंग्रेजी में अनुवाद वाक्य संरचना के अनुसार हुआ। इसमें जयरतन जी को सफलता मिली है। इसी प्रकार उपन्यास के इस वाक्य को यहाँ देखा जा सकता है। [21]"क्या क्लास को भाजी–मार्केट बना रखा है।" इसका अंग्रेजी अनुवाद है। [22]"Do not convert the class into fish market."यह वाक्य भी व्यतिरेक की समस्या से पूरी तरह मुक्त है। मूल हिन्दी वाक्य में क्लास का प्रयोग किया है जो अंग्रेजी का शब्द है । जिससे अनुवादक को अनुवाद करने में सहायता मिली है साथ ही हिन्दी वाक्य संरचना का अनुवाद अंग्रेजी वाक्य सरंचना के अनुसार हुआ है। इस वाक्य में किसी भी प्रकार का व्यतिरेक नहीं है और अनुवाद में "भाजी मार्केट" के लिए अंग्रेजी में "fish market" बढ़िया किया है।

इस उपन्यास के अनुवाद में शब्द के स्तर पर असमानताएं(व्यतिरेकी समस्याएं) उभरती है। मन्नू जी ने हिन्दी भाषा में कुछ ऐसे शब्दों का प्रयोग किया है, जिनके लिए अंग्रेजी भाषा में शब्द नहीं है। जयरतन जी ने इस समस्या का समाधान उन शब्दों का निकटतम अनुवाद करके कर दिया है लेकिन यह निकटतम अनुवाद मूल हिन्दी शब्द की गरिमा को अनुवाद में बनाए रखने में असमर्थ लगता है। जिसके लिए हम इस उपन्यास के शीर्षक को देख सकते हैं। इस उपन्यास के शीर्षक "आपका बंटी" के अंग्रेजी अनुवाद "बंटी" में शब्द स्तर पर असमानता स्पष्ट दिखायी पड़ती है। इस उपन्यास की कथा किसी एक परिवार की कथा–व्यथा नहीं है। लेखिका ने बंटी के माध्यम से समस्त भारतीय मध्यमवर्गीय परिवारों में पति–पत्नी के सम्बन्धों के बीच उत्पन्न तनाव या तलाक की समस्या को उठाया है। इसमें शकुन और अजय ऐसे

---

[20] Bunty page -110
[21] आपका बंटी पृ0 -84
[22] Bunty page -74

दम्पति हैं जिनके बीच के "तनाव की समस्या" को उनका एकमात्र बेटा "बंटी" सबसे अधिक झेलता है। इसलिए यह समस्या केवल बंटी की नही है बल्कि उस जैसे अनगिनत बंटी या बच्चों की कथा है, जिनके माता-पिता आपसी तनाव से बचने के लिए तलाक ले लेते हैं और अपने बच्चों को अंत में नार्मल बनाने के लिए हॉस्टल भेज देते हैं इसलिए लेखिका का शीर्षक "आपका बंटी" इस अभिव्यंजना को व्यक्त करता हैं लेकिन अनुवादक का शीर्षक, मूल शीर्षक से भिन्न लगता है। उन्होंने "आपका बंटी" का अनुवाद "बंटी" किया है। यह शीर्षक मूल उपन्यास की व्यंजना को स्पष्ट नहीं करता है। इस उपन्यास के अंग्रेजी शीर्षक "बंटी" से तो ऐसा लगता है कि यह केवल एक ही परिवार के बंटी कथा-व्यथा है। जबकि वास्तविक शीर्षक का भाव इससे पूरी तरह भिन्न है इसलिए मुझे ऐसा लगता है कि आपका बंटी के शीर्षक का अनुवाद "Our Bunty, Lost Childhood और The story of Indian bunty" आदि किया जा सकता है।

मन्नू जी के लेखन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उनकी भाषा जनसाधारण की भाषा है। उनकी भाषा में किसी भी तरह का बनावटीपन देखने को नही मिलता है। वे सरल और स्पष्ट शब्दों का प्रयोग करती हैं लेकिन अनुवादक ने इन शब्दों के अनुवाद में प्रशंसनीय कार्य नहीं किया है। जैसे कि लेखिका ने चपरासी से शकुन का सम्मान करवाने के लिए [23]"सलाम ठोंकना" शब्द का प्रयोग किया है पर अनुवादक ने इस शब्द का अनुवाद [24]"throwing a big salam" किया है। ऐसा लगता है कि यह अनुवाद सही नहीं है। उपन्यास में चपरासी शकुन का अभिवादन करने के लिए अपना हाथ उठाता है और इसके साथ वह अभिवादन के लिए विशेष शब्द का प्रयोग करता है लेकिन अुनवाद से ऐसा लगता है कि वह अभिवादन नहीं कर रहा है बल्कि किसी वस्तु को फेंक रहा है। सम्पूर्ण विश्व में अभिवादन के अनेक तरीके

---

[23] आपका बंटी पृ0 -10
[24] Bunty page -10

प्रचलित है। प्राय: समुदायों में अभिवादन के लिए कुछ खास शब्दों का प्रयोग किया जाता है तो कुछ समुदायों में जैसे कि भारतीय समुदायों में व्यक्ति उठकर, हाथ जोड़कर कुछ खास शब्दों के साथ अभिवादन करता है। इसी प्रकार "सलाम ठोंकना" अभिवादन के लिए शारीरिक क्रिया के साथ एक खास शब्द का प्रयोग है। इसके लिए उन्होंने "throw" शब्द लिखा है । यह शब्द मूलभाव "ठोंकना" की व्यंजना को स्पष्ट नहीं करता है क्योंकि अंग्रेजी शब्द "throw" का अर्थ है (क) फ़ेकने की क्रिया (ख) फेंकना की दूरी। जबकि "सलाम ठोंकना" अभिवादन करते समय हाथ का उठाना है। जिसे अनूदित शब्द "throw" के द्वारा फेंका नहीं जा सकता । यह शब्द व्यतिरेकी की समस्या को उत्पन्न करता है इसलिए इस शब्द के व्यतिरेक को दूर करना आवश्यक है क्योंकि इस अनुवाद से मूल शब्द की व्यजंना धूमिल हो रही है। मुझे लगता है कि इस शब्द का अनुवाद करने के लिए "सलाम ठोंकना" का अंग्रेजी में लिप्यतरंण कर दिया जाए और कोष्ठक में यह स्पष्ट कर दिया जाए कि "सलाम ठोंकना" अभिवादन के स्तरों में से एक स्तर है। इसे इस तरह से लिखा जा सकता हैं: "salam thokana (he raised his palm towards his chin and said salam (solute) is greeting her.)" इस अनुवाद से यह स्पष्ट हो रहा है कि "सलाम ठोंकना" में व्यक्ति हाथ उठाकर माथे तक लाकर सलाम बोलकर अभिवादन करता है। इस अनुवाद से मूल शब्द का भाव अंग्रेजी अनुवाद में आ रहा है। यह अनुवाद "throwing a big salam" से ज्यादा उपयुक्त लगता है।

इसी तरह उपन्यास में दूसरा शब्द [25]"चिक उठाएगा" आया है। जिसका अनुवाद जयरतन जी ने [26]"lift the chik" किया है। उन्होंने इस शब्द के अनुवाद में "चिक" का लिप्यतरंण किया है और "उठाएगा" के लिए "lift" शब्द का प्रयोग किया है। यह अनुवाद शब्द स्तर पर सही है। यदि उन्होंने

---

[25] आपका बंटी पृ0 -10
[26] Bunty page -10

"चिक" शब्द का अंग्रेजी में लिप्यतरंण किया है तो उन्हे संदर्भ या कोष्ठक में इसे स्पष्ट करना चाहिए था कि वास्तविक रूप में "चिक" क्या है क्योंकि अंग्रेजी पाठक वर्ग "चिक" के लिप्यतरंण से यह नहीं समझ पाएगा कि "चिक" का अर्थ क्या है? इसलिए लगता है कि इसका अनुवाद "lift the chik" (a curtain made of reds) दिया जाए तो यह अनुवाद ज्यादा सटीक लगेगा। इससे मूल हिन्दी शब्द चिक की अभिव्यक्ति पूरी तरह अनुवाद में आ पायेगी।

मन्नू जी में राष्ट्रीयता की भावना कूट–कूट कर भरी है। शायद यही वजह है कि उनके उपन्यासों में भी यह बात दिखाई पड़ती है "आपका बंटी" उपन्यास में सूक्ष्म स्तर पर राष्ट्रीयता की भावना विद्यमान है बंटी अपने पापा के साथ हॉस्टल जा रहा है। उसे कहीं से जुलूस के जाने और उसके द्वारा नारे लगाने की आवाज़ आती है। वह [27]"इन्कलाब जिन्दाबाद" का नारा सुनता है लेकिन जयरतन ने अनुवाद में इस शब्द का लिप्यतरंण [28] "Inquilab Zindabad" किया है यह अनुवाद के दृष्टिकोण से सही हो सकता है लेकिन अंग्रेजी शब्द के स्तर पर यह असमान है, क्योंकि अंग्रेजी पाठक के लिए इस शब्द (इन्कलाब जिन्दाबाद) का अर्थ समझना कठिन है। इसके साथ ही अंग्रेजी भाषा में इस शब्द के लिए "live long Revolution" शब्द है तो अनुवाद में लिप्यंतरण की आवश्यकता क्या है? यदि अनुवाद ने लिप्यंतरण किया भी है तो कोष्ठक में इस नारे को स्पष्ट भी करना चाहिये। इन्कलाब जिन्दाबाद को इस तरह भी लिखा जा सकता है। "Inquilab Zindabad" (Patriotic phrase or song) यह अधिक उपयुक्त है।

इसके बाद उपन्यास में व्यक्त इस वाक्य के अनुवाद में भी शब्द व्यतिरेक की समस्या देखने को मिलती है। लेखिका ने व्यक्त किया है कि शकुन कॉलेज जा रही है। जब वह कॉलेज जा रही है तो उस समय वह बरामदें की सीढ़ियों का इस्तेमाल करती है और इसके साथ ही उसकी चप्पल आवाज़ करती है।

---

[27] आपका बंटी पृ0 -225
[28] Bunty page -213

इन सभी बातों को वह इस तरह से लिखती है कि [29]"उनकी चप्पल की खटखट जब बरामदे की सीढ़ियो पर पहुंची" अनुवादक ने इस वाक्य का अनुवाद ऐसे किया है- [30]"As the staccato sound of her chappal reached the verandah step."

इस अनुवाद में शब्द स्तर पर व्यापक समस्या उपस्थित है। सबसे पहले तो अनुवादक ने "खटखट" के लिए "Staccato" शब्द का चयन उचित नहीं किया है क्योंकि अंग्रेजी "Staccato" शब्द "Secateurs" से बना है। इस शब्द का अर्थ होता है "सरौता" । इसलिए "staccato" का मूल अर्थ होता है कि जब "सरौते से किसी वस्तु को काटा जाता है तो खट की आवाज होती है उस खट की आवाज को "staccato" कहा जाता है।" यह इस वाक्य का पहला व्यतिरेक है जोकि "खटखट" की आवाज़ को "staccato" से स्पष्ट नही करता है। अंग्रेजी भाषा में इस खटखट को व्यक्त करने के लिए "foolfall" शब्द का प्रयोग करना चाहिये। यह शब्द मूल शब्द "खटखट" को अनुवाद में व्यक्त कर रहा है। इस वाक्य में दूसरा व्यतिरेक "चप्पल" शब्द में है। जिसका अनुवाद लिप्यंतरण में "chappal" हुआ है। उपन्यास में शकुन कॉलेज जा रही है तो वह साधारण "चप्पल" पहनकर कॉलेज नहीं जा सकती यहां पर वाक्य का संदर्भ लेकर अनुवाद करना चाहिए । "Sandal" या अन्य अंग्रेजी शब्द लिखा जा सकता है। तीसरा व्यतिरेक "बरामदे की सीढ़ियों" में है इसका अनुवाद "Verandah step" उचित शब्द नहीं है क्योंकि अंग्रेजी में "सीढ़ी" के लिए "ladder" शब्द और "बरामदे" के लिए "Courtyard ladder" होता हैं। इसलिए मुझे लगता है कि इस पूरे वाक्य का अनुवाद "Her footfall reached the courtyard ladder" ज्यादा सटीक अनुवाद होगा क्योंकि इस तरह अनुवाद में मूल हिन्दी शब्दों को सटीक अभिव्यक्त किया जा सकता है।

---

[29] आपका बंटी पृ० -9
[30] Bunty page -10

इसके अतिरिक्त उन्हें हिन्दी शब्दों के अंग्रेजी अनुवाद में आने वाली (व्यतिरेक) समस्याओं के समाधान में सफलता भी मिली है। जैसे कि इस उपन्यास में फूफी बंटी को लड़की कह कर चिढ़ाती है कि वह लड़की है और वह नादान बच्चा इस बात से कई बार चिढ़ भी जाता है। बंटी फूफी की इस बात का विरोध करता है। वह उसे डराते हुये कहता है कि

[31]"अब कहेगी कभी लड़की, कर दूं शूट।" जिसका अंग्रेजी अनुवाद इस तरह किया गया है। [32]"Call me girl and I'll shoot you dead" अनुवादक ने इस वाक्य के अनुवाद में शब्दों का चयन सटीक किया है कहीं भी शब्दों के प्रयोग में कोई व्यतिरेकी समस्या उत्पन्न नहीं होती है।

इसी के साथ उपन्यास में फूफी बंटी के खाने के लिए दूध और दलिया बनाती है। जिसे लेखिका ने बड़े ही सरल शब्दों में लिखा है कि [33]"दूध दलिया खा लो" अनुवादक ने इस वाक्य का अनुवाद बढ़िया किया है कि [34]"Eat your parridge"। इस अनुवाद में शब्दों का चयन सटीक है। प्राय: सारे अंग्रेजी शब्द मूल वाक्य के शब्दों को व्यक्त कर रहे हैं।

इसी तरह इस उपन्यास का यह वाक्य भी व्यतिरेक की समस्या से पूरी तरह है जिसमें शकुन कहती है- "नहीं, वह इस साथ के बीच में अब कोई बाधा बर्दाश्त नहीं करेगी।बंटी की भी नहीं।" इस वाक्य के अनुवाद में भी उन्होंने अपनी अनुवादकीय प्रतिभा का परिचय दिया है उन्होंने अनुवाद में लिखा है कि "Now she would not tolerate any intrusion between the two of them. Not even bunty." इस प्रकार इन वाक्यों के अनुवाद में शब्द स्तर पर उन्हें सफलता मिली है।

आपका बंटी पृ0 -10
Bunty" page -14
आपका बंटी पृ0 -51
unty" page -47

इस उपन्यास के अनुवाद में ध्वनि के स्तर पर व्यतिरेक की समस्या सामने आती है क्योंकि हिन्दी और अंग्रेजी दो भिन्न भाषा परिवारों की भाषा इसलिए इनकी ध्वनि व्यवस्था में प्राय अंतर विद्यमान हैं। हिन्दी भाषा में व्यंजन का वर्ग अलग है और स्वर का वर्ग अलग है। हिन्दी भाषा में ह्रस्व और दीर्घ स्वर,सघोष–अघोष, महाप्राण–अल्पप्राण व्यंजनों का प्रयोग उच्चारण स्थान के आधार पर होता है जबकि अंग्रेजी भाषा में स्वर का वर्ग अलग से निश्चित नही होता है। वे व्यंजन के बीच में ही आते हैं। अंग्रेजी के प्रत्येक व्यंजन का एक उच्चारण मूल है लेकिन जब शब्द में व्यंजन के साथ स्वर लगते हैं तो उनका उच्चारण भिन्न हो जाता है। उदाहरण के लिए "Cat and Nice" को देखा जा सकता है, इन शब्दों में व्यंजन "C" है लेकिन "a,i"स्वर का प्रयोग करने से इन शब्दों के उच्चारण में फर्क आता है। हम पहले शब्द को "कैट" पढ़ते हैं और दूसरे शब्द "नाइस" पढ़ते हैं। इसी प्रकार का अंतर हिन्दी और अंग्रेजी भाषा में ध्वनि के स्तर पर सामने आता है। "आपका बंटी" उपन्यास के अनुवाद में अनेक ऐसे शब्द आये हैं जिनकी ध्वनियां उच्चारण व लेखन के स्तर पर हिन्दी की ध्वनियों से भिन्न हैं। ये भिन्नता हिन्दी ध्वनियों के अंग्रेजी अनुवाद में व्यक्तिवाचक नामों के आधार पर आती है।

"आपका बंटी" उपन्यास में बंटी के बहुत सारे दोस्त हैं। जिनमें "शन्नों और कुन्नी" भी शामिल हैं लेकिन अनुवादक ने इन दोनों नामों के अनुवाद में हिन्दी ध्वनियों का अंग्रेजी में लिप्यतरंण नहीं किया है उपन्यास में शन्नों का अनुवाद एक स्थल पर "Shanno' किया है तो दूसरे स्थल पर "Shinni" अनुवाद किया हैं। यह अनुवाद मूल "शन्नों" में प्रयुक्त ध्वनि का ह्रास है क्योंकि हिन्दी में "न" (नासिक्य) वर्ण के लिए अंग्रेजी में "N" वर्ण का विधान हैं और हिन्दी में "ो" (ओ) हस्व स्वर के लिए अंग्रेजी में "O" स्वर है तो अंग्रेजी स्वर के आधार पर शन्नों का अनुवाद Shanno होना चाहिए । यह अनुवाद मूल हिन्दी ध्वनि को अंग्रेजी में ला रहा है।

इसी तरह उपन्यास में बंटी की दूसरी मित्र का नाम "कुन्नी" है। जिसका अुनवाद "Kinni" हुआ है। यहां पर "कुन्नी" के अंग्रेजी अनुवाद में मूल हिन्दी ध्वनियों का लोप हुआ है। हिन्दी ध्वनि के आधार पर "कुन्नी" शब्द को देखा जाए तो यह स्पष्ट हो जाता है कि कुन्नी में "क" वर्ण अल्पप्राण है। इसके बाद " ु" (उ)ह्रस्व स्वर, "न" वर्ण नासिक्य और " ी "(ई)दीर्घ स्वर है। अंग्रेजी में इन स्वर ध्वनियों को कमश "क"को"k", " ु" "उ"को (ū), "न"को(n) और "ी" "ई"को (e) लिखा जाता है। इस अंग्रेजी ध्वनि व्यवस्था के आधार पर "कुन्नी" का अनुवाद "Kune" होना चाहिए । इसके साथ ही उपन्यास में "हीरालाल" के अंग्रेजी अनुवाद में भी यही ध्वनि की समस्या आ रहीं है। मूल हिन्दी भाषा में "हीरालाल" में " ी" "ई" दीर्घ स्वर है। लेकिन जयरतन जी ने इसका अंग्रेजी में अनुवाद Hiralal किया है। अंग्रेजी में हिन्दी "ी" "ई" दीर्घ स्वर के लिए (i) का विधान है अतः "हीरालाल" का अंग्रेजी अनुवाद "Heeralal" होना चाहिए ।

इस उपन्यास में उर्दू शब्द का प्रयोग किया गया है। उपन्यास में "फूफी" एक ऐसा ही शब्द है । जिसका सामान्य अर्थ होता है पिता की बहन अर्थात बुआ लेकिन इस उपन्यास में "फूफी" का सम्बन्ध इसके विपरीत है। उपन्यास में "फूफी" बंटी और घर की देखभाल करने वाली स्त्री है जिसे शकुन और बंटी दोनों ही "फूफी" बुलाते हैं। जयरतन जी ने फूफी का अंग्रेजी अनुवाद "Phuphi" लिखा है यह अनुवाद मूल हिन्दी की ध्वनि को अंगेजी में ला पाया है। जबकि हिन्दी में "प" वर्ण के लिए अंग्रेजी में "P" वर्ण हैं और "फ" ध्वनि के लिए "Ph" लिखा जाता है। यहां पर P (Phonetic) ध्वनि का लोप हो जाता है इसलिए इसे "फ" "Ph"उच्चारण और लिखा जाता है। अंग्रेजी मे "Ph" के साथ "ऊ" " ू" उच्चारण मूल्य (Fu) है और इसके अनुसार ही "फी" "ई" " ी " के लिए (Fi) उच्चारण मूल्य है। इस तरह यह स्पष्ट हो जाता है कि हिन्दी "फूफी" का उच्चारण अंग्रेजी में किस प्रकार आ रहा है। अंग्रेजी

उच्चारण में “फूफी” के लिए (Fu) और (Fi) और लिखने में (Fū) और (Fī) लिखा गया है यह अनुवाद सही है।

उपन्यास में बंटी “भैया” शब्द का प्रयोग अनेक संदर्भो में हुआ है। कभी प्यार से फूफी बंटी को “भैया” बुलाती हैं तो डॉ० जोशी बंटी का परिचय अपने बच्चों से करवाते हुए कह रहे हैं कि यह बंटी “भैया” है इसका अर्थ यह है कि उपन्यास में भैया का प्रयोग भईया और भाई के संदर्भ में नहीं हुआ । इस भैया का संदर्भ उपन्यास में आए पात्रों के अनुकूल बदलता रहा है इसलिए अनुवादक ने शायद भैया का अंग्रेजी में अनुवाद ही किया है बल्कि भैया का लिप्यतरंण अनुवाद में किया है। हिन्दी भाषा के भीतर भैया लिखने के तीन स्तर हैं (क) भैया (ख) भइया (ग) भईया । यद्यपि भैया का उच्चारण स्तर भइया है। भइया में संध्यस्वर ऐ+य स्वर अइ में परिणत हो जाता है इसलिए यह बहुत रोचक बात है कि इसका अंग्रेजी अनुवाद भैया के स्तर पर नहीं हुआ । इसका अंग्रेजी अनुवाद हिन्दी उच्चारण भइया के स्तर (ध्वनि के आधार) पर हुआ है। अनुवादक ने अंग्रेजी Bhaiyya में हिन्दी ध्वनि कि लिए (अइ) ai का इस्तेमाल किया है जिससे वह मूल हिन्दी भइया (भैया –अइ) की ध्वनि को अंग्रेजी में ला पाये हैं।

इस उपन्यास में व्यक्तिवाचक संज्ञा [35] “हावड़ा” का अंग्रेजी अनुवाद [36] “Howarah” हुआ है। हिन्दी में “ह” अल्पप्राण ध्वनि है और “व” महाप्राण ध्वनि है लेकिन अंग्रेजी “व” के लिए “v” और “w” वर्ण का प्रयोग प्रायः किया जाता है। अंग्रेजी में महाप्राण ध्वनियाँ नहीं होती है जबकि हिन्दी भाषा के अनुसार “व” महाप्राण ध्वनि है। अंग्रेजी में व वर्ण “w” का प्रयोग अर्धस्वर उच्चारण के लिए होता है और व वर्ण “v” का प्रयोग संघर्षी उच्चारण के लिए होता है। इसलिए इस शब्द में “व” के लिए “w” का चयन सही हुआ है। इसके बाद में हिन्दी में “ड़” वर्ण ना!सिक्य है लेकिन अंग्रेजी भाषा में नासिक्य

---

[35] आपका बंटी पृ0 -189

[36] Bunty page -180

वर्ण नहीं है इसलिए हिन्दी नासिक्य ध्वनियों के लिए अंग्रेजी में विशेष चिन्हों का प्रयोग किया जाता है जैसे कि "ड़" वर्ण के लिए "r" लिखा जाता है । यहां पर अनुवादक ने "ड़" वर्ण के लिए अंग्रेजी में "r" का प्रयोग उचित किया है इसलिए इसका अनुवाद "Hawrah" मूल हिन्दी की समस्त ध्वनियों को आत्मसात कर रहा है।

आपका बंटी उपन्यास के एक वाक्य में डा0 जोशी खाने की मेज़ पर बैठे "खीं खीं" कर रहे हैं। उस ध्वनि [37](खीं खीं) का लिप्यतरंण जयरतन जी ने अनूदित कृति में किया है। उन्होंने इसका अनुवाद [38]"Khe Khe" लिखा है। हिन्दी भाषा में प्राय हंसने की तीन या चार विधियां होती है। जिनमें दो ध्वनियां इस तरह हैं (क)खीं खीं करके हंसना (ख) हा हा करके हंसना (ग)अन्य दो विधियाँ और होती हैं। अनुवाद के स्तर पर "Khe Khe" अनुवाद सही है। इस अनुवाद में हिंदी की मूल ध्वनियाँ आ गई हैं लेकिन अभिव्यक्ति के स्तर पर अंग्रेजी पाठक यह नही समझ पाता है कि "खीं खीं" का क्या अर्थ है। यदि अनुवाद में लिप्यतंरण के साथ संदर्भ में यह स्पष्ट कर दिया जाता कि यह कि डॉ0 साहब हंस रहे हैं और यह हंसने की एक क्रिया है। इसे कोष्ठक या संदर्भ में "khe khe (Doctor Sahabe Smile or Laughter)" लिखने से पाठक वर्ग को यह क्रिया समझने में आसानी होगी।

इसके साथ ही मन्नू जी ने इस उपन्यास की संरचना में अनेक अंग्रेजी ध्वनियों कोहिन्दी में लिखा है।जैसेकि ममी,प्रॉमिस,स्लेट कम्यूनिस्ट,एक्से पक्टिंग,लाइक,बॉय,मैन आदि। ये अंग्रेजी भाषा के शब्द हैं लेकिन इन शब्दों की समस्त ध्वनियाँ हिन्दी भाषा में आयी हैं। जिसकी वजह से अनुवादक को इन शब्दों के अनुवाद में आसानी हुयी है।

जयरतन को आपका बंटी के अनुवाद में मूल अर्थ की अभिव्यक्ति ने भी पर्याप्त सफलता मिली है लेकिन कभी–कभी वह मूलभाव को अनुवाद में लाने

---

[37] आपका बंटी पृ0 -139
[38] Bunty page -130

में असफल दिखायी पड़ते हैं। अनुवाद प्रक्रिया के भीतर यह माना जाता है कि किसी भी रचना के अनुवाद में मूल भाव को अनुवाद में लाना आवश्यक है यदि मूल भाव (अर्थ और कथ्य) अनुवाद में नहीं आ पाते तो उस अनुवाद को सफल नहीं कहा जा सकता है क्योंकि मूल कृति की आत्मा अर्थात भाव का अनुवाद आवश्यक है न कि शब्दानुवाद । इस संदर्भ में अनुवादक "आपका बंटी" की आत्मा को अनुवाद में उतार पाया है। इस उपन्यास में जब बंटी अपने पापा के पास रहने के लिए जाना चाहता है लेकिन इन परिस्थितियों में शकुन कुछ भी समझ नहीं पाती है कि वह क्या करे? वह बंटी को रोकना चाहती है लेकिन वह बंटी को रोक नहीं पाती । वह उसे समझाना चाहती है कि वे (बंटी और शकुन) दोनों एक दूसरे के बिना नहीं रह सकते लेकिन वह यह बात बंटी को समझा नहीं पाती। मन्नू जी ने शकुन की विडंबना को इस तरह मूल से व्यक्त किया हैं।

[39]"ममी एक बार बंटी की और देखती है फिर पापा की ओर । फिर उनकी नज़रे जमीन में गड़ जाती हैं उनका चेहरा कैसा पीला–पीला हो रहा है।"

[40]"Mummy looked at Bunty, then at papa and then she looked down. Her face has turned pole." इस अनुवाद में सबसे पहले जयरतन की तारीफ़ करनी चाहिए कि वे मूलभाव को अनुवाद में व्यक्त कर पाये हैं। हिन्दी वाक्य का पदक्रम अंग्रेजी अनुवाद में दिखायी पड़ता है। जिस तरह हिन्दी में एक के बाद दूसरी और दूसरी के बाद तीसरी बात क्रम में आ रही है। ठीक इसी प्रकार अनुवाद में भी यह पदक्रम चला आ रहा है। बंटी के जाने के फैसले से विचलित शकुन एक बार बंटी और एक बार अजय की ओर देखती हैं। यह सारी बातें अनुवाद में हिंदी पदक्रम के अनुसार आयी हैं लेकिन फिर "उनकी नज़रे जमीन में गड़ जाती है" के लिए "She looked down" को

---

[39] आपका बंटी पृ0 -182
[40] Bunty page -173

मूलभाव को ग्रहण नहीं करता है क्योंकि बंटी के फैसले से आहत होकर शकुन आंखे नीचे कर लेती है। यह भाव अनुवाद में छूट गया हैं। जबकि अंग्रेजी वाक्य "She looked down" से तो यह स्पष्ट हो रहा है कि मानो शकुन ने नीचे देख रही है। । यह अनुवाद शकुन की संवेदना और भाव को व्यक्त नहीं करता है। इसका अनुवाद "Her eyes fixed at the ground" होना चाहिए। यह अनुवाद मूल वाक्य में "ज़मीन में नज़र और गड़ना" के भाव को व्यक्त कर पायेगा क्योंकि कोई भी व्यक्ति साधारण स्थिति में सिर नीचे झुकाकर नहीं देखता है। वह किसी परेशानी या किसी विकट स्थिति में ही "नज़र गड़ा कर जमीन में देखता है" इसलिए वाक्य में शकुन की संवेदना को व्यक्त करना आवश्यक है । इस वाक्य का अगला अंश है कि "उनका चेहरा कैसा पीला पीला हो रहा है" उन्होंने इसका अनुवाद इस तरह किया है "her face had turned pale"। इस वाक्य के अनुवाद में जयरतन जी पुनरुक्ति के प्रयोग से बचे हैं। यह बचाव उनके अनुवाद को सफल बनाता है क्योंकि हिन्दी सहित अनेक भारतीय भाषाओं में पुनरुक्तियों का प्रयोग मिलता है लेकिन अंग्रेजी भाषा में यह प्रयोग नहीं मिलता । इसलिए मूल शब्द पीला–पीला के लिए "turned pale" का चयन सही है लेकिन इस वाक्य में कैसा का अनुवाद नहीं हुआ है। वाक्य में उसके चेहरे के भाव बदल रहे हैं लेकिन बंटी यह नही समझ पा रही हैं कि उनका चेहरा यानि कि शकुन का चेहरा "कैसा" पीला–पीला हो रहा हैं यहां "कैसा" का भाव छूटा है और साथ ही वाक्य की क्रिया वर्तमानकाल में सम्पन्न हो रही है। इसलिए इसका अनुवाद इस तरह "How her face was terning turned pale." होना चाहिए। यह अनुवाद मूलभाव अुनवाद में व्यक्त करता है।

मन्नू जी ने शकुन के दूसरे विवाह के बाद बंटी के प्रति उसकी बदलती भावनाओं को व्यक्त किया है कि वह अपने विवाह के बाद से बंटी को लेकर अनुचित बाते सोचती है । कभी वह उसे अपने और अजय के बीच जोड़ने का

माध्यम बनाना चाहती है और कभी वह उसे अपने और डॉ0 के संबन्ध के बीच में बाधा महसूस करती है। वे लिखती हैं कि

[41]"बंटी उसके और अजय के बीच सेतू नहीं बन सका तो वह उसे अपने और डाक्टर के बीच बाधा भी नहीं बनने देगी ।" जयरतन ने इस वाक्य का अनुवाद कुछ इस तरह किया हैं। वे लिखते हैं कि

[42]"If Bunty would not form a bridge between herself and the doctor. she would not allow him to stand as an abstacle between them either." इस वाक्य के अनुवाद में जयरतन ने सेतु शब्द का अर्थगत अनुवाद Bridge किया है जबकि मन्नू भंडारी ने "सेतु" शब्द का प्रयोग बंटी के संदर्भ में किया है। इस "सेतु" शब्द में सूक्ष्म भाव निहित है कि बंटी शकुन और अजय के बीच पुनः सम्बंध स्थापित करने वाला व्यक्ति हो । प्राय: हिन्दी भाषा में "सेतु" के अन्य अर्थ भी प्रचलित है जिसमें "पूल बनाना, दो भिन्न वस्तुओं और सम्बन्ध को जोड़ना" आदि शामिल है लेकिन इस वाक्य में यह सारे अर्थ इस "सेतु" में नहीं समाते । इस वाक्य में "सेतु" शब्द का भाव हैं कि "दो लोगो के बीच पुनः सम्बन्ध जोड़ने वाला।" उपन्यास में वह व्यक्ति बंटी हैं जो शकुन और अजय के बीच सम्बंध जोड़ने वाला व्यक्ति है। इसलिए इस शब्द का अनुवाद "Bridge" नहीं होगा। इस वाक्य का भाव ग्रहण करके अनुवाद करना चाहिए । इसलिए इसका अनुवाद "Bond" होना चाहिए । जो मूलभाव (मानव के बीच संबध जोड़ने वाले) को अंग्रेजी में व्यक्त कर रहा है। इस अनुवाद में एक महत्वपूर्ण बात यह है कि "bond" "सेतु" के लिए उचित है। दूसरा इस हिन्दी भाषा में कभी उपपद स्पष्ट होते हैं और कभी स्पष्ट नहीं होते हैं। जबकि अंग्रेजी भाषा में उपपद स्पष्ट होते है। इस हिन्दी वाक्य में उपपद स्पष्ट नहीं है लेकिन अनुवादक ने (सेतु के साथ) भावानुसार "a"उपपद (a bond) जोड़कर वाक्य को सरल सहज और स्वाभाविक बनाया है, यह

---

[41] ("आपका बंटी" पृ0 -120)
[42] Bunty" page -112

वाक्य अंग्रेजी व्याकरण के नियमानुसार है। इस वाक्य के अगले अंश में शकुन बंटी को अपने और डाक्टर के बीच बाधा नहीं बनने देगी । "बनने देने के लिए" अंग्रेजी में "allow" से मूलभाव स्पष्ट नहीं हो रहा है क्योंकि "allow" का अर्थ होता है "सहमति देना।" उपन्यास में शकुन बंटी को न आने के लिए सहमति या आज्ञा नहीं दे रही है। "वह उसे बाधा नही बनने देगी।" इसके लिए "let him" ज्यादा सटीक लगता है जो मूलभाव को अंग्रेजी में व्यक्त करता है। इस वाक्य का अनुवाद इस तरह होना चाहिये।

"She would not let him to stand as an abstacle between them either." यह अनुवाद मूलभाव को व्यक्त कर रहा है।

जयरतन ने अनुवाद में प्रवाह बनाए रखने के लिए मूल वाक्य में कुछ जोड़कर अनुवाद किया है जो अनुवाद के भाव को बढ़ाने में सहायता करता है यद्यपि अनुवादक को अनुवाद में अपनी और से कुछ जोड़ने या घटाने की अनुमति होती है लेकिन इसकी भी एक निश्चित सीमा है क्योंकि इससे मूलभाव को हानि नहीं होनी चाहिए । जयरतन ने इस नियम को अनुगमन किया है। उन्होंने इस उपन्यास में जो कुछ भी जोड़ा है वह मूल वाक्य के वैभव को बढ़ाता है। लेखिका ने लिखा है कि [43]"ममी ने हीरालाल को बुलाकर कहा, हीरालाल आज हम कॉलेज नहीं आ पाएंगे । मिसेज कौशिक से कहना जरा देख लेगीं ।"इस वाक्य का अनुवाद उन्होंने इस तरह किया है

[44]"Mummy called Hiralal and said to him, "Hiralala today I won't be attending college. Tell Mrs Kaushik to managed thing in my absence." इस वाक्य के अनुवाद में उन्होंने मूल भाव को अभिव्यक्त किया है लेकिन मूलभाव लाने के लिए शब्द का प्रयोग सही नहीं किया है। मूल वाक्य में "आ" हिन्दी क्रिया शब्द "आना" से बना है जिसका अंग्रेजी शब्द "come" है जो आना के भाव को व्यक्त कर रहा है इसलिए इस वाक्य में

---

[43] आपका बंटी पृ0 -66
[44] Bunty page -61

"attending" वह अर्थ नहीं दे रहा जो मूलवाक्य में व्यक्त हुआ है क्योंकि मूलवाक्य में शकुन कालेज जाने में असमर्थ है जिसके पीछे शायद कोई कारण है। यह कारण "attending" से व्यक्त नहीं हो रहा है। इसलिए इसका अनुवाद भाव के आधार पर होना चाहिये। इस तरह से

"I won't be attending college के स्थान पर I will not be able to come to college" होना चाहिए । यह वाक्य मूल हिन्दी वाक्य की संरचना और भाव दोनों को व्यक्त कर रहा हैं। इस वाक्य के अगले पक्ष में अनुवादक ने मूल से अधिक अनुवाद किया जो अंग्रेजी वाक्य में प्रवाह ला रहा है। इस वाक्य के अगले अंश में "मिसेज कौशिक से कहना जरा देख लेगी" का अनुवाद "tell Mrs kaushik to manage thing in my absence."यह अनुवाद हिंदी वाक्य में व्यक्त हुये भाव को पकड़ रहा हैं कि शकुन कॉलेज जाने में असमर्थ है। कॉलेज न जाने का कारण हो सकता है। वह कॉलेज में नहीं है तो उसकी जगह कॉलेज का कार्यभार एक दिन के लिए मिसेस कौशिक उठा ले ,यह भाव अनुवाद में आया है।

इस प्रकार "आपका बंटी" का यह वाक्य देखा जा सकता है जिसके अनुवाद में वह मूलभाव व्यक्त करने में सफल हुये हैं लेकिन वे वाक्य में प्रयुक्त कुछ शब्दों के भावों को व्यक्त करने में चूक गये हैं। यह वाक्य मूल वाक्य के निकटतम अनुवाद का उदाहरण बन गया । लेखिका ने लिखा है कि वकील चाचा शकुन को समझाते हुए कहते हैं कि [45]"क्या बताए कुछ भी समझ में नहीं आता लगता है कि जब एक बार धुरी गड़बड़ा जाती है तो फिर जिन्दगी लड़खड़ा ही जाती हैं..... फिर कुछ नहीं होता कुछ भी नहीं होता....." का अनुवाद

---

[45] ("आपका बंटी" पृ0 -31)

[46]"I am really bewildered" , uncle said at last once something is out of gear life goes off the rail and there's no putting it back on. And that' s the end of it." किया गया हैं।

इस वाक्य के अनुवाद में "क्या बताए और लगता है" का अनुवाद नहीं हुआ । ये दोनों पदबंध मूलभाव की अभिव्यक्ति के लिए आवश्यक हैं। मूल हिन्दी वाक्य में जो तथ्य अभिव्यक्त हो रहे हैं। उसमें रहस्य है। वकील चाचा बहुत सोच-सोच कर बातें कर रहे हैं लेकिन अनुवाद से लगता है कि किसी गंभीर बात को सहज ढंग से व्यक्त किया जा रहा है। इसके बाद "धुरी" के लिए "gear" शब्द मूल अर्थ को व्यक्त नहीं करता । उपन्यास के इस वाक्य में जिन्दगी की "धुरी" बात हो रही न कि "मशीन वाली धुरी की।" इसलिए अनुवाद में "जिंदगी की धुरी" का भाव लाने के लिए "gear" के बजाय "axle" होना चाहिये। यह अनुवाद मूल वाक्य की अभिव्यक्ति मात्र लगता है। यह भाव का व्यक्त करने का सार्थक प्रयास नहीं लगता है मुझे लगता है कि इसका अनुवाद

"What to say I am in a plzze. It seems that once the axle of life is disturbed , life become unmanageable then nothing can be done."

होना चाहिए। यह अनुवाद मूल वाक्य के भाव को पदक्रमानुसार व्यक्त करता है।

कुल मिलाकर अपनी कुछ कमियों के बावजूद जयरतन का यह अनुवाद श्रेष्ठ है जो आपका बंटी की लयात्मकता को अनुवाद में बनाए रखता है। उनके अनुवाद का यह विशिष्ट यह है कि वे इसमे प्रवाह और प्रभाव दोनों गुण

एक साथ लाये हैं जो इसे अंग्रेजी पाठक वर्ग के निकट लेकर जाता है और वे इस उपन्यास को रुचिपूर्वक पढ़ने के लिए बाध्य होता है। किसी भी

[46] Bunty page -30

दृष्टिकोण से इस उपन्यास का अनुवाद अरुचिकर नहीं लगता । पाठक वर्ग जयरतन (अनुवाद) रूपी नौका में यात्रा करते हुए बंटी और समस्त मध्यमवर्गीय भारतीय परिवारों में रहने वाले बच्चों के संसार में प्रवेश करता है उनकी कथा –व्यथा से परिचित होता है। उनके बीच स्वंय को महसूस करता है।

अनुवाद का भाषिक विश्लेषण

अनुवाद का भाषिक विश्लेषण

"मन्नू भंडारी" भारतीय स्त्री साहित्यकार हैं। प्रत्येक साहित्यकार की अपनी भाषा होती है। यह बात साहित्यकार पर निर्भर करती है कि वह अपनी रचनाओं को किस तरह की भाषा के मोती में पिरोता है। इस दृष्टिकोण से जहां तक मन्नू जी की भाषा का प्रश्न है तो उनकी भाषा "साधारण भाषा" है। वे अपनी साहित्यिक रचनाओं के लिए "सरल,सुबोध,स्पष्ट और छोटे–छोटे वाक्यों" का प्रयोग करती हैं। जिससे पाठक वर्ग अधिक से अधिक उनसे जुड़ा हुआ महसूस करता है। यही कारण है कि उनका चर्चित उपन्यास "आपका बंटी" आज तक पाठक वर्ग पर अपना प्रभुत्व बनाए हुए हैं। इस उपन्यास के अब तक 25 संस्करण प्रकाशित हुये हैं। इसके साथ ही यह उपन्यास अनेक भारतीय भाषाओं जैसे कि "बंगला, कन्नड़, तमिल, गुजराती, मराठी" सहित (पश्चिमी भाषा) "अंग्रेजी" में अनूदित हो चुका है। उन्होंने इसमें स्त्री की विडंबना और बच्चे के मनोविज्ञान को व्यापक फलक दिया है। जिसकी वजह से यह पाठक वर्ग पर अपना प्रभुत्व बनाए रखता है।

इस उपन्यास की प्रासांगिकता ने जयरतन को "आपका बंटी" के अनुवाद के लिए प्रेरित किया । उन्होंने इसका "अंग्रेजी भाषा" में अनुवाद "Bunty"नाम से किया है। जिस तरह से मन्नू जी ने उपन्यास में अपने पात्रों की मानसिक स्थिति और संवेदना को व्यक्त करने के लिए "भाषिक विशेषताओं" (सुन्दर प्रतीक बिम्ब, व्यंग्यार्थ, मिथकीय और मुहावरों)का प्रयोग किया है। क्या अनुवादक भी इन्हें उसी तरह से अनुवाद में अभिव्यक्त कर सका है ? इस अध्याय में इसकी चर्चा की जाएगी।

मन्नू जी ने उपन्यास में सुन्दर प्रतीकों की योजना की है। वह प्रतीकों का प्रयोग पात्रों की संवेदना और मानसिक स्थिति को उजागर करने के लिए करती हैं। इसके लिए वह कभी बंटी और कभी शकुन को माध्यम के रूप में चुनती हैं। उन्होंने बंटी के संदर्भ में इस प्रतीक को व्यक्त किया है। उपन्यास में बंटी शकुन के विवाह के बाद की परिस्थितियों को समझ नहीं पाता। उसकी

मम्मी नये घर में रहने जाती है लेकिन वह नये घर में रहने के लिए नहीं जाना चाहता। वह अपने घर में रहना चाहता है पर उसे मम्मी के साथ नये घर में रहने के लिए जाना पड़ता है। उसके साथ समस्या नये घर में उत्पन्न होती है। वह नयी परिस्थिति में स्वयं को एडजेस्ट नहीं कर पाता। उसे लगता है कि परिवार में उसकी उपेक्षा हो रही हैं। उसे कोई प्यार नहीं करता है। उसकी मम्मी बदल गई है और एक दिन वह बिना बताए नये घर से अपने पुराने घर चला जाता है लेकिन उसे लेने कोई नही आता है। वह परेशान और दुखी होता है। लेखिका ने उसकी मनोदशा को इस तरह व्यक्त किया है। वे लिखती है कि-

[47]"पेड़ की एक सूखी टहनी उठाई और शटाक्–शटाक् मेंहदी को सूड़ना शुरू किया

अभी तक कोई नहीं आया

फूल पत्ते नोचने शुरू किए।"

यह वाक्य "बंटी की खीझ" को फूल और पत्ते के प्रतीक के माध्यम से व्यक्त करता है। इस वाक्य का अनुवाद जयरतन ने इस तरह किया है वे लिखते है कि [48]"He picked up the dry branch of a tree and started destroying the hena bushes." Still nobody come.

He started plucking flower." यह अनुवाद "आपका बंटी" के प्रतीक को व्यक्त नही करता है। यह केवल प्रतीक का आभास मात्र है क्योंकि वाक्य में प्रतीक को व्यक्त करने वाले शब्दों के लिए अंग्रेजी में शब्दों का चयन सही नहीं हुआ है, जैसेकि वाक्य में प्रयुक्त "सूखी टहनी" के लिए "the dry branch" का चयन उचित नही हुआ है क्योंकि जब अंग्रेजी भाषा में "सूखी टहनी" के लिए "twig" शब्द है, तो निकटतम अनुवाद करने की आवश्यकता क्या हैं? इस शब्द के प्रयोग से मूल शब्द द्वारा बन रहा वाक्य का बिम्ब स्पष्ट

---

[47] आपका बंटी पृष्ट– 174
[48] Bunty page -165

नहीं बन रहा है। इसके बाद वाक्य में व्यक्त "सूड़ना" के लिए "destroying"लिखा गया है। जो वाक्य में व्यक्त सूड़ना को अभिव्यक्त करने में असमर्थ है। हिन्दी भाषा में सूड़ना का अर्थ होता है कि किसी वस्तु को सूड़ना जैसे कि घोड़े को चाबुक से मारा या सूड़ा जाता है। उसी तरह से बंटी सूखी टहनी से मेंहदी को सूड़ रहा है। इस वाक्य में यह सूड़ना घोड़े को सूड़ने जैसा ही है और इसके साथ ही सूड़ते समय एक प्रकार की ध्वनि उत्पन्न होती है। यह दोनों बातें अंग्रेजी "destroying"शब्द में व्यक्त नही हो रही हैं इसलिए अंग्रेजी भाषा में ऐसा शब्द होना चाहिये जिससे मूल वाक्य में अभिव्यक्त भाव और ध्वनि की आवाज़ एक साथ अंग्रेजी अनुवाद में आ सके। अंग्रेजी भाषा में ऐसा शब्द "lashing" हैं। इस शब्द में यह दोनों भाव समाये हुये हैं। इसके बाद वाक्य में आये हुए "नोंचना" के लिए "plucking" नही लिखा जाता है क्योंकि इस शब्द का अर्थ "चुनना" होता हैं। जबकि मूल वाक्य में बंटी गुस्से में फूल-पत्ती नोच रहा है। इस नोंचना शब्द में उसका गुस्सा शामिल है इसलिए इसका अनुवाद गुस्से से नोंचना के अर्थ में होना चाहिये। यह "plucking" शब्द इस भाव को अभिव्यक्त करने में असफल है। इस शब्द के स्थान पर "plucking at"होना चाहिये। यह शब्द मूलवाक्य में व्यक्त भाव का स्पष्ट कर पा रहा है। इस पूरे वाक्य का अनुवाद इस तरह किया जाये तो ज्यादा उचित होगा। जैसे कि-

"He picked up a twing of a tree and started lashing against the hena bushes in angry.

Still nobody come

He started pluck at flower"

मन्नूजी ने दूसरा प्रतीक बंटी के सामान "रंग और ब्रश" छोड़कर जाने से बनाया है । बंटी अपने पापा के पास कलकत्ता जाना चाहता है। शकुन उसे नहीं रोकती। वह केवल यही सोचती है कि शायद वह डॉ0 जोशी के घर में खुश नही है और अपनी मर्जी से कलकत्ता जा रहा है इसलिए वह बंटी को

जाते समय देने के लिए "रंग और ब्रश" लेकर आती है। लेकिन बंटी जाते समय शकुन का दिया सारा सामान छोड़ जाता है। यह "रंग और ब्रश" बंटी के जीवन के उस हिस्से को छोड़कर जाने का प्रतीक हैं जो ममी के बिना अधूरा है। वे लिखती है कि-

[49]"वहां और कुछ नहीं तो कम से कम अपनी पेंटिग ही किया करेगा । पर अपने सारे रंग यही छोड़ गया।" इसका अनुवाद है:

[50]"Thinking that when the time hung heavy on the child he would divert his mind by painting, But he had left the colours and the brushes behind."

जयरतन ने अनुवाद में मूल प्रतीक को लाने का प्रयास किया है लेकिन उनका यह प्रयास निकटतम लगता है। उन्होंने अनुवाद में लिखा है कि

"He had left the colours and the brushes behind" यह अनुवाद मूलवाक्य के प्रतीक को तो व्यक्त करता है लेकिन "वहां और कुछ नहीं तो कम से कम अपनी पेंटिग ही किया करेगा" का अनुवाद"Thinking that when the time hung heavy on the child he would divert his mind by painting उचित नहीं किया है। यह अनुवाद मूलवाक्य से मेल नहीं रखता । यह अनुवाद केवल मूल वाक्य के भाव को व्यक्त करता है लेकिन उसके प्रतीक को व्यक्त नही करता है इसलिए इसका अनुवाद इस तरह होना चाहिये ।

"If nothing else, you would at least painting true." यह अनुवाद ज्यादा सटीक हैं।

मन्नूजी की भाषा में सुन्दर "बिम्बों" का प्रयोग हुआ है। जो उनकी भाषा और पात्रों की दशा को निखारते हैं। वे बिम्बों के द्वारा पात्रों की स्थिति को ऐसे ढंग से व्यक्त करती है कि पाठक को लगता है कि उस वस्तु के चित्र उभर कर सामने आ रहे हो। उपन्यास में शकुन बंटी का इस्तेमाल एक हथियार

---

[49] आपका बंटी पृष्ट–205
[50] Bunty page 195

के रूप में करना चाहती है। जिससे वह अजय को दुःख पहुंचा सके। उससे बदला ले सके। वे स्पष्ट लिखती हैं -

[51] "और तब एक अजीब सी भावना मन में आई-बंटी केवल उसका बेटा ही नहीं है वह हथियार भी है,जिससे वह अजय को टॉर्चर कर सकती है,करेगी।" उन्होंने इस वाक्य का अनुवाद इस तरह किया है कि

[52] "Then a strange thought crossed her mind . Bunty was more than a son to her. He was also a precious weapan with which she could torment Ajay."

उनका यह अनुवाद मूल वाक्य का भाव तो पकड़ता है लेकिन उन्होंने इस वाक्य में दो बातों पर ध्यान नहीं दिया है। सबसे पहली बात तो यह है कि हिन्दी वाक्य में "में आई" का अंग्रेजी में अनुवाद "crossed" के स्थान पर "come into" होना चाहिए क्योंकि उसके दिमाग में कोई बात आ रही है। यह अंग्रेजी शब्द वाक्य को आकर्षक और स्वभाविक बना रहा हैं। दूसरी बात यह है कि उन्होंने मूल वाक्य में प्रयुक्त "करेगी" का अनुवाद ही नहीं किया । उनका मूलवाक्य में व्यक्त बिम्ब को पकड़ने का प्रयास है लेकिन इन दोनों बातों पर ध्यान न देने के कारण समस्या से युक्त लगता है। यदि अनुवाद में इन बातों पर ध्यान दिया जाये तो मूलवाक्य का बिम्ब अधिक सटीक अनुवाद में आ पायेगा। इस वाक्स को इस तरह लिखा ता सकता है जैसे:

"Then a strange though come into crossed her mind. Bunty was more than a son to her. He was also a precious weapan with which she could teament Ajay." and she will ? यह मूल उपन्यास में व्यक्त बिम्ब को सार्थक कर रहा है।

लेखिका ने दूसरा बिम्ब बंटी के माध्यम से बनाया है। यह बात पहले ही बतायी जा चुकी है कि बंटी उसका केवल बेटा ही नही है। वह हथियार भी है

---

[51] आपका बंटी पृष्ट–47
[52] Bunty page 44

जिसके द्वारा वह अपने दुखों का बदला अजय से लेगी। सात साल के विवाहित जीवन में अजय ने दिन – प्रतिदिन शकुन को तोड़ा ही है। उसने दूसरा विवाह कर लिया है और अकेले जीवन बिताने की यातना से बच गया लेकिन शकुन क्या करे। वह अजय को पराजित करना चाहती है। वह उसे हराकर संतोष पाना चाहती है इसके लिए वह बंटी का इस्तेमाल उसे दुख पहुचाने के लिए करेगी। वह उसे कभी बंटी से मिलने नही देना चाहती है क्योंकि उसे बंटी से बेहद प्यार है। यदि वह बंटी से नही मिलेगा तो उसे दुख होगा और इस तरह वह अपनी पीड़ा का बदला अजय से लेगी। लेखिका ने बड़े मनोयोग से इन सब बातों को बिम्ब के जरिये इस तरह स्पष्ट किया है:

[53] "उसने झुक कर उसे एक बार प्यार किया उसके माथे पर बालो की लटें छितरा रहीं थी उन्हें समेट कर पीछे किया । लगा बंटी का शरीर एकदम ठंडा हो आया है। बाहर ठण्डक बहुत ज्यादा बढ़ चुकी थी, अपने में ही डूबे–डूबे उसे पता ही नहीं लगा। उसने जल्दी में बंटी को गोद में उठाकर साड़ी का पल्ला उसके चारों और लपेट दिया और उसे भीतर ले आई।" इसका अनुवाद

[54] "It was colder. She picked bunty in her arms and covred him with the end of her sari, and caried him in and put him in his own bed." है। जयरतन मूलवाक्य में व्यक्त बिम्ब के अनुवाद में सफल नहीं हैं। मन्नू जी ने जितने सुन्दर ढंग से बंटी के हथियार बनने (बंटी कैसे हथियार बन रहा है।) का बिम्ब बनाया है। अनुवादक का वाक्य (अनुवाद) उतना ही मूल बिम्ब से दूर है। इस वाक्य में व्यक्त समस्त भाव अनुवाद में नहीं आ पाये हैं। इसमें मूल वाक्य में व्यक्त अधिक से अधिक तथ्यों को छोड़ दिया है। इसका अनुवाद बिम्ब को व्यक्त करते हुए इस तरह होना चाहिए ।"She bent down, caressed him, and setled his hair. Bunty's body seemed numb with cold. Engrossed in herslef, she had not realised how cilly it

---

[53] आपका बंटी पृष्ट–47
[54] Bunty Page -44

had become outiside. She hurriedly picked up. Bunty in her arms, Covred him with her sari and brought him inside." यह अनुवाद मूल में व्यक्त चित्रात्मकता और सजीवता को आत्मसात कर रहा है इस अनुवाद को पढ़कर लगता है कि बंटी हथियार है जिसे शकुन अपने हितों की पूर्ति के लिए इस्तेमाल करेगी। पाठक की आंखो के सामने यह चित्र स्वंय स्पष्ट हो जाता है।

इस उपन्यास में लेखिका ने बंटी के माध्यम से सुन्दर व्यंग्य व्यक्त किये हैं क्योंकि व्यंग्य पाठक को उपन्यास पढ़ने के लिए उत्साहित करता है। इसके लिए वे बंटी के नादान व्यक्तित्व का प्रयोग करती है। बालमन की चंचलता इस व्यंग्य उत्पत्ति का कारण है। उपन्यास में वकील चाचा बंटी से पूछते है कि धूप में करोंदे तोड़ रहे हो तो बंटी के जवाब से पाठक के होंठो पर मुस्कान स्वयं बिखर आती है। उन्होंने इसे बेहद खूबसूरती से व्यक्त किया है।

[55]"क्यों रे , तू ऐसी भरी धूप में यहां करेंदे तोड़े रहा है।"

"धूप। कहां, मुझे तो नहीं लग रही" बंटी दुष्टता से हंस रहा है।

"हां, धूप कहां यह तो चांदनी है न? शैंतान कहीं का । शकुन घर में है या कालेज।" उन्होंने इस वाक्य का अनुवाद इस तरह किया है जैसे

[56]"Boy, what are you doing here in this hot sun? Plucking karondas?

"It is not? and I do not feel the sun," Bunty smile a mischicvous smile.

"I know you won't feel the sun. It's the moon you're basking under. Naughty boy! Is shakun in? or is she gone to college ?" उन्होंने इस वाक्य का निकटतम अनुवाद किया है। क्योंकि सटीक भाव लाने के

---

[55] आपका बंटी पृष्ट–21
[56] Bunty Page -22

लिए शब्दों का चयन उचित नहीं है। इस वाक्य में "करोंदा" का लिप्यतरंण अंग्रेजी भाषा में "karondas" किया हैं। यह ठीक नहीं है क्योंकि अंग्रेजी में करोंदा शब्द के लिए "sour berrier" शब्द हैं। जिसका अर्थ होता है "खट्टा फल" । इसी तरह वाक्य में "दुष्टता से हंसने" के लिए "mischievous smile" सटीक नहीं लगता क्योंकि बंटी स्वंय के लिए दुष्टता से हंस रहा है। यह भाव इस शब्द से अभिव्यक्त नही होता है। इसके लिए अंग्रेजी भाषा में "grinned mischievously" स्वंय में दुष्टता से हंसना का भाव संजोये है। यह मूलभाव को स्पष्ट करता है। इस वाक्य मे बंटी चाचा से कह रहा है कि उसे धूप नही लग रही है। जिसके लिए बंटी केवल "हाँ" कहता है। इसका अनुवाद नही हुआ । इसका अनुवाद सीधे "well" होना चाहिये। इसके साथ ही वाक्य में बंटी "चांदनी सेंक" रहा। अंग्रेजी में "धूप सेंकना" के लिए "basking under" का प्रयोग होता हैं। चांदनी सेंकना के लिए अंग्रेजी में "soaking in" शब्द है। तो अनुवादक ने पता नहीं क्यों चॉदनी सेंकना के लिए "basking under" लिखा है। जबकि अंग्रेजी में चॉदनी सेंकना के लिए शब्द है तो वही शब्द अुनवाद में लिखना चाहिये। उन्होंने मूलवाक्य का भाव अनुवाद में व्यक्त करने का भरसक प्रयास किया है पर वह अपने प्रयास में शब्दों के सही चयन आधार पर चूक गये हैं। यदि वे इस वाक्य का अनुवाद इस प्रकार करते तो मूल वाक्य में व्यक्त व्यंग्य अधिक सार्थक रूप में उभरता ।

"Boy, what are you doing here in this hot sun ? plucking sour berries ?"

"It is not? I do not feel the sun, bunty grinned mischievously.

Well, it is not the hot sun? It is the cool moonlight you are soaking in! Naughty boy! Is shakun in? or has she gone to college?" इस वाक्य के अनुवाद मे उन सभी कमियों को पूरा करने की कोशिश की है जिन्हे जयरतन ने अनुवाद में किया है। इसमें कुछ भी नया नहीं है लेकिन सही

शब्द का अंग्रेजी में चयन करके मूलवाक्य में व्यक्त व्यंग्य को पुष्ट रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास है।

लेखिका ने इस उपन्यास में एक अन्य व्यंग्य का सुन्दर विधान किया है। जिसके लिए वे बंटी के चंचल स्वभाव का प्रयोग करती हैं। बंटी छिप कर वकील चाचा और अपनी ममी की बात सुनने की कोशिश करता है लेकिन वह तो बच्चा है और उसे उनकी कुछ बातें बिल्कुल ही समझ में नही आती है। लेकिन वह सारी बातों को सुनकर उनका संदर्भ अपने अनुसार समझने का प्रयास करता है। उसकी इसी सोच को पढ़कर पाठक हंसी का ठहाका लगाता है। जिसे उन्होंने इस तरह लिखा है [57]"मीरा के साथ तो उसका खूब अच्छा हैं।

। यू नो शी इज....." अब बीच में पता नहीं यह किसकी बात घुसा दी । चाचा को कभी इम्तिहान देना हो तो एकदम अंडा। लिखना है कुछ और आप इधर–उधर का लिख रहे हैं।" उन्होंने इस वाक्य का अनुवाद ऐसे किया है।

[58]"He gets on well with meera, you know she is..... where had this meera suddenly cropped up from. If uncle had to take an exam. he would certainly flunk, A big zero for writing all sorts of irrelevancies."

अनुवादक ने मूल वाक्य के व्यंग्यभाव को अनुवाद में व्यक्त करने का प्रयास तो है लेकिन वाक्य संरचना और पदक्रम की दृष्टि से इसमें त्रुटि है। उनके अनुवाद को पढ़ने के बाद मूल व्यंग्यभाव तो स्पष्ट हो जाता है लेकिन कही कुछ अटकता है जैसेकि इस वाक्य की पहली पंक्ति का अनुवाद

"He gets on well with meera.you know she is" बढ़िया अनुवाद हुआ है लेकिन इसके बाद यह "शब्द स्तर" का अनुवाद लगता हैं। अनुवाद में मूल हिन्दी वाक्य की लयात्मकता और प्रवाहात्मकता नहीं आयी । बंटी स्वंय से

---

[57] आपका बंटी पृष्ट–31
[58] Bunty Page -29

बात करते हुये कहता है कि "वकील चाचा बातें करें पर ऐसी बात करे जो समझ में भी आये । बात करनी है कुछ और आप इधर – उधर की कर रहे हैं" इस वाक्य में जो सहजता है पदक्रम है वह अंग्रेजी अनुवाद में नही है। इस वाक्य में "लिखना है कुछ और आप इधर–उधर का लिख रहे हैं" का अनुवाद "for writing all sorts of irrelevancies" सही नही हुआ है क्योंकि irrelevancies का अर्थ होता है "असंगत" होने की स्थिति । इस अंग्रेजी वाक्य में "irrelevancie" मूलभाव को नहीं पकड़ा । इस वाक्य का अनुवाद इस तरह किया जा सकता है।

"He gets on well with meera you know she is....." God knows why he has to bring is something irrelevant while talking. If uncle had to take an exam. He would certainly get a big zero. Something is to be written and he write something else."यह वाक्य अनुवाद मूलवाक्य के व्यंग्य को सटीक व्यक्त कर पा रहा है।

मन्नू जी ने प्रस्तुत उपन्यास में फूफी और शकुन के माध्यम से मिथकीय (कहानियाँ) प्रस्तुत की है। बंटी रोज फूफी या फिर शकुन से लोकप्रिय मिथकीय कहानियाँ सुनता है। जिनका वास्तविक जीवन में कोई अस्तित्व नहीं है लेकिन समाज में इस तरह की कहानियाँ प्राय बच्चों को सुनायी जाती हैं। इस तरह अप्रत्यक्ष रूप में उनका प्रभुत्व बच्चों पर बना रहता हैं। बंटी ऐसी कहानियाँ सुन- सुन कर बड़ा हो रहा है। उसके अवचेतन मन में यह बात गहराई तक बैठ गई हैं। इसके लिए उन्होंने एक तो सोनल रानी का उदाहरण दिया है जो भूख लगने पर वेश बदलकर अपने ही बच्चों खा जाती हैं तो दूसरी और ऐसे- ऐसे राजकुमारों की कहानियाँ है जो अपनी माँ का दुख दूर करने के लिए कठिन से कठिन बाधा का सामना बहादुरी से करते हैं। उन्होंने (सोनल रानी, बंगाल की जादूगरनी बुलाकी राक्षस और राजकुमारों आदि) मिथकों के प्रयोग से उपन्यास के कथ्य को भरपूर रोचक बनाया हैं। उन्होंने बंगाल की जादूगरनी का मिथक शकुन के लिए करते हुए लिखा है कि

[59]"आधे अंधेरे आधे उजाले में बैठी कैसी लग रही हैं। ममी ? एकाएक मन में कौंधा–बंगाल की जादूगरनी । फूफी ने ही सुनाई थी कहानी या शायद पढ़ी थी। उसके आधे शरीर से अंधेरा फूटता था और आधे शरीर से उजाला।"

इस वाक्य का अनुवाद जयरतन ने इस तरह किया है।

[60]"Mummy was half in the light and half in darkness. A strange thought struck bunty's mind . Mummy looked like the sorcress of Bengal. Perhaps Phuphi had told him this story or may be the had read it in some book. Half her body sparked off light and the other half had darkness."

जयरतन ने इस वाक्य का अनुवाद उचित किया है लेकिन उन्होंने इस वाक्य का अंग्रेजी में सीधे–सीधे अनुवाद कर दिया । जिस तरह से मूल वाक्य में एक के बाद एक तथ्यों के अनुसार कथ्य आगे बढ़ता है। यह पदक्रम अनुवाद में नहीं आया है। जैसे कि हिन्दी वाक्य में लिखा है कि "ममी आधे अंधेरे और आधे उजाले में बैठी कैसी लग रही हैं" उन्होंने केवल इसका अनुवाद किया । यह वाक्य उपन्यास में हिन्दी संरचना के पदक्रम के अनुसार ठीक है लेकिन इसका अंग्रेजी अनुवाद कुछ अटपटा लगता है। उपन्यास में यह बात स्पष्ट नहीं है कि वह कहां बैठी है। जिसकी वजह से उनका आधा शरीर अंधेरे में है और आधा शरीर उजाले में है। यह बात वाक्य का संदर्भ देखकर–समझनी चाहिए और फिर उसका अनुवाद करना चाहिए इसलिए वाक्य का संदर्भ देख–समझ इसका अनुवाद करना चाहिए । दूसरा इस अनुवाद में "कैसी लग रही हैं" का अनुवाद नहीं हुआ हैं। भाषा में प्रवाह लाने के लिए "कैसी लग रही है" का अनुवाद करना आवश्यक है। तीसरा "शायद" के लिए "may be" लिखने की जरूरत नहीं है क्योंकि "he had read" में "शायद" का भाव आ गया हैं। इसका अनुवाद इस तरह होता तो ज्यादा बेहतर होता।

---

[59] आपका बंटी पृ0 -127
[60] Bunty page -119

"From where she sat, Mummy was covered half in light and half in darkness. How strange she looks, the thought struck bunty's mind. Mummy looked like the sarcress of Bengal. Perhaps Phuphi had told him this story or he had read it in some book. Half her body sparked off light and the other half shed darkness."

मन्नू जी ने दूसरा मिथक "बुलाकी राक्षस" का दिया है। बंटी फूफी से बुलाकी राक्षस की कहानी सुनता है। इस राक्षस की जान एक तोते की टांग में रहती है इसलिए वह इस राक्षस की जान की तुलना फूफी की जान से करने लगता है। "बुलाकी राक्षस" का मिथक बेहद दिलचस्प है क्योंकि इससे (बंटी) बच्चे की कोमल भावनांए जुड़ी हैं। जिन्हें वह छिपाता नहीं बल्कि उसे जैसा महसूस करता है वैसा वह स्पष्ट फूफी को बता देता है मन्नू जी ने इस मिथक को इस तरह से लिखा है।

[61] "बंटी कभी मज़ाक करता था–"फूफी,बुलाकी राक्षस की जान तोते की टांग में बसती थी, तेरी जान इस रसोई में बसती है।

तुझे किसी दिन मारना होगा न तो....." इसका अनुवाद उन्होंने इस तरह किया है। वे लिखते हैं कि

[62]"Sometimes Bunty teased her "Phuphi, you said that the life of that demon, Bulaki, resided in the leg of a parrot. Where does your life reside ? In the kitchen ? To kill you one has only to go to the kitchen and throw up the thing in confusion."

इस अनुवाद के लिए सबसे पहले जयरन जी की तारीफ़ करनी होगी कि उन्होंने यह अनुवाद भाव और व्याकरण के स्तर पर उन्नत किया है । उन्होंने बंटी के मजाक करने के लिए अंग्रेजी में "teased" शब्द का चयन सटीक किया है क्योंकि यहां पर मजाक के लिए "joking या humour" शब्द हो सकता था।

---

[61] आपका बंटी पृ0 -130
[62] Bunty page -122

लेकिन इन दोनो शब्दों में केवल मज़ाक का भाव आता । मूल वाक्य में बंटी जो मज़ाक कर रहा है उसमें फूफी को तंग करने का भाव शामिल है, इसलिए teased शब्द बढ़िया है। लेकिन इस अनुवाद में एक कमी है। वाक्य में "बुलाकी राक्षस" की जान बसना के लिए अंग्रेजी में "reside" हो सकता हैं पर फूफी की जान बसने के लिए "life reside" उचित नहीं लगता । इसके स्थान पर अनुवाद में "soul dwell" होना चाहिए क्योंकि "soul dwell" से फूफी की आत्मा या जीवन के बसने का बोध अधिक सार्थक हो रहा है लेकिन "life reside' से तो ऐसा लग रहा है किसी मकान में उनकी जान बस रही है। मूल हिन्दी वाक्य में यह भाव नहीं है। इसमें एक कमी यह है कि " इस रसोई में"का अनुवाद "in the kitchen"नही होगा। इस शब्द का अनुवाद "in this kitchen" होगा । वे इस वाक्य के अनुवाद में शब्द और भाव के दृष्टिकोण से सफल है लेकिन इस वाक्य को अंग्रेजी में इस तरह लिखा जाए तो भारतीय मिथक स्पष्ट उभर कर आ पायेगा ।

"Sometimes Bunty teased her, "phuphi, you said that the life of that demon, Bulaki , resided in the leg of a parrot. Where does your soul dwell ? in this kitchen ? To kill you one has only to go to the kitchen and throw up the things in confusion."

लेखिका ने सोनल रानी का मिथक शकुन के संदर्भ में किया है। बंटी फूफी से सोनल रानी की कहानी सुनता है। जो भूख लगने पर वेश बदलकर अपने ही बच्चों को खा जाती है। क्या इसी तरह शकुन भी वेश बदलकर बंटी को अपने और डॉ0 जोशी के सम्बन्ध के बीच में बाधा समझती है इसलिए वह उसे बंटी उसके पापा के साथ कलकत्ता भेज देती है । क्या वह सचमुच में सोनल रानी का रूप धर लेती हैं। [63]"फूफी वह कहानी सुनाओ तो सोनल रानी की जो सचमुच में डायन की और रानी बनकर रहती थी।" उन्होंने इसका अनुवाद इस तरह से किया हैं। [64]"Phuphi, tell me that story - the story

---

[63] आपका बंटी पृ0 -11
[64] Bunty page -11

of sunal rani. The one who was in reality a with but lived in the guise of a queen." उन्होंने इस वाक्य में व्यक्त मिथक का अनुवाद शब्द और अर्थ के अनुसार सही किया है। जिससे पाठक यह समझ जाता है कि सोनल रानी की कहानी उपन्यास के बीच में चल रही है और लेखिका का मंतव्य भी स्पष्ट होता है कि सोनल रानी का मिथक शकुन के संदर्भ में किया जा रहा है। यह अनुवाद प्रशंसा के योग्य, सटीक और सार्थक अनुवाद हुआ है। इस अनुवाद में न कुछ छूटा है न कुछ भाव के अनुसार अधिक जुड़ा है। इस अनुवाद में केवल एक बात समझ में नहीं आती कि सोनल का अनुवाद "Sunal" क्यों हुआ है? जबकि अंग्रेजी वर्तनी के अनुसार सोनल को "Sonal" लिखा जाना चाहिए क्योंकि हिन्दी ओ (ह्रस्व स्वर) को अंग्रेजी में "O"लिखा जाता है लेकिन जयरतन ने यह भूल की है या Sunal लिखने का कुछ और कारण है?

मुहावरे किसी भी भाषा की जान होते हैं। जिनका प्रयोग भाषा में सौंदर्य लाने के लिए होता है । मन्नू जी ने "आपका बंटी" उपन्यास में मुहावरों का खुलकर प्रयोग किया हैं जिससे उनकी भाषा का सौंदर्य निखरा है। वे पात्रों के रहस्य और कथ्य की सजीवता दोनों को मुहावरे के जरिये युक्त करती हैं। लेकिन मुहावरों का अनुवाद उतना सरल नहीं होता हैं जितना मूल भाषा में मुहावरों का प्रयोग होता है क्योंकि दो भाषाओं की व्याकरण, सरंचना, शब्द–अर्थ,संस्कृति,रहन–सहन और सामाजिक जीवन पंरपरा आदि सब अलग होते हैं। इन सभी तत्वों का प्रभाव मुहावरों पर पड़ता है इसलिए एक भाषा में व्यक्त मुहावरे का अनुवाद दूसरी भाषा में कर पाना थोड़ा कठिन है। इस संदर्भ में जयरतन को मुहावरों के अनुवाद में आंशिक सफलता मिली है। उन्होंने कहीं पर शब्द स्तर पर तो कही पर भाव स्तर पर मुहावरों का अनुवाद करने का प्रयास किया है। लेखिका ने उपन्यास के एक ही वाक्य में तीन या चार मुहावरों का प्रयोग एक साथ किया है। जिससे इन मुहावरों के अनुवाद में मूल लाक्षणिकता लाने की समस्या पैदा हो जाती है लेकिन इस तरह के वाक्यों मे

प्रयुक्त मुहावरों के अनवुाद में जयरतन ने धैर्य से काम लिया है जैसा कि इस वाक्य में लेखिका ने चार मुहावरों का प्रयोग किया हैः–

[65]"यू गट अप। जबान सभांलकर बात करों। जितना रहम खाओं उतना ही सिर पर चढ़े जा रहे हैं,जूते की नोंक पर ही ठीक रहते है ये लोग....." इस वाक्य का अनुवाद ऐसे किया गया है।

[66]"Shut up! A Papa cried. "You must know how to talk. the mare considerate I'm. The more uppish you become. People like you should be beaten with a shoe".

इस वाक्य में चार मुहावरे हैं। पहला मुहावरा है "जबान संभालकर बात करना" । इस मुहावरे का अनुवाद जयरतन ने You must know how to talk उचित नहीं किया । यह अनुवाद मूल मुहावरे के भाव को नहीं पकड़ रहा है। जबकि इस मुहावरे का अर्थ होता है कि "मर्यादा में रहकर बात करो।" इस अनुवाद से ऐसा प्रतीत होता है "तुम जानते हो कि तुम्हे कैसे बात करनी है।" यह अनुवाद मूल मुहावरे की आत्मा का हनन है । इस मुहावरे के लिए अंग्रेजी में "Mind you language" प्रचलित है। यह अनुवाद मूल मुहावरा के भाव को सटीक अभिव्यक्त करता है। इस वाक्य में दूसरा मुहावरा है "रहम खाओं" के लिए "the more considerate" का अनुवाद सही नही है। यह मुहावरा न तो भाव व्यक्त करता है और नही अर्थ व्यक्त करता है। इस मुहावरे "रहम खाओं"का अर्थ है कि "किसी पर दया करना।" जो कि अंग्रेजी अनुवाद 'the more considerate" से अभिव्यक्त नही होता । "रहम खाओं' के लिए अंग्रेजी में मूल भाव व्यक्त के लिए जीम " the mare pity' या दूसरा अन्य विकल्प हो सकता है। तीसरा मुहावरा वाक्य में "सिर पर चढ़ना" है। जिसका अनुवाद जयरतन ने "I'm th more uppish you become"किया है। उन्होंने इस मुहावरे के अनुवाद में "uppish" शब्द गढ़ लिया है। वास्तव में अंग्रेजी भाषा में इस शब्द का कोई अर्थ नहीं है। इस वाक्य में चौथा मुहावरा "जूते

---

[65] आपका बंटी पृ0 -57
[66] Bunty page -53

की नोंक पर रखना" है। इस मुहावरे का अनुवाद " people like you should be beaten with a shoe" मूल से एकदम भिन्न है । यह अनुवाद मुहावरे में व्यक्तभाव को अभिव्यक्त करता है लेकिन मुहावरे का सटीक अनुवाद नही है क्योंकि जूते की नोंक पर रखना और इस अनुवाद में व्यक्त भाव जूते से मारना दोनों में बहुत बड़ा अंतर है। यदि अंग्रेजी भाषा में इस मुहावरे के सापेक्ष मुहावरा नहीं है तो अनुवादक को इस मुहावरे का पूरा भाव पकड़कर अनुवाद करना चाहिए। इस मुहावरे का अंग्रेजी में इस तरह लिखा जा सकता है "A person the more demanding he becomes.We should keep them in there place."इस पूरे वाक्य का अनुवाद इस प्रकार से किया जा सकता हैं जैसेकि

"You shut up. A Papa cried mind your language the more pity you have for a person the more demanding becomes. We should keep them in there place."

उन्होंने उपन्यास में व्यक्त एक अन्य मुहावरे के अनुवाद में असतर्कता का परिचय दिया है । लेखिका ने जिस तरह से शकुन के कोर्ट जाने को मुहावरेदार भाषा से व्यक्त किया है कि शकुन तलाक लेने के लिए कचहरी चली जाती है। यह बात बंटी नही जानता है कि वह कहाँ जा रही है। वह फूफी से पूछता है कि मम्मी कहाँ गई है। लेखिका ने अपने लेखकीय कौशल का प्रयोग करते हुए फूफी से मुहावरेदार भाषा में इस वाक्य का अभिव्यक्त किया है कि [67]"गई है भाड़ झौंकने । बंटी अवाक् सा उसका मुंह देखता रह गया ।"

[68]"She's gone to hell

Bunty gaped at her and speechless."

---

[67] आपका बंटी पृ0 -67
[68] Bunty page -61

इस वाक्य में लेखिका ने दो मुहावरों का प्रयोग किया है। पहला मुहावरा है "भाड़ झोकना" और दूसरा मुहावरो "मुंह देखते रह जाना।" लेकिन अनुवादक ने इन दोनों मुहावरे का अनुवाद भाव को पकड़ कर किया है जो अंग्रेजी उपन्यास में संदर्भ के अनुसार सही नहीं जबकि ये दोनों मुहावरे अंग्रेजी भाषा में आसानी से उपलब्ध होते हैं। ऐसे में भाव को आत्मसात करके अनुवाद करने की क्या आवश्यकता थी । अनुवाद विज्ञान के अनुसार जब स्रोतभाषा के मुहावरे लक्ष्यभाषा में उपलब्ध नहीं हैं। उस स्थिति में मूल मुहावरे के भाव को आत्मसात करके लक्ष्यभाषा में अनुवाद करना चाहिये लेकिन इसलिए सबसे पहले उस लक्ष्यभाषा में उपलब्ध मुहावरे का प्रयोग करना चाहिये । इस वाक्य के पहले मुहावरे "भाड़ झोंकने" के लिए "hell" का प्रयोग मूल मुहावरे के साथ खिलवाड़ होगा। "भाड़ झोकने" का अर्थ होता है "बेकार का काम करना।" जबकि अंग्रेजी शब्द "hell" का अर्थ "नरक" और "नरक समान" होता है । इसलिए ये "hell" शब्द "भाड़ झोंकना" के मूल भाव को ग्रहण ही नही कर रहा है। यहां पर "hell" का प्रयोग अनुचित लगता है। इस मुहावरे के लिए अंग्रेजी भाषा में यह मुहावरा उपलब्ध "She has gone to do a worthless tast"हैं इसलिए वाक्य में इस मुहावरे का प्रयोग करना चाहिये। इस वाक्य का दूसरा मुहावरा "मुंह देखते रह जाना" का अनुवाद "specchless" किया है। यह अनुवाद मूल मुहावरे के भाव के नजदीक हैं लेकिन सटीक अनुवाद नहीं है जबकि अंग्रेजी में इस मुहावरे के लिए "to be taken aback or to look aghast प्रचलित है लेकिन इन दोनों मुहावरो में से "to be taken aback" हिन्दी मुहावरे का सटीक अनुवाद होगा। अतः इस वाक्य का अनुवाद इस तरह होना चाहिए :

"She has gone to do a worthless tast.

Bunty gaped at her and saw to be taken back."

ऐसा लगता है कि मुहावरों के अनुवाद में जयरतन ने अंग्रेजी भाषा में मुहावरे ढूँढने का प्रयास नहीं किया । यह उपन्यास हिन्दी में लिखा गया है

इसलिए लेखिका ने इसमें भारतीय मुहावरों का खुल कर प्रयोग किया लेकिन इसका अनुवाद अंग्रेजी पाठक वर्ग के लिए किया जा रहा है तो हिन्दी भाषा के मुहावरे को ज्यों का त्यों अंग्रेजी में लिखने का क्या अर्थ है। जबकि ये हिन्दी मुहावरे अंग्रेजी में उपलब्ध है। इन मुहावरों के अनुवाद में जयरतन का दृष्टिकोण भ्रमित करने वाला हैं। "आपका बंटी" उपन्यास में बंटी फूफी को नयी चीज सिखाना चाहता है लेकिन फूफी सीखने से इन्कार कर देती है । वे मुहावरेदार भाषा में बंटी से कहती है।

[69]"अब इस बूढ़े तोते के दिमाग में कुछ नहीं घुसता भैया, तुम काहे मगज मार रहे हो।" उन्होंने इसका अनुवाद इस तरह किया है जैसेकि

[70]"Bhaiya , this old parrot is not capable of learning anything. Why are you wasting your breath on me."

उन्होंने इस वाक्य के अनुवाद में हिन्दी मुहावरे को ज्यों का त्यें अंग्रेजी में लिख दिया । यदि अंग्रेजी पाठक हिन्दी भाषा का जानकार होगा तो वह इस मुहावरे का अर्थ तुरन्त समझ जायेगा कि "बूड़े तोते के दिमाग में कुछ नहीं घुसता" का हिन्दी में अर्थ "किसी वस्तु या बात को समझने में असमर्थ" होगा लेकिन हिन्दी भाषा से अनभिज्ञ अंग्रेजी पाठक के लिए "this old parrot is not capable of learning anyting." से इसका अर्थ समझना कठिन होगा जबकि इस मुहावरे के लिए अंग्रेजी भाषा में मुहावरा उपलब्ध है। अंग्रेजी में इस मुहावरे के लिए "Can you teach an old woman to dance" हैं। तो मूल मुहावरे का भाव ग्रहण करके अनुवाद करने की कोई आवश्यकता नही है। इस पूरे वाक्य का अनुवाद इस तरह किया जाये जो यह ज्यादा सटीक होगा। इस वाक्य को इस तरह लिखा जाये :–"Bhaiyya, this nothing can be taught to this woman to dance. why are you wasting your breath on me."यह अनुवाद ज्याद सही हैं।

---

[69] आपका बंटी पृ0 -92
[70] Bunty page -80

इन सब कमियों के बावजूद जयरतन को हिन्दी मुहावरे के अंग्रेजी अनुवाद में सफलता भी मिली है। उपन्यास में शकुन दूसरा विवाह करना चाहती है लेकिन फूफी शुरू से ही बंटी के भविष्य को लेकर चिंतित है। बंटी के पापा है पर वह पापा के साथ नहीं रहता । उसे हमेशा पापा की कमी महसूस होती है यह बात फूफी जानती है। इसलिए शकुन के दूसरे विवाह के प्रस्ताव से खिन्न होकर फूफी कहती है कि अब यह निर्दोष बच्चा ममी के रहते कहीं बिना ममी का न हो जाये। लेखिका ने इसे इस तरह से लिखा है कि

[71]"अब आप जो कर रही हैं बालक–बच्चा को लेकर , सो आपको शोभा देता है। बड़े आदमियों की बड़ी बात , मुँह पर कौन बोलेगा , और काहे बोलेगा ? पर फूफी तो मुँह पर बोलेगी।" उन्होंने इसका अनुवाद इस तरह से किया है कि

[72]"What are you doing to the child? Have you thought of it ? I know big people have big ways. Nobody can speak to them. And why should one? But Phuphi is different. She says what's on her mind without fear." इस वाक्य में एक मुहावरे को दो स्तर पर प्रयोग किया गया है। वाक्य में प्रयुक्त मूल मुहावरा "मुँह पर कहना" है लेकिन वाक्य में "मुँह पर कौन बोलेगा" और "मुँह पर कहना" दोनों स्तरों का इसका प्रयोग मिलता है। इन दोनों मुहावरों में एक सूक्ष्म अंतर है। यह अंतर लेखिका ने मूल वाक्य में व्यक्त किया है लेकिन अनुवाद में इस अंतर को स्पष्ट करना कठिन था इसलिए जयरतन ने मूल मुहावरे के अंग्रेजी अनुवाद को वाक्य में प्रयुक्त नहीं किया बल्कि भाव के आधार पर यह अंतर व्यक्त किया है। अंग्रेजी में "मुँह पर कहना" के लिए "to speak out one's face" है लेकिन समस्या हिन्दी मुहावरे के अंतर को स्पष्ट करने की थी इसलिए जयरतन ने मूल मुहावरे का अनुवाद भाव के आधार पर "मुँह पर कौन बोलेगा" के लिए "Nobody can speak to them" किया हैं। यह अनुवाद उचित है। इस वाक्य के दूसरे

---

[71] आपका बंटी पृ0 -128
[72] Bunty page -120

मुहावरे "मुँह पर बोलेगी" को पहले मुहावरे से भिन्न दिखाने के लिए अनुवादक ने भाव के आधार पर इसका अनुवाद "She says what's on her mind without fear" सटीक किया है। इसी तरह जयरतन ने आपका बंटी में आये इस मुहावरे का अनुवाद भी उचित किया है।

इसी तरह उपन्यास में लेखिका ने फूफी के माध्यम से "आप सौ जूता मारेगी तो हम तनिको चिन्ता नहीं करेगे" मुहावरे को व्यक्त किया है । जिसका अंग्रेजी में अनुवाद "If you beat me with a slipper I'll not flinch" सही हुआ है क्योंकि हिन्दी भाषा में सौ जूता मारना मुहावरा है लेकिन इसके लिए अंग्रेजी में मुहावरा नहीं है। अंग्रेजी भाषा में [73]"जूता मारना" के [74]"to hit by a shoe" मुहावरा है इसलिए जयरतन ने अपनी अनुवादकीय प्रतिभा का परिचय देते हुये इस अंग्रेजी मुहावरे में परिवर्तन कर दिया और एक नया मुहावरा गढ़ दिया जो हिन्दी मुहावरा "सौ जूता मारना" के भाव को अभिव्यक्त करता है लेकिन इस मुहावरे में "slipper" शब्द के स्थान पर "shoe" ज्यादा उपयुक्त होगा । इसके प्रयोग से मूल मुहावरे का भाव स्पष्ट उभर कर आयेगा । इसे "If you beat me with a shoe" लिखना ज्यादा सटीक लगता है।

"आपका बंटी" के अनुवाद का सबसे कमजोर पक्ष यह है कि जयरतन ने उपन्यास में व्यक्त मूल वाक्यों का अंग्रेजी में अनुवाद ही नहीं किया। जिसकी वजह से अनुवाद में भाव और सहजता की हानि हुई है। इन वाक्यों का अस्तित्व उपन्यास में तो बना रहता है लेकिन अनुवाद में ये वाक्य कहीं खो गये हैं जैसेकि उपन्यास के प्रथम अध्याय में बंटी सोचता है कि जब उसकी लड़ाई टीटू या कुन्नी से हो जाती है। तब वह कुछ देर बाद पुनः दोस्ती कर लेता है। इसी तरह क्या मम्मी और पापा की लड़ाई खत्म नहीं हो सकती । लेखिका ने बंटी के जरिये इस बात को इस तरह बयान किया है।

---

[73] आपका बंटी पृ0 -128
[74] Bunty page -120

[75]"अच्छा ममी को क्या कभी भी पापा की याद नहीं आती । वह तो टीटू या कुन्नी से अगर लड़ाई कर लेता है तो दो तीन–दिन तो बिना बोले रह लेता है अकेला–अकेला खेलता है, पर उसके बात तो ऐसा जी घबराने लगता है कि बोले बिना रहा ही नहीं जाता। कुछ न कुछ बहाना निकालकर फिर दोस्ती कर लेता है। अकेला–अकेला खेले भी कितने दिन तक आखिर ।

पर मम्मी तो हमेशा से ही अकेली रही है। तलाक में फिर दोस्ती हो ही नहीं सकती? किससे पूछे। कल टीटू से ही पूछेगा। टीटू अगर तलाक की बात जानता है तो तलाक की दोस्ती की बात भी जरूर जानता होगा।" अनुवादक ने इस पूरे अनुच्छेद का अंग्रेजी में अनुवाद ही नहीं किया । इसे अनुवादक की भूल कहा जाए या मूल उपन्यास के अनुवाद के साथ खिलवाड़ कहा जाए कि इस अनुच्छेद की रसानुभूति से अंग्रेजी पाठक वंचित रह गया ।

इस तरह के अनेक उदाहरण इस उपन्यास के अनुवाद में भरे पड़े हैं जिनका अनुवाद ही नहीं हुआ लेकिन ये वाक्य मूल उपन्यास में अपना विशेष स्थान रखते हैं लेकिन अंग्रेजी अनुवाद में इन वाक्यों का अस्तित्व ही नहीं हैं जैसेकि शकुन और बंटी नये घर में हैं। नये घर में माली आया है। शकुन माली को पुराने घर जैसा बगीचा नये घर में लगाने के लिए कहती है। इस संदर्भ में बंटी को उसका नये घर में आना अच्छा लगता है। उसे लगा कि माली के साथ उसका पुराना घर भी चला आया है। उसकी की भावनाएं माली के आने से ताजी हो जाती हैं और अधिक उभरकर आती है। लेखिका ने इन सारी बातों को इस अनुच्छेद में व्यक्त किया है। [76]"ममी अब तक बताती रहीं कि यहां क्या–क्या करना होगा । बंटी वैसे ही उसके हाथ पर झूलता रहा । जब माली जाने लगा तो उसे गेट तक छोड़ने गया ।

कल फिर आना माली दादा .....रोज़ आया करना।

---

[75] आपका बंटी पृ0 -21
[76] आपका बंटी पृ0 -160

और जब तक माली दिखता रहा , बंटी उधर ही देखता रहा।"यह अनुच्छेद अध्याय बारह का है। इस पूरे अनुच्छेद का अंग्रेजी में अनुवाद नहीं है। जबकि इस अनुच्छेद का अनुवाद होना चाहिये जो अंग्रेजी वाक्य में सहजता के लिए आवश्यक है।

जयरतन के अनूदित उपन्यास "बंटी" में कुछ भाषिक कमजोरियां होने के बावजूद यह अनुवाद मूल उपन्यास "आपका बंटी" की भाषाई इकाइयों को अनुवाद में उतार पाया है। इस उपन्यास का अनुवाद सफल हुआ है। इस अनुवाद को पढ़कर अंग्रेजी पाठक भारतीय लेखिका "मन्नू भंडारी" और "समस्त भारतीय परिवारों में तिल–तिलकर जीते अनेक बच्चों " खासकर "बंटी" की कथा से परिचित होता है क्योंकि लेखिका का मतंव्य केवल एक बंटी की कथा को व्यक्त करना नहीं है। उनका मतंव्य तो समस्त भारतीय परिवार के बच्चों की समस्या को व्यक्त करना है। जयरतन का अनुवाद इस बात को पूरी तरह से अभिव्यक्त करने में सफल हुआ है।

अध्याय चौथा

अनुवाद का सामाजिक विश्लेषण

अध्याय चौथा

अनुवाद का सामाजिक विश्लेषण

अनुवाद दो भाषाओं के बीच अभिव्यक्ति का माध्यम है । यह माध्यम केवल दो भाषाओं के बीच ही नहीं होता है। बल्कि दो भाषाओं की सामाजिक–सांस्कृतिक सरंचना के बीच भी होता है क्योंकि संसार की हर भाषा किसी विशिष्ट संस्कृति की वाहिका होती है जिसके निर्माण में उस भाषा के बोलने वालों की सामाजिक और भौगोलिक परिस्थितियों का हाथ होता है इसलिए प्रत्येक भाषा में ऐसे अनेक (सामाजिक सांस्कृतिक) शब्द होते हैं जिनके पीछे उनका ऐतिहासिक महत्व होता है। वे शब्द लम्बे समय से चली आ रही किसी ऐतिहासिक परंपरा से संबधित होते हैं। ऐसे सामाजिक सांस्कृतिक शब्दों के अनुवाद की सबसे बड़ी समस्या यह होती है कि इन शब्दों के पीछे निहित संस्कृति को अनुवाद में कैसे लाया जाये। क्योंकि एक भाषा की संस्कृति दूसरी भाषा से पूरी तरह भिन्न है। "आपका बंटी" के अंग्रेजी अनुवाद में जयरतन को इस दृष्टिकोण से किन–किन समस्याओं से जूझना पड़ा और उन्होंने इस समस्याओं का समाधन किस तरह किया है। इस अध्याय में इसकी चर्चा है।

मन्नू भंडारी ने "आपका बंटी" उपन्यास में भारतीय समाज की एक ऐसी समस्या को चित्रित किया है जिसका कहीं कोई हल नज़र नही आता । इसलिए उपन्यास में भारतीय सामाजिक तत्वों का होना लाज़मी है। लेकिन इन सामाजिक तत्वों के अंग्रेजी अनुवाद में जयरतन को आंशिक सफलता मिली है। इस दिशा में उनका प्रयास प्रशंसनीय जरूर है लेकिन कहीं वे इन शब्दों के अनुवाद में चूक गये हैं तो कहीं मूल शब्दों को सटीक अनुवाद में उतार पाये है। लेखिका ने जिस तरह पात्रों के माध्यम से भारतीय खान–पान का जिक्र उपन्यास में किया है। अनुवादक भी उसी तरह से इन वस्तुओं को अनुवाद में अभिव्यक्त करने का प्रयास करता है लेकिन वह इन खानपान की वस्तुओं को मूल जैसा अनुवाद में अभिव्यक्त नहीं कर पाया। लेखिका ने उपन्यास में फूफी

और शकुन के द्वारा लिखा है। [77]"चार बजे के करीब सब लोग चाय पीने यहीं आएगी । दही पकौड़ी और आलू की टिकिया तुम घर में बना लेना । चिवड़ा और मिठाई मैं चपरासी के हाथ भिजवा दूंगी।" इसका अनुवाद हैं कि [78]"They'll be coming for tea at four. Everthing should be ready by that time. I'll send sweets with peon."

जयरतन ने इस अनुवाद में "दही–पकौड़ी,आलू की टिकिया और चिवड़ा" का अनुवाद नहीं किया है और शेष सभी तथ्यों का अनुवाद किया है। ऐसा नहीं है कि इन खाने की चीजों का अंग्रेजी में अनुवाद नहीं किया जा सकता । हिन्दी उपन्यास की सहजता अनुवाद में बनाए रखने के लिए इन वस्तुओं का अनुवाद आवश्यक है। अनुवाद में केवल इन स्वादिष्ट भोज्य सामग्री के लिए "Everthing should be ready" लिखने से इन खाद्य सामाग्री का अर्थ स्पष्ट नहीं होता । इन भोज्य पदार्थो को अनुवाद में व्यक्त करने के दो स्तर हो सकते हैं । पहला स्तर यह है कि इन भोज्य पदार्थो का अंग्रेजी में लिप्यतरंण कर दिया जाये और संदर्भ देकर यह स्पष्ट किया जाये कि ये भारतीय खान–पान के अंग हैं या यह बताया जाये कि इन्हें किस तरह से बनाया जाता है। उदाहरण के लिए उन्होंने इस वाक्य में "दही पकौड़ी" का अनुवाद नहीं किया क्योंकि पकौड़ी को अंग्रेजी में स्पष्ट करना थोड़ा कठिन है। हिन्दी संस्कृति में पकौड़ी का महत्व विशेष अवसरों से लेकर रोजमर्रा के जीवन में है। पकौड़ी को बनाने के लिए दाल को भिगोया जाता है। उसके बाद पीस कर, गोल बनाकर, तला जाता है। यह प्रक्रिया लम्बी है इसलिए पूरी प्रक्रिया सहित अंग्रेजी में बताना कठिन था। इसे इस तरह लिखा जा सकता हैं "A dish prepared from doughnut like baras soaked in curds." इसी प्रकार आलू की टिकिया और चिवड़ा को अंग्रेजी में आसानी से लिखा जा सकता है। लेकिन उन्होंने इन वस्तुओं का भी अनुवाद नहीं किया। यह बात मेरे लिए समझना थोड़ा कठिन है क्योंकि अंग्रेजी में आलू की टिकिया और चिवड़ा को

---

[77] आपका बंटी पृ0 -80
[78] Bunty page -74

"Potato chips और perched rice" लिखा जाता है। इस तरह इन सभी भारतीय खाने की वस्तुओं का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद किया जा सकता है। दूसरी बात इस अनुवाद में "यहां" शब्द का अंग्रेजी में अनुवाद नहीं हुआ । यह शब्द मूल वाक्य में "आएगी" के साथ आया है। यदि अंग्रेजी में "यहां" के लिए here लिखा जाता तो बेहतर होता। इसका अनुवाद इस तरह किया जा सकता है।

"They'll be coming here for tea at four, make dahee pakoori and potato chips at home. I'll send sweets and prachaed rice with the peon." यह अनुवाद भारतीय खान–पान की वस्तुओं को उनकी संस्कृति के साथ अनुवाद में अभिव्यक्त कर रहा है।

इसी प्रकार जयरतन उपन्यास में अन्य खाने–पीने की वस्तुओं के अनुवाद में भी चूक गये हैं। जैसेकि "कांजी, हलवा और चाट" आदि। ये सारी वस्तुएं बंटी की खुशी से सम्बन्धित है। क्योंकि वह बहुत ही संवेदनशील बच्चा है। ये सभी तत्व उसके सुख और दुख को मूर्त करते हैं। जब उसके पापा कलकत्ता से आते हैं तो उसे "चाट और कांजी" खिलाते और पिलाते हैं। इसी तरह ममी बंटी के क्लास में फस्ट आने पर फूफी से "हलवा" बनवाती हैं। इन सब परिस्थितियों में बंटी बेहद खुश है। इसलिए इन वस्तुओं का अनुवाद अवश्य होना चाहिए। लेकिन अनुवादक ने केवल इन वस्तुओं का लिप्यतरंण अनुवाद में किया है जैसे कि – "kanji,halwa और chaat"किया है।

जो उचित नही लगता है। यदि उन्होंने इन शब्दों का लिप्यतंरण किया है तो उन्हें संदर्भ में इन्हें स्पष्ट भी करना चाहिये ताकि पाठक उन शब्दों के अर्थ को भली भांति समझ सकें। क्योंकि ये भोज्य पदार्थ भारतीयों द्वारा विशेष अवसरों पर पकाये एवं ग्रहण किये जाते है। यद्यपि इन शब्दों का अंग्रेजी में सीधे अनुवाद भी किया जा सकता है। मूल उपन्यास में व्यक्त इन खाने–पीने की वस्तुओं का अंग्रेजी में लिप्यतरंण कर दिया जाये और संदर्भ में इन्हें स्पष्ट कर दिया जायें। तो यह तरीका ज्यादा उपयुक्त होगा। जैसकि "कांजी (Sour

juice of carrotes), चाट (Fruit salad) और हलवा (pudding like sweet meat)।" इस तरह संदर्भ मे लिखने पर इन भारतीय व्यंजनों का अस्तित्व और उनकी संस्कृति अनुवाद में रहती है और जिससे कि अनुवाद में मूल सहजता भी बनी रहती है।

मन्नू भंडारी ने इस उपन्यास में भारतीय स्त्री के सौंदर्य को निखारने और सौभाग्यशाली बनाने वाले साधनों का प्रयोग किया है। उपन्यास की नायिका शकुन पुनः विवाह के बाद से अपनी मांग में सिंदूर लगाती है। यह सिंदूर उसके विवाहित होने का प्रतीक है क्योंकि भारतीय समाज में विवाहित स्त्री सिंदूर लगाती है। लेखिका ने लिखा है [79]"मांग का सिंदूर चमकता रहता है" इसका अनुवाद जयरतन ने [80]"the sindur in the parting of her hair glowed." किया है। उन्होंने "सिंदूर" का लिप्यतरंण अंग्रेजी में किया है। यह उनकी सबसे बड़ी भूल है कि उन्होंने संदर्भ में "सिंदूर" का अर्थ स्पष्ट नहीं किया है। जबकि भारतीय समाज में सिंदूर का विशेष महत्व है। इस अनुचित तरीके से बचने के लिए उचित यह होता कि जयरतन अनुवाद में "सिंदूर" के लिए सीधे "Vermilion" लिख सकते थे । जिससे कि अंग्रेजी पाठक "सिंदूर" का अर्थ तुरन्त समझ जाता । इसके बाद वाक्य में "चमकना" के Glowed शब्द सही नहीं है। यह शब्द "सिंदूर का चमकना" के भाव को अंग्रेजी में व्यक्त नहीं कर पा रहा है क्योंकि अंग्रेजी में "सिंदूर चमकना" का भाव Gleaming से आ रहा है। मुझे लगता है कि इस वाक्य को अंग्रेजी मे इस तरह लिखा जा सकता है। "The Vermilion in the parting of her hair gleaming" होना चाहिये।

इसी तरह लेखिका ने उपन्यास में शकुन के सौन्दर्य को 'भारतीय संस्कृति में सुहाग' के प्रतीकों के माध्यमों से भी अभिव्यक्त किया है। वे शकुन की "बिंदी" "ढीली–ढीली" चोटी और "जुड़े में गजरा" लगाना को इस संदर्भ में प्रयुक्त करती है। ये उपन्यास में आये केवल शब्द नहीं है इन शब्दों की

---

[79] आपका बंटी पृ0 -134
[80] Bunty page -125

अपनी विशेष संस्कृति है। ये सभी वस्तुएं एक स्त्री के सौभाग्य और वैभव का प्रतीक है। लेकिन अनुवादक ने इन शब्दों का अनुवाद अंग्रेजी में अनुवाद मूल से अलग किया है। लेखिका ने उपन्यास में शकुन के 'बिन्दी' लगाने को भारतीय परिप्रेक्ष्य में व्यक्त किया है। कि एक भारतीय स्त्री (शकुन) अपने माथे पर "बिंदी" लगाती है। लेकिन जयरतन ने अंग्रेजी अनुवाद में मूल भाव लाने के लिए "बिंदी" का लिप्यतरंण किया है। अनुवाद का यह प्रयास उचित हैं लेकिन यदि वे संदर्भ में "बिंदी" को स्पष्ट करते तो अनुवाद ज्यादा सटीक होता क्योंकि अंग्रेजी पाठक "बिंदी" का अर्थ बिना संदर्भ (note) के नहीं समझ सकता । इसलिए इसे संदर्भ में इस तरह लिखा जा सकता है। जैसेकि (Make a dot on her forehead by used different colours.)

यह संदर्भ पाठक को मूल "बिंदी" के भारतीय सांस्कृतिक परिवेश से परिचित कर देता है। इसके बाद "ढीली–ढीली चोटी" का अनुवाद "hair Loose" किया है। यह अनुवाद मूलभाव को तो पकड़ रहा है पर हिन्दी शब्द चोटी को अभिव्यक्त नहीं करता । जबकि अंग्रेजी में "चोटी" को सीधे -सीधे "Plait" कहा जाता है। इसलिए इस वाक्य का अंग्रेजी में अनुवाद "Loose plait" किया जाना चाहिये। यह अनुवाद ज्यादा सटीक लगता है। यह स्त्री की "चोटी" को सटीक अनुवाद में ला पा रहा है। इसके बाद शकुन के "गजरे" को इस तरह लिखा गया है। "उनका जूड़े का गजरा चमक रहा था।" जिसे अंग्रेजी में जयरतन ने इस तरह लिखा है। "Only the flower in her hair" लिखा है । यह अनुवाद केवल मूल वाक्य के भाव को पकड़ता है कि बालों में कुछ होने का आभास मात्र है लेकिन इस वाक्य में हिन्दी शब्द "जूड़ा" "गजरा" और "चमकना" आदि शब्द अंग्रेजी में स्पष्ट नहीं हैं। जबकि अंग्रेजी भाषा में जूड़ा -Bun ,गजरा -a garland of flowers और चमकना - Shining लिखा जाता है। यदि अनुवाद में इन शब्दों को प्रयुक्त किया जाये तो मूल हिन्दी वाक्य के समस्त सांस्कृतिक शब्द अनुवाद में आ पायेंगे और इस तरह उनका अर्थ भी अनुवाद में बना रहेगा। इस वाक्य को अंग्रेजी में इस तरह लिखा जा सकता है। "A garland of flowers was shining in her

bun."यह वाक्य मूल के समस्त सांस्कृतिक शब्दों को अंग्रेजी में व्यक्त कर रहा है।

[81]उपन्यास के बीच में लेखिका ने शकुन के सौन्दर्य को आकर्षित बनाने के लिए फूलों का सुन्दर विधान किया है। वे बंटी के माध्यम से शकुन के लिए फूलों का चयन करती हैं। वे लिखती है कि "गुलाबी साड़ी के साथ गहरे रंग वाला गुलाब का फूल तो बहुत ही सुन्दर लगेगा पर वह नहीं लगाएगा"। जिसका अनुवाद उन्होने इस तरह किया है। [82]"red rose would go so well with a red sari. But he woud not bring her."

जयरतन ने इस वाक्य के अनुवाद में "गहरे रंग वाला गुलाब का फूल" के लिए "red rose" लिखा है इसलिए उन्हें अंग्रेजी में "red rose" के साथ हिन्दी शब्द "गुलाबी साड़ी" को "red sari" लिखना पड़ा। यदि वे "गुलाबी साड़ी" का अनुवाद "pink sari" करते तो उन्हें "गहरे रंग वाला गुलाब का फूल" के लिए "dark pink rose" करना पड़ता जो अंग्रेजी भाषा में सम्भव नहीं है इसलिए उन्होंने इस "गहरे रंग वाला गुलाब का फूल" का अर्थ "red rose" लगाया है और "साड़ी का रंग" "red sari" किया हैं क्योंकि एक जगह पर "red rose" और दूसरी जगह पर "dark pink sara" अनुवाद में सहज नहीं लगता इसलिए उन्होंने इस समस्या से बचने के लिए दोनों जगहों पर "red rose और red sari" अनुवाद किया है जो कि भाव के स्तर पर सही अनुवाद है।

"आपका बंटी" उपन्यास की विशिष्टता यह है कि इसमें भारतीय संस्कृति के शब्दों को अनेक स्तरों पर अभिव्यक्त किया गया है। इसके लिए भारतीय साधु-संतो के इस्तेमाल की वस्तुओं का चयन किया है। ये वस्तुएं निरन्तर आदि काल से साधुओं और संतो के द्वारा इस्तेमाल होती है इसलिए इन वस्तुओं का नाम आते ही हिन्दी पाठक तुरन्त इन शब्दों का समझ जाता है कि ये साधुओं की संस्कृति से सम्बन्धित वस्तुएं है। लेकिन उपन्यास में इन वस्तुओं जिनमें

---

[81] आपका बंटी पृ0 -106
[82] Bunty page -99

(सफ़ेद जटा, खड़ाऊ और कमंडल आदि शब्द शामिल है)का अंग्रेजी में अनुवाद करना उतना सरल नहीं है। मन्नू जी ने उपन्यास में साधु की कल्पना को सार्थक करते हुए लिखा है।

[83]"सफेद दाढ़ी, सफेद जटा, खडाऊं, कमण्डल ..... एक साधु उसके पास खड़े है।''इसका अनुवाद इस तरह किया गया है। [84]"Grey moustache, grey hair, wooden sandal, a kamandal. A sadhu was standing by his side''

इस अनुवाद में जयरतन ने "सफ़ेद" के लिए "grey" शब्द का चयन सही किया है क्योंकि हम हिन्दी भाषा में बूढ़े व्यक्ति की दाढ़ी के लिए "सफेद दाढ़ी" कह सकते है लेकिन अंग्रेजी में "सफ़ेद" (दाढ़ी) को "white" नहीं कहा जा सकता है। क्योंकि "दाढ़ी" में कुछ भूरे बाल अवश्य होते है। इसलिए अंग्रेजी में सफ़ेद बालों में भूरापन दर्शाने के लिए हमेशा "grey" लिखा जाता है। यह "grey" शब्द का चयन उपयुक्त है। पर इस वाक्य के अनुवाद में "दाढ़ी" के लिए "Moustache" शब्द उपयुक्त नही है। अंग्रेजी शब्द "Moustache" का अर्थ "मूंछ" होता है जबकि उपन्यास में साधु की "दाढ़ी" के बारे में बात की जा रही है। इसलिए इस अंग्रेजी शब्द "Moustache" के स्थान पर "दाढ़ी" के लिए "beard" होना चाहिए । इस वाक्य में दूसरा शब्द "सफेद जटा" है। हिन्दी शब्द "सफ़ेद जटा" के लिए "grey hair" अनुवाद में किया गया है। लेकिन इस शब्द के अनुवाद की समस्या यह है कि यह "grey hair" मूल शब्द "सफेद जटा" का केवल भाव स्पष्ट करता हैं लेकिन इससे "जटा" का अर्थ स्पष्ट नहीं होता है। जबकि भारतीय साधु की "जटा" के भीतर बाल उलझ होते हैं। जिससे उनकी लटें बन जाती है। इसलिए सफेद "जटा" के लिए "matted hair" होना चाहिये । इसके बाद वाक्य के तीसरे शब्द "खड़ाऊ" के लिए "wooden sandal" अनुवाद सही है। लेकिन चौथे शब्द "कमण्डल" को अंग्रेजी में "kamandal" लिखा है। यदि "कमण्डल" शब्द

---

[83] आपका बंटी पृ0 -226
[84] Bunty page -215

अंग्रेजी भाषा में उपलब्ध नहीं है और "कमण्डल" का लिप्यतरंण किया गया है। तो संदर्भ में "कमण्डल" का अर्थ स्पष्ट करना चाहिये । जिससे कि पाठक "कमण्डल" शब्द के वास्तविक अर्थ और उसकी संस्कृति से परिचित हो सके इसलिए "कमण्डल को संदर्भ में इस प्रकार लिखा जा सकता है। "kamandal" (wooden water used by asceties)

लेखिका ने इस उपन्यास में भारतीय समाज में होने वाली पूजा–अर्चना के कर्म को फूकी के माध्यम से अभिव्यक्त किया है । उपन्यास में फूफी "तुलसी जी और भगवान हनुमान जी" की पूजा करती है। यह पूजा- अर्चना केवल फूफी का दैनिक कर्म नहीं है। यह तो सम्पूर्ण भारतीय समाज मे होने वाली उस पूजा पाठ का प्रतीक है जिसमें उनका विश्वास रहता है। इसी के साथ वे बंटी को रोज़ (राजा–रानी , भूत जादूगर, राक्षस) न जाने कितनी ही मनगढ़ंत कहानियाँ सुनाती है। यह सभी कहानियाँ मिथकीय है। वास्तविक जीवन में इन कहानियों का कोई अस्तित्व नहीं हैं। लेकिन भारतीय समाज में इन सभी वस्तुओं का अपना स्थान है क्योंकि इस तरह की कहानियाँ आमतौर पर भारतीय घरों में बच्चों को सुनायी जाती है। लेखिका ने इन शब्दों को उपन्यास में इस तरह लिखा है।

[85]"पर इस धर से जा सकती है फूफी ? उसका तुलसी का चबूतरा, तार के एक कोने पर सूखती मटमैली सी धोती और चोंगे जैसा ब्लाउज। आंगन की दीवार में बनी ताक पर रखे सिंदूर से रंगे पुते उसके हनुमानजी..... उसके सरोंते की खटखट उसके पसीने की गंध उसके बेसुरे गले से निकली गीत की कड़ियाँ..... उसकी कहानियों के राजा–रानी भूत–प्रेत , जादूगर –राक्षस।''इस अनुच्छेद का अनुवाद जयरतन ने इस तरह किया है।

[86]"How could phuphi have the heart to leave him? The tulsi platform, the clothes-line from which hung her off white sari and air blown blouse, the image of ochre washed hanuman resting in the

---

[85] आपका बंटी पृ० -132
[86] Bunty page -123

alcove the staccato sound of the betelnut clippers, the echo of her unmusical singing lines and the memory of the adour from her heaving body, the king, queen witches and demons of her fairy tales.''

जयरतन इस अनुच्छेद में व्यक्त समस्त भारतीय सामाजिक तत्वों को सटीक अनुवाद में नहीं ला पाये हैं। इस दृष्टि से उन्हे आंशिक सफलता मिली है। जैसे कि उन्होंने "तुलसी का चबूतरा" का अंग्रेजी अनुवाद Tulsi platform, "उसके पसीने की गंध" को अंग्रेजी में the memory of the odour from her heaving body और "उसकी कहानियों के राजा–रानी, भूत–प्रेत, जादूगर–राक्षस" को the king , queen, wictches and demons of her fairy tales आदि का अनुवाद सटीक किया है। इन शब्दों के अनुवाद में जयरतन सफल हुये है लेकिन वे इस अनुच्छेद में व्यक्त कुछ शब्दों के अनुवाद में असफल भी हुये हैं। इस अनूच्छेद के सबसे पहले वाक्य में उनकी गलती यह है कि उन्होंने "तार के एक कोने पर सूखती मटमैली सी धोती और चोगे जैसा ब्लाउज" का (the clothes-line from which hung her off white sari and air blown blouse) अनुवाद गड़बड़ किया है। लेखिका ने हिन्दी वाक्य में "धोती" पर फोकस किया है क्योंकि तार पर "धोती" सूख रही है इसलिए वाक्य में "धोती" मुख्य है। यदि वाक्य में "धोती" नहीं होती तो "तार" का क्या महत्व होता। जबकि अनुवादक ने अंग्रेजी वाक्य में फोकस (तार) clothescline पर किया है। यह समस्या "अनुवाद विज्ञान" के अनुसार "discord level" पर है। इस समस्या का समाधान अनुवाद (अंग्रेजी भाषा) में मूल उपन्यास की "धोती" को फोकस करके किया जा सकता है। इस वाक्य में दूसरी गलती यह है कि "मटमैली" के लिए अंग्रेजी में "off white" लिखा है यह शब्द हिन्दी में व्यक्त "मटमैली" का भाव नहीं पकड़ता है। क्योंकि "off white" का अर्थ होता है "कम सफ़ेद या हल्का पीला सफ़ेद।" यह "कम सफेद" रंग सभी रंगो को बनाते समय अलग से बनाया जाता है। लेकिन हिन्दी शब्द "मटमैला" का अर्थ होता है कुछ दिनों के प्रयोग के बाद स्वंय गंदा या

मिट्टी जैसा होना । इसलिए इस अंग्रेजी वाक्य में "मटमैली" के लिए "discoloured" होना चाहिए। यह अंग्रेजी शब्द हिन्दी के "मटमैली" के भाव को ग्रहण करता है। इस पूरे वाक्य का अनुवाद इस तरह होना चाहिये। "discoloured sari hung at the end of clothes line from drying." और "चोंगे जैसा ब्लाउज" का अंगेजी अनुवाद "air blown blouse" उचित नहीं किया । हिन्दी भाषा में "चोंगे" का अर्थ होता है-"घुटनों तक लम्बा कपड़ा।" "ब्लाउज" का अर्थ होता हैं—"स्त्रियों का उपरी तंग वस्त्र" इसलिए "चोंगे जैसे वस्त्र" का मूल अर्थ होता है "ढीला–ढीला लम्बा कुर्ता या कमीज।'' जयरतन का अनुवाद "air blown blouse" इस हिन्दी भाषा में व्यक्त भाव को नहीं पकड़ता । चोंगे जैसा ब्लाउज का अनुवाद "loose fitting long shirt" शब्द के भाव को अधिक पकड़ रहा है।

जयरतन ने इस अनुच्छेद के दूसरे वाक्य में "आँगन की दीवार में बनी ताक पर रखे सिंदूर से रंगे–पूते उसके हनुमानजी" का अंग्रेजी अनुवाद "the image of the orhre- washed Hanuman resting in the alcove." सही नही किया है । मूलवाक्य में हनुमान जी का जिक्र हुआ हैं। उनकी प्रतिमा का जिक्र कहीं नहीं हुआ इसलिए अंग्रेजी में हनुमान जी के लिए "image" शब्द प्रयुक्त नहीं है। इस अंग्रेजी शब्द "image" का अर्थ है.... प्रतिमा,प्रतिरूप या प्रतिबिंब। इसलिए यह "image" शब्द हनुमान जी के होने को अभिव्यक्त नहीं करता है। अनुवाद में हनुमान जी के लिए "image" के स्थान पर "stormfigure" होना चाहिए । इस शब्द के प्रयोग से लगता है कि हनुमान का बिम्ब निर्धारित है। इसके बाद मूलवाक्य में "आंगन की दीवार में बनी ताक" के लिए अंग्रेजी शब्द "alcove" का चयन सटीक है। इस शब्द से बेहतर शब्द "आंगन की दीवार में बनी ताक" के लिए नहीं हो सकता । लेकिन उन्होंने सिंदूर का अनुवाद "ochre" उचित नहीं किया है। क्योंकि अंग्रेजी शब्द "ochre" का अर्थ होता है "दीवार रंगने की मिट्टी और गेरू।" बेचारी फूफी के हनुमानजी "सिंदूर" लगे हुये हैं लेकिन अनुवादक ने जबरदस्ती अनुवाद में हनुमान जी को (ochre) "गेरू" से रंग दिया है। यह अनुवाद मूल शब्द के

साथ छेड़छाड़ है। जबकि अंग्रेजी भाषा में "सिंदूर" को "Vermilion" कहा जाता है इसलिए अनुवाद में "ochre" नहीं होना चाहिए। इसके बाद अनुवादक ने रंगे–पुते के लिए "washed" लिखा है। जबकि "washed" का अर्थ "सफ़ाई या धुलाई"होता है। इसकी वजह से हिन्दी शब्द "रंगे–पुते" का भाव अनुवाद में "washed" से नहीं आया । अनुवाद को पढ़कर लगता है कि हनुमान जी गेरू से नहाए–धोए हैं। अंग्रेजी में "रंगे–पूते" का भाव लाने के लिए "Smeared" का प्रयोग किया जाना चाहिए क्योंकि "smeared" का अर्थ ही होता है "पुता होना।" इस वाक्य के अनुवाद में उनकी सबसे बड़ी भूल यह है कि उन्होंने हनुमान जी को "ताक" पर रखने (रखे) के लिए अंग्रेजी में "resting" लिखा है । अनुवाद में "resting" शब्द पढ़कर लगता है कि हनुमान "ताक" पर रखे नहीं हैं बल्कि "ताक" पर आराम कर रहे हैं। जबकि मूलवाक्य में हनूमान जी के लिए (रखे) में "रखना" का भाव हैं इसलिए अनुवाद में भी "रखना" का भाव होना चाहिये। इसके लिए अनुवाद में "kept" लिखा जाना चाहिए । मुझे लगता है कि जयरतन के अनुवाद में से इन त्रुटियों को दूर किया जाए तो मूल हिन्दी वाक्य के भाव को अनुवाद में लाया जा सकता है । यदि इस तरह वाक्य को इस तरह लिखा जाये तो ज्यादा उपयुक्त होगा।

"strom figure of God Hanuman smeared with vermilion kept on alcove" यह अनुवाद मूल भाव की रक्षा करता है।

इस अनुच्छेद के बाद "उसके सरोते की खटखट" का अनुवाद "the staccato sound of the betelnut clippers" हुआ है । इस अनुवाद में "the staccato sound" मूल शब्द सरोंते की खटखट को व्यक्त करता है लेकिन "सुपारी काटना" के लिए अंग्रेजी में "clippers" नहीं होता । अंग्रेजी शब्द "clippers" का अर्थ "काटना" होता है। इस शब्द "clippers" का प्रयोग "टिकट में छेद करना या किसी वस्तु में चिह्न लगाने" के लिए होता है। लेकिन "सुपारी काटना" के लिए अंग्रेजी में "Betelnut cracker" शब्द चलता है।

इस अनुच्छेद के अंतिम वाक्य में अनुवादक ने बिल्कुल ही औपचारिक अनुवाद किया है । उन्होंने मूल वाक्य "उसके बेसुरे गले से निकली गीत की कड़िया।" का अनुवाद "the echo of her unmusical singining line" किया है। इस वाक्य का मूलभाव "unmusical" से स्पष्ट नहीं होता क्योंकि "उसके बेसुरे के गले से निकली गीत की कड़ियाँ" के लिए अंग्रेजी शब्द "unmusical" बेहद सटीक नही है। यह शब्द को तो स्पष्ट करता है लेकिन सही अर्थ व्यक्त नही करता है क्योंकि हिन्दी में "बेसुरे" का अर्थ होता है— "कान को खलने वाले आवाज।" अंग्रेजी में इस भाव को "jarring" से व्यक्त किया जा सकता है। अतः इस वाक्य को अंग्रेजी में इस तरह लिखा जा सकता है "the jarring notes of her singing." यह अनुवाद हिन्दी वाक्य के भाव के नजदीक है।

मन्नू जी ने उपन्यास में भारतीय सांस्कृतिक शब्दों का प्रयोग अनेक स्तरों पर किया है। इसके लिए वे फूफी की "हरिद्वार" यात्रा को दिखाती है। तो कभी बंटी को मिथकीय कहानियाँ सुनाते हुये "गुलाब जल और केवड़ा जल,तपस्या और अमावस्या" आदि शब्दों का सुन्दर विधान करती है। ये सभी शब्द भारतीय संस्कृति के वाहन है। ये शब्द एक ही दिन में नहीं बने। इनके पीछे एक लम्बी ऐतिहासिक परंपरा है लेकिन अनुवादक इन शब्दों के अनुवाद में गहरे तक नही जा सके । जैसाकि मन्नू जी ने उपन्यास में "हरिद्वार" को फूफी के माध्यम से व्यक्त किया है। उपन्यास में फूफी शकुन की दूसरी शादी से खुश नहीं है इसलिए वह शकुन के घर से जाना चाहती है। वे लिखती हैं कि [87]"हम हरिद्वार जाना चाहते हैं" जयरतन ने इस वाक्य का अनुवाद कुछ इस तरह किया है। [88]"I want to visit hardwar." इस अनुवाद की समस्या यह है कि भारतीय पाठक मूल रचना को पढ़कर "हरिद्वार" का मतलब तुरन्त समझ जाएगा कि "हरिद्वार भारत का तीर्थ स्थल है" जहां पर लोग पूजा – अर्चना के लिए जाते हैं। लेकिन अंग्रेजी पाठक भारतीय संस्कृति से परिचित

[87] आपका बंटी पृ० -128
[88] Bunty page -123

नहीं है इसलिए वह "हरिद्वार" के लिप्यंतरण (Haridwar) का अर्थ नहीं समझ सकता इसलिए अनुवादक को संदर्भ में यह बताना चाहिए कि "हरिद्वार" का भारत में क्या महत्व है। इस शब्द को संदर्भ में ऐसे लिखा जा सकता है। (Hardwar is a holy place of India) इसी तरह अनुवादक ने उपन्यास में व्यक्त "तपस्या" का अंग्रेजी में लिप्यतरंण किया (tapasya) है।

लेकिन अंग्रेजी पाठक "तपस्या" के महत्व से अनभिज्ञ है। वह "तपस्या" का क्या अर्थ नही जानता है इसलिए उसे "तपस्या" का महत्व बताने के लिए संदर्भ में ऐसे (ascetic fervour)लिखा जाये जिससे कि अंग्रेजी पाठक "तपस्या" के अर्थ से पूरी तरह समझ सके । दूसरा तरीका यह हो सकता हैं कि अनुवादक "तपस्या" को अंग्रेजी भाषा में सीधे "Penance" लिख देता। इस तरह तपस्या के लिए "Penance" लिखने से लिप्यतंरण और संदर्भ से बचा जा सकता है। इसी तरह अनुवादक ने "अमावस्या" के संदर्भ में भी यही लिप्यतरंण की स्थिति अपनायी है। उन्होंने संदर्भ देकर "अमावस्या" को स्पष्ट नहीं किया । यदि "अमावस्या" का अंग्रेजी में अनुवाद नहीं किया जा सकता है तो संदर्भ में "अमावस्या" को स्पष्ट किया जाना आवश्यक है। लेकिन जयरतन ने इस दिशा में कोई प्रयास नहीं किया। मुझे लगता है कि यदि अंग्रेजी में "amavasya" लिखा है तो संदर्भ में (the night of the new moon)लिखा जा सकता है।

अनुवादक ने उपन्यास में व्यक्त गुलाबजल को "rose water" और केवड़ाजल को "Kewra water" लिखा हैं। इस अनुवाद की कमजोरी यह है कि "गुलाब जल" के लिए अंग्रेजी भाषा में "rose water" लिखा जाता हैं

लेकिन "केवड़ा जल" के लिए "keora water" नहीं लिखा जाता है। यह सही हैं कि अंग्रेजी भाषा में "केवड़ा" के लिए शब्द नहीं है इसलिए उन्होंने अनुवाद में "केवड़ा" का लिप्यंतरण किया है लेकिन अनुवाद में "केवड़ा जल" के लिए "keora water" नही होगा! इसकी बजाय अनुवाद में "keora essene" होना चाहिए। लेकिन इस अनुवाद से उपन्यास में एक नयी समस्या

का जन्म हो जाएगा कि "गुलाब जल" को "rose water" और "केवड़ा जल" को "keora essence" लिख रहे हैं। यह पहले ही बताया गया है कि अंग्रेजी में "गुलाब जल" को "rose water" लिखा जा सकता है लेकिन अनुवाद के भीतर एक जगह पर "rose wate" और एक जगह पर "keora essence" लिखा जाए तो यह अनुवाद में एक अलग तरह की समस्या उत्पन्न करता हैं। इस भ्रम की स्थिति से बचने के लिए "गुलाब जल"को "rose essence" और "केवड़ा जल" को "keora essence" ही लिखना चाहिये। जिससे अंग्रेजी पाठक इन शब्दों के सही अर्थ को समझ सके।

मन्नू भंड़ारी ने "आपका बंटी" उपन्यास में भारतीय समाज के पारिवारिक संबधों को "वकील चाचा, चाची अम्मा, दीदी, भैया, बहुजी और टीटू की अम्मा" आदि पात्रों के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। लेखिका ने फूफी और चाचा दोनों ऐसे दो पात्रों की योजना की है। जिन्हें शकुन भी "फूफी और चाचा" कहती है और बंटी भी "फूफी और चाचा" कहता हैं। लेकिन समस्या यह है कि भारतीय पाठक इस तरह के संबधों से परिचित हैं लेकिन अंग्रेजी पाठक इस तरह के सम्बन्धों से परिचित नहीं हैं इसलिए अनुवाद में इन पारिवारिक सम्बन्धों की अभिव्यक्ति की समस्या से बचने के लिए जयरतन ने शकुन और बंटी "चाचा" के अंतर को प्रायः "uncle और lower uncle" से दूर करने का प्रयास किया है जिससे पाठक "चाचा" के सम्बंध को भली प्रकार समझ सके कि "शकुन का चाचा से सम्बन्ध और बंटी का चाचा से सम्बन्ध" दोनों अलग स्तर पर हैं। उपन्यास में जोत डॉ0 जोशी की चाची को "चाची अम्मा" कहती है लेकिन उन्होंने इस शब्द (चाची अम्मा) का अंग्रेजी में लिप्यतंरण किया हैं। अंग्रेजी पाठक "chachi amma" से मूल भारतीय संबध को समझ नहीं सकता। इसलिए अनुवाद में "chachi amma" लिखने की बजाय सम्बन्धों की अभिव्यक्ति के अनुसार "grandmother" लिखना चाहिये क्योंकि भारतीय समुदाय में "पिता की चाची को बच्चे दादी" ही कहते हैं इसलिए यह अनुवाद सटीक है। इसी तरह उपन्यास में आये "दीदी" शब्द को "elder sister" लिखना चाहिए।

उपन्यास में फूफी बंटी को प्यार से "भैया" बुलाती हैं तो कभी बंटी को यह बताया जाता है कि यह तुम्हारा छोटा भाई है "अमि भैया"। इन शब्दों का अंग्रेजी अनुवाद जयरतन ने "bunty bhaiyya और ami bhaiyya" किया है। इस अनुवाद की समस्या यह हैं कि अंग्रेजी पाठक "bhaiyya".

शब्द को सही तरह से आत्मसात नही कर पाता है क्योंकि भारत में "भैया" शब्द को अनेक स्तरों पर प्रयोग किया जाता है जैसेकि "बड़े भाई" को भईया तो "छोटे भाई" को भैया या फिर "किसी अनजान" को प्यार से भैया कहा जाता है। इसलिए "भैया" का अनुवाद संदर्भ में निहित सम्बन्ध के अनुसार होना चाहिए । इन शब्दों का अनुवाद "bunty child" और "ami brother" होना चाहिये। यह अनुवाद मूल सम्बन्ध को अधिक सटीक व्यक्त कर रहा है। इसी तरह उपन्यास में फूफी शकुन को "बहुजी" पुकारती है लेकिन अनुवादक ने इसे अंग्रेजी में "Bahanji" लिखा है जबकि बहुजी के लिए अंग्रेजी में "doughter- in –law" शब्द है तो इस शब्द के लिप्यतंरण की क्या आवश्यकता हैं। इसी तरह उन्होंने "टीटू की अम्मा" का अनुवाद "Teetu's mother" किया है। यह अनुवाद मूल सम्बन्ध को अनुवाद में उतार पाया है। इस तरह पारिवारिक सम्बन्धों के अनुवाद में जयरतन को आंशिक सफलता मिली है।

"आपका बंटी" उपन्यास में आये अन्य शब्दों के अनुवाद में भी गड़बड़ स्थिति देखने को मिलती है। लेखिका ने "तांगा, घोड़े के घुंघरुओं की आवाज़, कोठी, नमस्कार, नमस्ते और गृहप्रवेश" आदि शब्दों को उपन्यास में कथ्य के अनुरूप प्रयुक्त किया गया है। उपन्यास में शकुन कोर्ट जा रही हैं। बंटी चुप है । वह केवल देख रहा है लेकिन बाद में घोड़े के घुंघरू की आवाज से वह जान लेता है कि उसकी मम्मी चली गयी। लेखिका ने इस बात को इस तरह बताया है [89]"दूर होती घोड़े के घुंघरुओं की आवाज़ से बंटी ने जाना कि मम्मी का तांगा चला गया।" जिसका अनुवाद इस तरह से किया गया हैं।

---

[89] आपका बंटी पृ0–66

[90]"From the receding jingle of bells on the horse's neck. Bunty guessed that tonga had driven away."

जयरतन ने इस वाक्य के अनुवाद में (घोड़े के घुघंरुओं की आवाज़) के लिए अंग्रेजी में "Jingle of bells on the horse's neck" बढ़िया अनुवाद किया है लेकिन हिन्दी शब्द "तांगा" का अंग्रेजी में लिप्यंतरण कर दिया है यह उचित नहीं है क्योंकि हिन्दी शब्द "तांगा" को अंग्रेजी में "tangoa card and horse carriage" लिखा जा सकता है इसलिए अनुवाद में "तांगा" का लिप्यतरंण करना जरूरी नहीं है। अनुवाद में सीधे "तांगा" के अंग्रेजी शब्द लिखना अधिक उपयुक्त है। इसी तरह उपन्यास में "कोठी" का अनुवाद "kothi" किया गया है जबकि अंग्रेजी भाषा में "कोठी" के लिए "Bungalow" शब्द प्रचलित है । तो अनुवाद में "Bungalow" लिखा जाना चाहिए।

उपन्यास में शकुन विवाह के बाद डा0 जोशी के घर चली जाती है लेकिन बंटी उसके साथ जाना नहीं चाहता पर उसे भी अपनी मम्मी के साथ दूसरे धर जाना पड़ता हैं। डॉ0 जोशी के घर सभी खाने की मेंज पर बैठे हैं। उस समय के बीच में मिस्टर वर्मा आते हैं। डॉ0 जोशी और उनके बच्चे मिस्टर वर्मा का अभिवादन करते हैं। लेखिका ने इस अभिवादन को इस तरह से व्यक्त किया है। "नमस्कार वर्मा साहब। "नमस्ते अंकल।" जिसका अनुवाद है। "Namaskar, Verma Sahib" "Namaste, Uncle."

अनुवादक ने इन अभिवादन के शब्दों का अनुवाद में लिप्यंतरण कर किया है। यह सही नहीं है जबकि संदर्भ के अनुसार सभी लोग दोपहर का भोजन कर रहे थे। इसका अर्थ है कि दोपहर का समय हो रहा था। तो [91]इसी के अनुसार अनुवाद में भारतीय अभिवादन के शब्दों का अनुवाद किया जाना चाहिये। मतलब यह है कि अनुवाद इस प्रकार से होना चाहिये। "Good afternoon, verma Saheb" "Good Afternoon, Uncle" यह अनुवाद भारतीय अभिवादन के शब्दों को अंग्रेजी भाषा की शैली के अनुसार अपने में

---

[90] Bunty page -61

समेटे हुये है। इसके साथ ही उपन्यास के बीच में व्यक्त "गृह प्रवेश" के लिए अंग्रेजी में "House warming" अनुवाद बहुत अच्छा हुआ है।

मन्नू जी ने उपन्यास में भारत के प्रचलित गीतों का प्रयोग उपन्यास को रोचक बनाने के लिए किया है। ऐसा लगता है कि मन्नू जी ने गीतों के माध्यम से पात्रों की (आशा और निराशा) मानसिक क्षणों को व्यक्त किया है। उपन्यास में टीटू बंटी का कमजोर पक्ष जानता है कि बंटी के पापा बंटी के साथ नही रहते हैं। उसकी मम्मी और पापा का तलाक हुआ है। वह बंटी को नीचा दिखाने के लिए इसी बात का प्रयोग करता है। जब कभी बंटी टीटू के घर खेलने जाता है तो बस टीटू की अम्मा फिर वही सवाल करती है कि बंटी तेरे पापा आये थे या तेरे पापा तुम्हारे साथ क्यों नही रहते। बंटी यह सारी बातें शकुन को बता देता हैं कि टीटू की अम्मा और टीटू हमेशा उससे पापा के बारे में पूछते है। शकुन किसी तरह बंटी को समझा देती है और बाहर आकर सोने के लिए चली जाती है लेकिन इसी बीच फूफी के गाने की आवाज़ आने लगती हैं। जिससे वह अपने और अजय के बीच के दंश को पुनः महसूस करती है। लेखिका ने शकुन के इस भाव को फूफी के भक्ति गीत द्वारा उपन्यास में उतारा है।

[92]"उखड़ा बिखरा स्वर–मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरा ना कोई"

[93] "Phuphi's thick, ragged voice filterd through . she was singing Meera' song.

My love is name else but Girdhar Gopal."

इस अनुवाद में जयरतन फूफी की आवाज़ "उखड़ा–बिखरा" को स्पष्ट नही कर पाये हैं क्योंकि हिन्दी भाषा में "उखड़ा-बिखरा" का मूल अर्थ होता हैं-"किसी व्यक्ति का बेसुरा गाना।" इस अर्थ के अनुसार गीत में फूफी बेसुरा गा रही हैं। यह अर्थ अंग्रेजी में छूट गया हैं। उन्होंने केवल हिन्दी भाव को

---

[92] आपका बंटी पृ0–20
[93] Bunty page -20

अंग्रेजी में व्यक्त करने का प्रयास किया है। जिसके लिए वे "thick ragged filtered" का प्रयोग करते है। इन शब्दों का अर्थ मूल वाक्य के शब्दों (उखड़ा-बिखरा या बेसुरा) से एकदम भिन्न है। अंग्रेजी में इन शब्दों का अर्थ इस तरह से हैं जैसे "thick-मोटा, ragged –खुदरा या फटा, और filtere–छानना, गुजरना, धीरे–धीरे" आदि होता है इसलिए अनुवाद में इन शब्दों के प्रयोग से फूफी के "बेसुरे" गाने का भाव नहीं आ रहा हैं। दूसरी बात यह हैं कि उनके अनुवाद का पढ़कर लगता है कि फूफी किसी मीरा का(she was singing Meers's song) गीत गा रही हैं। गीत में यह स्पष्ट करने का प्रयास बढ़िया है कि यह मीरा का गीत है लेकिन अंग्रेजी पाठक यह कैसे पहचान सकता है कि यह मीरा कौन हैं। जबकि हिन्दी पाठक "मेरे तो गिरधर गोपाल" से तुरन्त समझ जाता है कि यह भक्त कवियत्री मीरा का गीत है लेकिन अंग्रेजी पाठक के लिए यह तथ्य समझना थोड़ा कठिन है। अत: इन कमजोरियों के बावजूद उनका गीत को स्पष्ट करने का यह प्रयास अच्छा है। यदि वे अनुवाद में "Bhagti poet of Meera" लिख देते तो अधिक उपयुक्त होता । इस तरह अंग्रेजी पाठक गीत के संदर्भ को आसानी से समझ जाता है कि "फूफी भक्त कवियत्री मीरा का गीत गा रही है।" इसके साथ ही अनुवाद में मूल गीत की शैली "मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरा न कोई" ("My love is none else but Girdhar Gopal")

शैली नहीं आ सकी है। अंग्रजी पाठक नही जानता कि यह Girdhar Gopal कौन है इसलिए अनुवाद में मूल हिन्दी गीत की शैली और गिरधर गोपाल को अंग्रेजी में व्यक्त करना आवश्यक हैं। उनका अनुवाद में यह सब व्यक्त करने का प्रयास कुछ हद तक प्रशंसनीय है लेकिन इस गीत का अनुवाद इस तरह भी किया जा सकता है।

"In the voice full of austation she recited the worse in the bhagti port of Meera. My love is none elsr than , than Lord Girdhar Gopal."

इस अनुवाद में "उखड़ा–बिखरा स्वर मेरे तो गिरधर गोपाल,दूसरा न कोई" का मूल भाव अनुवाद मे सटीक आ रहा है।

लेखिका ने उपन्यास में दूसरा गीत बंटी के माध्यम से व्यक्त किया है। उपन्यास में फूफी गर्मी से परेशान हैं। वह ईश्वर से प्रार्थना करती है कि बारिश हो जाये जिससे गर्मी कम हो । लेकिन बंटी फूफी को परेशान करते हुये उनके लिए गीत गाता है। वह गाता है [94]"बरसों राम धड़ाके से,फूफी मर गई फाके से" जिसे अनुवादक ने अनुवाद में इस तरह लिखा है। [95]"Phuphi was so hungry she died.Rain Rain, pour to night. Bunty sang in a bandon."

यह अनुवाद मूल गीत के भाव को आत्मसात करता है लेकिन मूल गीत की धुन या लय को अभिव्यक्त नहीं करता। अनुवादक के लिए मूल गीत की धुन को अनुवाद में लाना आवश्यक होता है लेकिन यदि वह गीत को धुन के साथ अभिव्यक्त नहीं कर सकता तो कम से कम संदर्भ में गीत के बारे में तो स्पष्ट करना चाहिये। जिस तरह यह गीत भारतीय लोकगीत का उदाहरण है। इसे संदर्भ में इस तरह लिखा जा सकता। "A rhyme in a fak song"

लेखिका ने इसी तरह एक अन्य गीत का उदाहरण भी उपन्यास में दिया है। बंटी हॉस्टल जा रहा है। उसे कहीं से गाने की आवाज़ें सुनाई पड़ रही हैं। यह आवाज़ें कहां से आ रही हैं। इन्हें कौन गा रहा है। वह नही जानता । वह केवल इन गीतों को सुन रहा है।वह गीत हैं [96] "हरेकृष्णा, हरेकृष्ण, कृष्णा–कृष्णा हरे–हरे।" इस गीत का अनुवाद उन्होंने इस तरह किया है [97]"Hare Krishna, Hare Krishna, Krishna, Krishna, Hare Hare"

जयरतन ने इस हिन्दी गीत का लिप्यतरंण अंग्रेजी में किया है। जिससे मूल गीत की धुन अंग्रेजी भाषा में सहज ही आ गयी है। यदि इस गीत का

---

[94] आपका बंटी पृ0–94
[95] Bunty page -88
[96] आपका बंटी पृ0–224
[97] Bunty page -213

अनुवाद अंग्रेजी में किया जाता तो यह कार्य थोड़ा कठिन होता इसलिए इस गीत का अनुवाद(लिप्यतंरण) सही है लेकिन समस्या यह है कि उन्होंने इसे संदर्भ मे स्पष्ट नही किया है लेकिन वे संदर्भ मे इस तरह लिख देते ता ज्यादा उपयुक्त होता। "Chant in the lord of Krishna" कि यह गीत भगवान कृष्ण से सम्बंधित गीत हैं।

जयरतन को इस अनुवाद में सामाजिक तत्वो के अनुवाद में सफलता भी मिली है। उन्होंने अनेक भारतीय तत्वों का सटीक अनुवाद किया है। फूफी तुलसी की पूजा करती है। यह भगवान में उसकी आस्था का प्रतीक है जिसे लेखिका ने इस तरह व्यक्त किया है [98]"पीछे के आंगन में तुलसी के चबूतरे पर टिमटिमाता हुआ दीया, फूफी के हनुमान जी....." इसका अनुवाद इस तरह से है। [99]"A clay lamp burning near the tulsi platform at the back of the house. And Phuphi's Hnaumanji."

जयरतन ने इस वाक्य के अनुवाद में "पीछे के आंगन" के लिए "at the back of the house", "तुलसी का चबूतरा"-"Tulsi platform" , "टिमटिमाता हुआ दिया", "clay clamp burning" और "फूफी के हनुमानजी", "Phuphi's Hanumanji" का अनुवाद सटीक किया। यह अनुवाद सभी भारतीय सामाजिक तत्वों को अनुवाद ला पाया है। इस अनुवाद को पढ़कर पाठक स्वयं सभी सामाजिक तत्वों को समझ जायेगा कि भारतीय समाज में तुलसी की पूजा दिया जलाकर की जाती है या फिर तुलसी का चूबतरा घर में कहाँ बना होता है। इन सब चीजों को अलग से समझाने की आवश्यकता नहीं है।

इसी तरह इस वाक्य को देखा जा सकता हैं। उपन्यास में जोत बंटी को नीम का पेड़ दिखाते हुये कहती है कि [100]"यह नीम का बड़े बाबा ने पापा ने जन्म के साथ लगाया था।" जिसका अनुवाद यह हैं- [101] "Grand father planted this neem tree to mark his son's birthday." अनुवादक ने मूल

---

[98] आपका बंटी पृ०–210
[99] Bunty page -194
[100] आपका बंटी पृ0–210
[101] Bunty page -198

वाक्य में व्यक्त समस्त सामाजिक तत्वों को अनुवाद में अभिव्यक्त किया है। अनुवाद में यह स्पष्ट है कि जोत का सम्बन्ध ड़ा0 जोशी के पापा के साथ क्या है। वे उसके दादा यानि कि अंग्रेजी में उसके grandfather है।

दूसरा यह कि भारतीय समाज में बच्चा पैदा होता है तो अनेक प्रकार की रस्मों का निर्वाह किया जाता है। प्रत्येक समुदाय में यह रस्म की आदएगी, अपने –अपने रीति–रिवाज के अनुसार होती है। उपन्यास में बच्चा (ड़ा0जोशी के पैदा) होने पर नीम का पेड़ लगाना भी एक प्रकार का रिवाज है। इसलिए सामाजिक अभिव्यक्ति के स्तर पर यह अनुवाद अच्छा हुआ है। वे इस वाक्य के अनुवाद में सफल हुये हैं। इसके बाद इस वाक्य के अनुवाद में भी सफल हुये हैं। मूल वाक्य है कि [102]"रानी अपने हाथ से सोने के बरक में लपेटकर राजा को छप्पन मसालों वाला सुगन्ध से भरपूर पान खिलाती और मंद–मंद मुस्काती" जिसका अंग्रेजी अनुवाद यह है -

[103]"she used to make a fragrant paan for him, laced with fifty-six spicy ingredients and covered with gold leaf"

इस अनुवाद में मूल वाक्य के सभी सांस्कृतिक शब्दों का अनुवाद सटीक हुआ है। हिन्दी वाक्य में "सोने के बरक, छप्पन मसाले सुगन्ध से भरपूर" आदि सभी शब्द अंग्रेजी में आ गये है। भारतीय समाज में पान का विशेष महत्व है और पान को अनेक प्रकार से स्वादिष्ट बनाया जाता है। यह अनुवाद इन भावों से युक्त नज़र आता है।

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है जयरतन "आपका बंटी" के अनुवाद में समस्त भारतीय सामाजिक-सांस्कृतिक शब्दों को अभिव्यक्त कर पाये हैं। लेकिन अनुवाद में ये शब्द अपनी संस्कृति के साथ व्यक्त नही हुये हैं बल्कि उन्होंने मूल भाव के आधार पर इन शब्दों को अनुवाद में अभिव्यक्त किया है जिससे अंग्रेजी पाठक इन शब्दों में निहित भारतीय सामाजिक तत्वों

---

[102] आपका बंटी पृ0–81
[103] Bunty page -75

के अस्तित्व से अनभिज्ञ रह जाता है। यह उक्ति सर्वथा सत्य है कि दो भाषाओं की संस्कृति एक समान नहीं हो सकती । अतः अनुवाद में स्रोतभाषा की सामाजिक-संस्कृति को लक्ष्यभाषा में व्यक्त करना थोड़ा कठिन है। लेकिन जयरतन के (बंटी)अनुवाद के माध्यम से अंग्रेजी पाठक भारतीय समाज, रहन–सहन, धर्म, रीति–रिवाज और दर्शन आदि से अधिक से अधिक जुड़ा महसूस करता है।

उपसंहार

उपसंहार

मन्नू भंडारी का उपन्यास आपका बंटी एक समस्या प्रधान उपन्यास है जिसका कहीं कोई हल नज़र नहीं आता । उन्होंने पति–पत्नी के तनाव को एक बच्चे के माध्यम से उठाया है कि वे आपसी तनाव से बचने के लिए तलाक ले लेते हैं लेकिन बच्चा (बंटी) क्या करे। उसने थोड़े की तलाक लिया हैं उसे तो माता–पिता एक साथ चाहिये।" यहीं से उपन्यास में एक समस्या का जन्म होता है जो बढ़ते –बढ़ते भयावह रूप धारण कर लेती है। जयरतन का अनुवाद "बंटी" इस समस्या की अभिव्यक्ति में पूरी तरह से सक्षम है। यह उपन्यास जितना हिन्दी पाठक वर्ग को विचलित करता है। इसका अनुवाद उतना ही अंग्रेजी पाठक वर्ग को विचलित करता है। इस उपन्यास का अनुवाद पूर्णतः ग्राह्य हैं।

जयरतन कृत "आपका बंटी" का अंग्रेजी अनुवाद "बंटी" श्रेष्ठ है। यदि यहां पर मूल उपन्यास की "संरचना और शैली" की बात छोड़ दी जाये तो यह अनुवाद "संवेदना और भाव" के स्तर पर श्रेष्ठ हैं। इस बात में तनिक भी संदेह नहीं है कि जयतरन अंग्रेजी भाषा के विशेषज्ञ हैं। जिनके साथ अंग्रेजी पाठक हिंदी उपन्यास की आत्मा को अंग्रेजी भाषा में ग्रहण करता है लेकिन जब इस उपन्यास के अनुवाद "बंटी" में अनुवाद का स्तर देखने का प्रयास किया तो काफी निराशा हुई क्योंकि "अनुवाद विज्ञान" की दृष्टि से इस अनुवाद में अनेक कमजोरियाँ हैं। यह कमजोरियाँ अनुवाद में भाषिक और सामाजिक स्तर पर सामने आती हैं। वे हिंदी की "भाषिक और सामाजिक इकाईयों" को अंग्रेजी में अभिव्यक्त नहीं कर पाये हैं। जिसके कारण अनेक स्थलों पर अनुवाद गड़बड़ लगता है। यदि अनुवाद में इन गड़बड़ स्थलों को सुधारा जाता तो अनुवाद अधिक प्रभावशाली बन सकता था ।

इस शोध प्रबंध में इस स्थिति से बचने का सुझाव दिया है। मुझे लगता है कि जिसके लिए अनुवाद विज्ञान से परिचित होना आवश्यक है क्योंकि अनुवाद कर्म में लिप्त होने से पहले अनुवाद की तकनीकि को समझना जरूरी है जिसके अभाव में अनुवाद उचित नहीं होता । जैसा कि "आपका बंटी" के अनुवाद को देखने पर लगता है। उनके इस अनुवाद में "अनुवाद की तकनीकि" का निरंतर अभाव बना रहता है। सीधे शब्दों में "अनुवाद विज्ञान है" इसलिए इसमें सुझाव देना लाज़मी है।

संक्षेप में जयरतन का अनुवाद "बंटी" मूल उपन्यास "आपका बंटी" की आत्मा को अनुवाद में उतार पाया है। अपनी कुछ कमियों के बावजूद जयरतन का अनुवाद श्रेष्ठ है। इस उपन्यास के अनुवाद में हिन्दी के शब्द और भाव को अंग्रेजी में ला पाना थोड़ा कठिन था क्योंकि दोनों "भाषाएं" भिन्न "भाषा परिवारों" की भाषा हैं। लेकिन वे इसमें सफल हुए हैं। उन्होंने मन्नू जी के उपन्यास में व्यक्त सभी तथ्यों का अंग्रेजी में अनुवाद किया है। जिससे अनुवाद में लयात्मकता और रोचकता बनी रहती है। इस अनुवाद को पढ़कर अंग्रेजी पाठक भारतीय मध्यमवर्गीय समाज में रहने वाले अनेक बच्चों विशेषकर "बंटी" की कथा–व्यथा से परिचित होता है और उनके पारिवारिक सम्बन्धों में आने वाले उतार–चढ़ाव को जान पाता है। यह अनुवाद विदेशी पाठक वर्ग को "भारतीय सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश" के नजदीक लेकर आता है।

ग्रन्थाअनुक्रमणिका

आधार ग्रन्थ

संदर्भ ग्रन्थ

आधार ग्रंन्थ

आपका बंटी

मन्नू भंडारी

अक्षर प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड

2/36 अंसारी रोड़, दरियागंज

दिल्ली–6 प्रथम संस्करण : मार्च 1971

Bunty

Jai Ratan

National Publishing House,

Darya Ganj, New Delhi -110002

First Edition : 1983

संदर्भ ग्रंन्थ

स्त्रीवादी साहित्य विमर्श — जगदीश्वर चर्तुवेदी
अनामिका पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा0 लिमिटेड
प्रथम संस्करण : 2000

कथा – साहित्य के सौ बरस — सम्पादक विभूति नारायण राय
प्रकाशक शिल्पायन
वैस्ट गोरखपार्क, शाहदरा
दिल्ली – 110032
संस्करण सन् 2001

हिन्दी साहित्य का इतिहास — आचार्य रामचंन्द्र शुक्ल
नागरी प्रचारिणी सभा
संस्करण 2001

अनुवाद और रचना का उत्तर जीवन — रमन प्रसाद सिन्हा
वाणी प्रकाशन, दरियागंज
नई दिल्ली – 110002
प्रथम संस्करण 2002

अनुवाद चिंतन (अनुवाद विज्ञान का सांगोपांग विवेचन) — एल0 एन0 शर्मा "सौमित्रा"
विद्या प्रकाशन मंदिर
दरिया गंज, नई दिल्ली–110002
प्रथम संस्करण 1990

अंग्रेजी –हिन्दी अनुवाद व्याकरण — प्रो0 सूरजभान सिंह
प्रभात प्रकाशन दिल्ली -110002
प्रथम संस्करण 2003

अनुवाद विज्ञान — भोलानाथ तिवारी
किताबघर प्रकाशन, दरियागंज
नई दिल्ली –110002
संस्करण 2007

अनुवाद विज्ञान — संपादक सिद्वांत एवं अनुप्रयोग
डा0 नगेन्द्र
हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय
दिल्ली विश्वविद्यालय
माडल टाउन, दिल्ली –110009
प्रथम संस्करण 1993

भारतीय साहित्य में दलित
एवं स्त्री लेखन

संपादक : चमन लाल

उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र,
पटियाला एवं सारांश प्रकाशन प्राईवेट
लिमिटेड दिल्ली , हैदराबाद

प्रथम संस्करण : 2001

मन्नू भण्डारी का कथा साहित्य
संवेदना और शिल्प

डा0 श्रीमति सुषमा पाल
प्रकाशक लोकवाणी संस्थान

अशोक नगर, शाहदरा, दिल्ली–110093

प्रथम संस्करण 2002

मन्नू भण्डारी का श्रेष्ठ
सर्जनात्मक साहित्य

डा0 बंसीधर
डा0 राजेन्द्र मिश्र
नटराज पब्लिशिंग हाउस होली मोहल्ला,
करनाल–132001
(हरियाणा) प्रथम संस्करण 1983

कथा लेखिका मन्नू भण्डारी

डा0 ब्रंजमोहन शर्मा

प्रकाशक : कादम्बरी प्रकाशन

शिव मार्किट, न्यू चन्द्रावल , जवाहर
नगर दिल्ली –110007

प्रथम संस्करण 1991

Translation studies	Sushan Bassnett Edition Rev. ed London Routledge 1991
Translation as synthesis	Edited by K. Karunakaram
A search for a new Gestalt	M. Jayakumar Bharti Publiscation Pvt. Ltd. , New Delhi Year 1988
Translation across cultures	Toury Gideon Bharti Publicaiton Pv Ltd. Year 1987
Trnaslation east and west: a cross cultural approach ? Volume 5	Edited byN. Moore, Lucy wer University of Hawii East west Centre selected conference papers
Meaning and Translation Philosophical and Linguistic approaches	Edited by F. guenthner and M. Guenthner Reulter Published by: Gerald Duckworth and company limited First Published in 1978